31 अगस्त, 2025
भाद्रपद, शुक्ल पक्ष, अष्टमी
संवत 2082
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
रविवार, वर्ष 10, अंक 311

झारखंड का खरा सोना, शिबू सोरेन, 'भारत रत्न' के असली हकदार

Euro Kids
EUROKIDS GLOBAL SCHOOL
CBSE PATTERN
Play Group | Nursery | Euro Jonior (LKG) | Euro Senior (UKG)
AGE GROUP 1.8 TO 6 YEARS
OFFERS YOU
Class 1 | Class 2 | Class 3 | Class 4 | Class 5
आपके बच्चों को दे सही शुरूआत
ADMISSION OPEN
KOKAR RIMS ROAD, TUNKI TOLA, RANCHI
7903079507, 8092334348

लोकतांत्रिक और संवैधानिक मूल्यों की रक्षा सर्वोपरिः हेमंत

- इंडिया गठबंधन के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार पूर्व न्यायाधीश बी सुदर्शन रेड्डी रांची में मीडिया से हुए मुखातिब
- जिस तरह से हेमंत सोरेन को सताया गया और जिस प्रकार का व्यवहार हुआ, उसमें उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची : बी रेड्डी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। उपराष्ट्रपति पद के लिए इंडिया गठबंधन की ओर से चुनाव मैदान में उतरे पूर्व न्यायाधीश बी सुदर्शन रेड्डी शनिवार को रांची पहुंचे। रेड्डी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात के बाद मीडिया से बात की। उनके साथ मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भी प्रेस कांफ्रेंस में मौजूद थे। रेड्डी ने कहा कि हेमंत सोरेन पर लगाये गये सभी आरोप गलत थे। जिस तरह से उन्हें सताया गया और जिस प्रकार का व्यवहार हुआ, उसमें उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची। इसका जिम्मेदार कौन है? संविधान का इतिहास, संरचना और मूल भाव समझना जरूरी है। उन्होंने कहा कि पहले 'वोटर फर्स्ट, सिटीजन लेटर' की अवधारणा थी। उस समय नागरिकता की स्पष्ट परिभाषा नहीं थी, न ही कोई ठोस पहचान साधन।

वहीं, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि नौ सितंबर को उपराष्ट्रपति पद का चुनाव होना है। पक्ष और विपक्ष दोनों अपनी-अपनी तैयारी में जुटे हैं। तेलंगाना के बी सुदर्शन रेड्डी विपक्ष के साझा उम्मीदवार हैं। हम इनका समर्थन करते हैं। बी सुदर्शन रेड्डी हमारे साझा उम्मीदवार हैं।

हार-जीत की नहीं, सिद्धांतों की लड़ाईः बी सुदर्शन रेड्डी ने कहा कि हेमंत सोरेन के सांसदों का समर्थन उन्हें मिल गया है। मैं राज्यसभा और लोकसभा के सभी सांसदों से आग्रह करूंगा कि अगर मैं काबिल हूं, तो हमें वोट करिये। मदद कीजिये। सभी सांसदों को पत्र भेजा गया है और मुझे भरोसा है कि समर्थन मिलेगा। आवश्यकता पड़ी, तो मैं भाजपा नेतृत्व से भी मिलूंगा।

भारतीय संविधान के साथ 1971 में यात्रा शुरू की थीः गठबंधन प्रत्याशी ने कहा कि भारत के संविधान के साथ उनकी यात्रा 1971 में शुरू हुई थी। वह संविधान के मूल्यों के साथ खड़े हैं। देश को भरोसा दिलाते हैं कि संविधान के साथ यह यात्रा आगे भी जारी रहेगी। रेड्डी ने कहा कि संविधान में समानता, न्याय, सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक मूल्यों के साथ भाइचारा और प्रतिष्ठा जैसे महत्वपूर्ण तत्व शामिल हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा विजय दिलाने के लिए बनेगी रणनीति

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस चुनाव को और अधिक प्रभावी कैसे बनाया जाये, इसी सोच को लेकर हम सब एकत्र हुए हैं। इंडिया गठबंधन के संयुक्त उम्मीदवार सभी दलों के नेताओं से व्यक्तिगत संपर्क कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य है कि उन्हें विजय दिलाने की रणनीति तय की जाये और आगे व्यापक संपर्क अभियान चलाया जायेगा।

न्याय के पक्षधर हमें वोट देंगे

रेड्डी ने कहा कि उपराष्ट्रपति का पद राजनीतिक नहीं, बल्कि संवैधानिक है। न्याय के पक्षधर सांसद अपनी अंतरात्मा की आवाज पर हमें वोट देंगे। विपक्ष की तरफ से सर्वसम्मति से इस चुनाव के लिए उम्मीदवार बनाया गया है। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन के सभी दल उनके साथ हैं और कई गैर-गठबंधन दल भी समर्थन के लिए आगे आ रहे हैं। मैं सांसदों का समर्थन मांगने आया हूं। उपराष्ट्रपति का कार्यालय उच्च संवैधानिक दायित्व है।

एसआइआर लोकतंत्र के लिए नयी मुसीबत

रेड्डी ने कहा कि निर्वाचन आयोग की जिम्मेदारी है कि वह स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराये। संविधान सीमाएं तय करता है, लेकिन बहुमत में आने वाले दल इन सीमाओं को भूल जाते हैं। संसद सर्वोच्च है, पर नयी कमेंटरी और नया नैरेटिव लोकतंत्र के लिए खतरा है। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में व्हिप का प्रावधान नहीं है। उन्होंने 130वें संविधान संशोधन पर कहा कि इसे जेपीसी को भेजा गया है और रिपोर्ट आने के बाद उस पर चर्चा होगी। सुप्रीम कोर्ट भी संविधान का सम्मान करता है।

शिबू सोरेन को दी श्रद्धांजलि

रेड्डी ने इस अवसर पर झारखंड आंदोलन के प्रणेता दिशोम गुरु शिबू सोरेन को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान झारखंड कांग्रेस के प्रभारी के. राजू, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय सचिव प्रणव झा, प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, लोकसभा सांसद रघुराम रेड्डी, जोबा मांझी, सुखदेव भगत, कालीचरण मुंडा और राज्यसभा सांसद महुआ माजी और सरफराज अहमद मौजूद थे।

पूर्व मंत्री एनोस एक्का और पत्नी मेनन को सात साल की सजा

सीएनटी एक्ट का उल्लंघन कर आदिवासी जमीन की खरीद-फरोख्त का मामला

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सीएनटी एक्ट का उल्लंघन कर बड़े पैमाने पर आदिवासी जमीन खरीदने के 15 साल पुराने मामले में पूर्व मंत्री एनोस एक्का, उनकी पत्नी मेनन एक्का को सात साल कारावास की सजा सुनायी गयी। इसके साथ ही कोर्ट ने दोषियों पर जुर्माना भी लगाया है। सीबीआइ की विशेष कोर्ट ने शनिवार को यह फैसला सुनाया। कोर्ट ने शुक्रवार को एनोस एक्का और मेनन एक्का समेत 10 लोगों को दोषी करार दिया था। एनोस एक्का पर सीएनटी की धारा 46 के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए 16 साल पहले 1.18 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति खरीदने का आरोप है।

फर्जी पते का इस्तेमाल करने का आरोपः एनोस एक्का पर मंत्री रहते हुए अपने पद का दुरुपयोग करते हुए आदिवासी जमीन की खरीद-बिक्री में फर्जी पते का इस्तेमाल करने का आरोप है। इसकी मदद तत्कालीन एलआरडीसी ने की थी। प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों की मिलीभगत से बड़े पैमाने पर आदिवासी जमीन की खरीदारी की गयी थी।

मेनन एक्का के नाम से खरीदी गयी थी जमीन : एनोस ने मेनन एक्का के नाम से हिनू में 22 कट्ठा, ओरमांझी में 12 एकड़ से अधिक, रांची के नेवरी में चार एकड़ से अधिक, चुटिया के सिरम मौजा स्टेशन रोड में नौ डिसमिल जमीन खरीदी थी। सभी जमीन की खरीदारी मार्च 2006 से मई 2008 के बीच की गयी थी।

सीबीआइ ने 2010 में दर्ज की थी प्राथमिकीः हाइकोर्ट के आदेश पर सीबीआइ ने 4 अगस्त 2010 को एनोस एक्का समेत अन्य पर एफआइआर दर्ज की थी। सीबीआइ ने जांच पूरी करते हुए दिसंबर 2012 में चार्जशीट दाखिल की थी। जिस पर कोर्ट ने संज्ञान लिया था। मामले में एनोस एक्का समेत अन्य पर 5 नवंबर 2019 को आरोप तय किया गया था। इसके बाद सीबीआइ ने सबूत पेश किया था।

इन्हें भी हुई सात-सात साल की सजा

झारखंड के पूर्व मंत्री एनोस एक्का और उनकी पत्नी मेनन एक्का के अलावा रांची के तत्कालीन एलआरडीसी कार्तिक कुमार प्रभात, तत्कालीन सीआइ राजकिशोर सिंह, फिरोज अख्तर, अनिल कुमार, राजस्व कर्मचारी ब्रजेश मिश्रा, मणिलाल महतो और परशुराम को सीबीआइ की विशेष अदालत ने सजा सुनायी है। सजा के बिंदु पर बहस के बाद सीबीआइ के विशेष जज श्याम नंदन तिवारी की अदालत एनोस और मेनन के साथ-साथ सभी दोषियों को सात-सात साल की सजा सुनायी। सभी पर जुर्माना भी लगाया गया है। जुर्माने की राशि नहीं देने पर अतिरिक्त एक-एक साल की सजा काटनी होगी। एनोस एक्का के अधिवक्ता अनिल कंठ ने कहा कि इस फैसले को हाइकोर्ट में चुनौती दी जायेगी।

FLORENCE
GROUP OF INSTITUTIONS
(A Unit of :Haji Abdur Razzaque Educational Society)
ADMISSION OPEN
COLLEGE OF NURSING
2 YEARS M.Sc. Nursing
2 YEARS Post Basic B. Sc. Nursing
4 YEARS B.Sc. Nursing
3 YEARS GNM (General Nursing And Midwifery)
2 YEARS ANM (Auxiliary Nursing And Midwifery)
COLLEGE OF PARA MEDICAL SCIENCE
4 YEARS BMLT
2 YEARS DMLT
2 YEARS OT ASSISTANT
2 YEARS ECG
2 YEARS OPHTHALMIC ASST.
2 YEARS CRITICAL CARE (ICU)
2 YEARS RADIO-IMAGING
2 YEARS ANESTHESIA TECH.
1 YEARS DRESSERS
COLLEGE OF PHARMACY
2 YEARS D-PHARM
4 YEARS B-PHRRM
Separate Hostel For Boys & Girls
9031231082, 7903999411, 6205145470
E-mail: fsnirba@gmail.com
Website: www.florenceinstirba.com

SACRED CHILD ACADEMY
PLAY SCHOOL
Pre Nursery | KG - I | Nursery | KG - II
ADMISSION OPEN
Tiril Road, Kokar, Ranchi
9661169815

महिलाओं के खाते में 13वीं किस्त अगले एक-दो दिनों में

'मंईयां सम्मान योजना' की राशि करम पर्व से पहले मिलने लगेगी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। करम पर्व से पहले झारखंड की महिलाओं को राज्य सरकार एक महत्वपूर्ण तोहफा देने जा रही है। 'मंईयां सम्मान योजना' के तहत लाभार्थी महिलाओं के खातों में 2500 रुपये की राशि की 13वीं किस्त भेजी जायेगी। इस संबंध में सामाजिक सुरक्षा विभाग ने सभी जिलों को दिशा-निर्देश जारी कर दिये हैं। विभागीय सूत्रों के अनुसार 31 अगस्त से राशि खाते में भेजने की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी। विभाग ने मंईयां योजना की लाभार्थियों के खातों में राशि भेजने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली हैं।

उम्मीद की जा रही है कि अगले 2 से 3 दिनों में यह राशि सभी महिलाओं के खातों में पहुंच जायेगी।

करम पर्व 3 सितंबर को है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस देखते हुए त्योहार से पहले राशि भेजने का आदेश दिया है। बताते चलें कि इससे पहले जुलाई माह में रक्षाबंधन के मौके पर भी एक किस्त जारी की गयी थी, ताकि त्योहार के समय महिलाओं को किसी भी तरह की कठिनाई का सामना न करना पड़े। अब, करम पर्व के पहले भी राज्य सरकार अपनी बहनों को यह तोहफा देने जा रही है। इस बार की किस्त से 50 लाख से अधिक महिलाओं को फायदा होगा। जुलाई माह में भी 50 लाख 30 हजार से ज्यादा महिलाओं को मंईयां योजना का लाभ मिला था।

राहुल के कार्यक्रम में शामिल हुए अखिलेश

पटना। बिहार में विधानसभा चुनाव से पहले हुए मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) को लेकर सियासत तेज हो गयी है। इसके विरोध में कांग्रेस और राजद की वोटर अधिकार यात्रा निकली, जिसमें समाजवादी पार्टी (सपा) के प्रमुख अखिलेश यादव ने शनिवार को शिरकत की। इसे लेकर राहुल गांधी ने उनका धन्यवाद किया। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कहा कि 'दो भाई, वोट चोरों की तबाही। वोटर अधिकार यात्रा में शामिल होकर तेजस्वी यादव, मुझे और इंडिया गठबंधन के सभी नेताओं को अपना समर्थन देने के लिए आपका बहुत धन्यवाद, अखिलेश यादव।'इससे पहले कांग्रेस पार्टी ने सोशल मीडिया पर राहुल गांधी और अखिलेश यादव की तस्वीरें साझा कीं।

'ह्यूमन जीपीएस' नाम से मशहूर आतंकी बागू खान मारा गया

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले के गुरेज सेक्टर में नियंत्रण रेखा के पास सुरक्षाबलों ने 'ह्यूमन जीपीएस' के नाम से मशहूर आतंकी बागू खान को मार गिराया है। बागू खान 'समंदर चाचा' के नाम से भी जाना जाता था। अधिकारियों को उसका पहचान पत्र भी मिला है। सूत्रों के अनुसार, बागू खान 1995 से पाक अधिकृत कश्मीर में रह रहा था। वह 25 सालों से आतंकी गतिविधियों में एक्टिव था और घुसपैठ के सबसे पुराने मददगारों में से एक था।

सात साल बाद चीन पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

- शंघाई सहयोग संगठन के वार्षिक शिखर सम्मेलन में होंगे शामिल
- राष्ट्रपति जिनपिंग से होगी बातचीत, दुनियाभर की रहेगी नजर

एजेंसी

बीजिंग। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सात साल से ज्यादा के अंतराल के बाद शनिवार को चीन पहुंचे। इस यात्रा पर पूरी दुनिया की नजर है। दुनिया बेहद उत्सुकता से पीएम मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात का इंतजार कर रही है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ नीतियों की वजह से भारत-अमेरिका संबंधों में अचानक आयी गिरावट को देखते हुए यह यात्रा और भी महत्वपूर्ण हो गयी है। प्रधानमंत्री मुख्य रूप से 31 अगस्त और 1 सितंबर को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के वार्षिक शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन आये हैं। बताते चलें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आखिरी बार जून 2018 में एससीओ शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन का दौरा किया था। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अक्तूबर 2019 में दूसरे अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के लिए भारत का दौरा किया था।

टैरिफ विवाद के कारण महत्वपूर्णः रविवार को चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ उनकी निर्धारित बैठक वाशिंगटन के टैरिफ विवाद के मद्देनजर और भी महत्वपूर्ण हो गयी है, जिसका असर दुनिया भर की लगभग सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ा है। इस वार्ता में नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग भारत-चीन आर्थिक संबंधों का जायजा लेने और पूर्वी लद्दाख सीमा विवाद के बाद गंभीर तनाव में आये संबंधों को और सामान्य बनाने के लिए कदमों पर विचार-विमर्श करेंगे। प्रधानमंत्री अपनी दो-राष्ट्र यात्रा के दूसरे और अंतिम चरण में जापान से चीन पहुंचे हैं।

पुतिन और कई अन्य नेताओं से होगी बातचीत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शिखर सम्मेलन से इतर रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और कई अन्य नेताओं के साथ द्विपक्षीय वार्ता भी कर सकते हैं। तियानजिन की अपनी यात्रा से पहले मोदी ने कहा कि विश्व आर्थिक व्यवस्था में स्थिरता लाने के लिए भारत और चीन का मिलकर काम करना जरूरी है। जापान के योमिउरी शिंबुन को दिये एक साक्षात्कार में उन्होंने ने कहा कि भारत और चीन के बीच स्थिर पूर्वानुमानित और सौहार्दपूर्ण द्विपक्षीय संबंध क्षेत्रीय और वैश्विक शांति एवं समृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

BABU DINESH SINGH UNIVERSITY
(Established Under Government of Jharkhand Act-06, 2023 & Section 2(f) of the UGC Act, 1956, Member of AIU, Delhi)
BEST PRIVATE UNIVERSITY IN JHARKHAND | 10000+ BOOKS AVAILABLE IN LIBRARY | 150+ QUALIFIED, EXP. & MOTIVATED FACULTY | 150+ ACRE CAMPUS
300+ RESIDES IN BOYS & GIRLS HOSTEL | 1500+ REGISTERED ALUMNI | LABS WITH MODERN TOOLS & EQUIPMENTS | RAGGING FREE CAMPUS
Where dreams BECOME REALITY
CAREER-ORIENTED PG/UG/DIPLOMA PROGRAMMES
Programs Approved by AICTE & Apex Bodies
ADMISSION OPEN SESSION 2025-26
Faculty of Engg. & Tech
B.Tech
- Civil Engineering
- Electrical and Electronic Eng.
- Computer Science & Eng.
- CSE (Artificial Intelligence)
- CSE (Cyber Security)
Polytechnic / Diploma
- Civil Engineering
- Mechanical Eng.
- Electrical and Electronic Eng.
- Computer Science & Eng.
- Electrical Engineering
Faculty of Law
- LL.B. - B.A. LL.B. - B.B.A. LL.B
Faculty of Management
- Bachelor of Business Administration (BBA)
- Master of Business Administration (MBA)
Faculty of Information Tech.
- Bachelor of Computer Application (BCA)
- Master of Computer Application (MCA)
- Post Graduation in Computer Application (PGDCA)
Faculty of Education
- Bachelor of Elementary Education (B.Ed)
- Diploma of Elementary Education (D.El.Ed.)
- M.A (Education)
Faculty of Arts & Social Science
- B.A (Hindi) - B.A (English) - B.A (Sanskrit)
- B.A (Economics) - B.A (Psychology)
- B.A (Sociology) - M.A (Hindi) - M.A (English)
- M.A (Sanskrit) - M.A (Economics)
- M.A (Psychology - M.A (Sociology)
Faculty of Pharmacy
- Diploma in Pharmacy (D.Pharm)
- Bachelor of Pharmacy (B.Pharm)
Faculty of Dental Science
- Bachelor of Dental Surgery (BDS)
- Master of Dental Surgery (MDS)
Faculty of Homeopathy
- Bachelor of Homeopathic Medicine & Surgery- BHMS
- M.D Homeopathy - B.Sc Medical Pathology
- B.Sc Medical Biochemistry - B.Sc Medical Microbiology
- M.Sc Medical Microbiology
- M.Sc Medical Biochemistry
Faculty of Nursing & Allied Health Science
- Bachelor of Science in Nursing (B.Sc. Nursing)
- General Nursing and Midwifery (GNM)
- Auxiliary Nurse Midwives (ANM)
Paramedical
- OT - DMLT - ECG - X-RAY
- Medical in Sanitary Inspector
- Medical in Ophthalmic Assistant
- Medical in Certificate in Dresser
Library Science
- B.Lib.I.Sc. - M.Lib.I.Sc
Faculty of Science
- B.Sc. (Mathematics) - B.Sc. (Chemistry) - B.Sc. (Physics)
- B.Sc. (Botany) - B.Sc. (MLT) - B.Sc. (Zoology)
- B.Sc. (Pathology) - B.Sc. (Biochemisty) - B.Sc. (Microbiology)
- M.Sc. (Mathematics) - M.Sc. (Chemistry) - M.Sc. (Physics)
- M.Sc. (Botany) - M.Sc. (Zoology) - M.Sc. (Physiology)
- M.Sc. (Biochemisty) - M.Sc. (MLT) - M.Sc (Microbiology)
Faculty of Commerce
- B.Com - M.Com
TRANSPORT FACILITIES | HOSTEL FACILITIES | LUSH GREEN CAMPUS | WI-FI CAMPUS | WORLD CLASS INFRASTRUCTURE | 100% PLACEMENT ASSISTANCE
Admission Helpline: 9661462506, 6206297213, 9934688493
Farathiya, Garhwa-822114, Jharkhand https://bdsu.ac.in/

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

आजाद सिपाही
रांची, रविवार, 31 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

झारखंड का खरा सोना, शिबू सोरेन, 'भारत रत्न' के असली हकदार

■ आदिवासियों को मान-सम्मान के साथ जीना सिखाया, आत्मनिर्भर बनाया
■ गरीबों, शोषितों और वंचितों की दबी आवाज को बुलंद किया
■ बलिदान और सेवा की असली मिसाल थे दिशोम गुरु शिबू सोरेन

शिबू सोरेन यानी झारखंड की ताकतवर आवाज, गरीबों, शोषितों और वंचितों की दबी आवाज को धार देने वाला, उनके हक और सम्मान की लड़ाई लड़नेवाला, उन्हें समाज में विशेष पहचान दिलानेवाला, उनके सपनों को साकार करने वाला। झारखंड अगर शिबू सोरेन को 'भारत रत्न' देने की मांग कर रहा है, तो उसके पीछे वजह है। वजह एक नहीं कई हैं। शिबू सोरेन को 'भारत रत्न' देना केवल एक व्यक्ति का सम्मान नहीं होगा, यह भारत की उस जनजातीय आत्मा का सम्मान होगा, जो सदियों से उपेक्षा का शिकार रही। यह उन तमाम लोगों को सम्मानित करेगा, जो जंगलों और पहाड़ों से उठकर अपने हक की लड़ाई लड़ते रहे हैं। शिबू सोरेन का जीवन एक अनवरत संघर्ष, बलिदान और समर्पण की गाथा है। एक महाकाव्य है। एक व्यक्तिगत त्रासदी से प्रेरित होकर उन्होंने जो आंदोलन शुरू किया, वह लाखों लोगों की आशा और पहचान का प्रतीक बन गया। उन्होंने न केवल आदिवासियों को महाजनी और सूदखोरी प्रथा के चंगुल से मुक्त कराया, बल्कि उन्हें संगठित कर एक अलग राज्य के निर्माण के सपने को साकार किया, जो भारत के इतिहास में एक मील का पत्थर है। उन्होंने आदिवासियों की शिक्षा, स्वास्थ्य, अधिकार और सम्मान के लिए लंबी लड़ाई लड़ी। शिबू सोरेन आजादी के बाद भारत के संभवत: एकमात्र शख्सियत रहे, जिन्होंने चार दशक तक अलग झारखंड आंदोलन का नेतृत्व किया। शिबू सोरेन दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के अकेले ऐसे नेता रहे, जो आक्रामक राजनीति के इस दौर में भी कभी अपने विरोधियों के खिलाफ कुछ नहीं बोलते थे। शांत, संयत और शालीन तरीके की राजनीतिक कार्यशैली ही उन्हें दूसरों से अलग करती थी और यही कारण है कि वह जननेता कहे जाते थे। सत्ता के लिए राजनीतिक खुंटचालों को चिमटे से भी नहीं छूनेवाले शिबू सोरेन, आजीवन निस्पृह तरीके से अपना काम करते रहे। राजनीतिक गहमा-गहमी से परे झारखंड की राजनीति का यह युगपुरुष रांची में अपने आवास पर निश्छल मुस्कान लिये बैठा रहता था, अपने उन लोगों के लिए, जो हर पल उसके दिलों के करीब होते थे। झारखंड का हर व्यक्ति इसीलिए गुरूजी को प्यार करता था, क्योंकि उसे पता था कि यह एक व्यक्ति उसके हर दुख-दर्द को दूर करने का माद्दा रखता है। इसलिए गुरूजी आज भी झारखंड के कण-कण में जिंदा हैं और झारखंड उनके लिए 'भारत रत्न' की मांग कर रहा है। आजाद सिपाही के संपादक राकेश सिंह का विशेष आलेख।

आजाद सिपाही विशेष

राकेश सिंह
संपादक

शुरुआती जीवन त्रासदी और गहरे सामाजिक-आर्थिक संघर्षों से भरा रहा

रांची से लगभग 70 किलोमीटर दूर रामगढ़ जिले के गोला से एक पतली-सी सड़क पहाड़ों पर नागिन की तरह डोलती जाती है। यह सड़क जहां खत्म होती है, वहीं एक गांव है नेमरा। वहीं एक छोटा-सा रेलवे स्टेशन है, जिसका नाम है बरलंगा। नेमरा गांव विशालकाय चंदू पहाड़ के बीच बसा हुआ है। गांव के आसपास महाजनों-बनियों की अजगर सी कतारें फैली हुई हैं। इसी नेमरा में सोबरन मांझी और सोनामुनी मांझी रहते थे। संथाल आदिवासी परिवार के घर 11 जनवरी, 1944 को एक बच्चे का जन्म हुआ, जिसका नाम शिवलाल रखा गया। यही शिवलाल बाद में शिबू सोरेन बने। सोबरन मांझी शिक्षक थे। शिबू सोरेन का प्रारंभिक जीवन व्यक्तिगत त्रासदी और गहरे सामाजिक-आर्थिक संघर्षों से भरा रहा। उनकी प्रारंभिक शिक्षा नेमरा के सरकारी स्कूल और गोला हाइ स्कूल से हुई। उस दौर में अविभाजित बिहार के आदिवासी इलाकों में महाजनों का आतंक था। आदिवासी सूदखोरी के चक्र में फंसे हुए थे। 13 साल के लड़के की जिंदगी उस वक्त बदल गयी, जब उनके गांधीवादी पिता सोबरन सोरेन की 27 नवंबर, 1957 को गोला प्रखंड मुख्यालय से लगभग 16 किलोमीटर दूर लुकैयाटांड़ जंगल में साहूकारों द्वारा हत्या कर दी गयी। इसने उन पर गहरा प्रभाव डाला। उनके पिता सूदखोरी और शराबबंदी जैसी कुप्रथाओं का विरोध करते थे।

शिबू सोरेन के जीवन में कहानियां ही कहानियां थीं। किसी की समझ में नहीं आता था कि वह कहां से शुरू करे और कहां खत्म करे। उनके जीवन का हर दिन नयी कहानी लिखता था। जिस तरह से चट्टानें हजारों साल का इतिहास अपने सीने में संजोये रखती हैं, उसी तरह दिशोम गुरु का जीवन किस्सों-कहानियों और असंख्य दुखों से रंगा हुआ था। वह संघर्ष और आंदोलन की जीती-जागती मिसाल थे।

चादर में बच्चे को
पीठ पर लटकाये
धान रोपती पहाड़ी स्त्री
रोप रही है अपना पहाड़ सा दुख
सुख की एक लहलहाती फसल के लिए

प्रसिद्ध कवियित्री निर्मला पुतुल की ये पंक्तियां झारखंड की चर्चा होते ही जेहन को ऐसे कुतरने लगती हैं, जैसे भूख से व्याकुल चुहिया किसी सड़ते चमरौधे जूते को कुतरने लगती है। कविता की बांह पकड़े सैकड़ों संघर्ष याद आने लगते हैं, जो अपनी माटी, पहाड़, पेड़, पानी और जिंदगी की हिफाजत में लड़े गये। हजारों कविताएं बादल बन कर आकाश को ढंक लेती हैं। याद आने लगते हैं सिदो-कान्हू, तिलका मांझी, बिरसा और तानाजी भगत और याद आने लगती हैं सिनगी दई। अपनी धरती की हिफाजत के लिए आदिवासियों की अनगिनत शहादतों से मस्तिष्क में उजास फैलने लगता है।

13 साल में बचपन खत्म

पिता का साया सिर से उठ गया और अचानक शिबू सोरेन का बचपन खत्म हो गया। पिता की हत्या और परिवार की आर्थिक तंगी के कारण वह दसवीं कक्षा से आगे नहीं पढ़ पाये। उस 13 साल के लड़के ने एक प्रण के साथ संघर्ष का रास्ता चुना और गरीबों की आवाज बन गया। परिवार की जीविका के लिए उस लड़के ने रेल लाइन निर्माण परियोजना आदि में मजदूरी भी की। खेती भी करते। शिबू सोरेन ने धीरे-धीरे गोला के आसपास महाजनों के खिलाफ युवाओं को एकजुट कर संघर्ष शुरू किया। शिबू सोरेन ने 18 वर्ष की आयु में 1962 में 'संथाल नवयुवक संघ' की स्थापना की। इसका उद्देश्य आदिवासी युवाओं को सामाजिक परिवर्तन के लिए एकजुट करना था। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'सनोत संथाल समाज' की भी स्थापना की, जिसके माध्यम से उन्होंने आदिवासियों को संगठित किया और उनके हितों के लिए संघर्ष की रणनीति तैयार की। यह शुरुआती प्रयास उनके जीवन की दिशा को स्पष्ट करता है, जहां उनका लक्ष्य आदिवासियों के शोषण के विरुद्ध एक मजबूत सामाजिक चेतना का निर्माण करना था।

धान लगाने वाला ही धान काटेगा, आत्मनिर्भरता की नींव को स्थापित किया

महाजनी प्रथा को खत्म करने के लिए शिबू सोरेन ने धनकटनी आंदोलन चलाया। उन्होंने आदिवासियों को जागरूक किया कि धान लगाने वाला ही धान काटेगा और इस पर महाजनों का कोई अधिकार नहीं। शिबू सोरेन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान आदिवासियों के जल, जंगल, जमीन पर उनके अधिकारों की लड़ाई थी। 1960 और 1970 के दशक में झारखंड में महाजनी और सूदखोरी प्रथा अपने चरम पर थी, जिससे आदिवासियों की जमीन धोखे से हड़पी जा रही थी। यह आंदोलन एक अद्वितीय रणनीति पर आधारित था, जिसमें महिलाएं हसिया लेकर जमींदारों के खेतों से फसलें काटती थीं, जबकि पुरुष तीर-कमान के साथ उनकी सुरक्षा करते थे। यह सिर्फ एक विरोध प्रदर्शन नहीं था, बल्कि आदिवासी पहचान, आत्म-सम्मान और भूमि पर उनके अधिकार की पुनर्स्थापना थी। इस आंदोलन ने आदिवासियों को शोषण के खिलाफ लड़ने का साहस दिया और उनकी सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन किया। यह संघर्ष विनोबा भावे के भूदान आंदोलन और जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन जैसे अन्य भारत रत्न प्राप्तकर्ताओं के सामाजिक सुधार आंदोलनों के समान है। यह शिबू सोरेन के संघर्ष को एक व्यापक राष्ट्रीय संदर्भ प्रदान करता है, जहां उनका योगदान केवल क्षेत्रीय राजनीति तक सीमित नहीं था, बल्कि स्वतंत्रता के बाद भारत में सामाजिक न्याय की सबसे मजबूत लड़ाइयों में से एक था। उन्होंने आदिवासियों को आर्थिक और सामाजिक गुलामी से बाहर निकालने का प्रयास किया और एक ऐसी ग्रामीण-आधारित अर्थव्यवस्था का मॉडल समझाया जो लोगों को आत्मनिर्भर बना सके।

नशा बंद हो

शिबू सोरेन ने 1969-70 में नशाबंदी, साहूकारी और जमीन बेदखली के खिलाफ जनांदोलन शुरू किया, जिसने उन्हें आदिवासी समाज का नायक बना दिया। 70 से 80 के दशक में धनकटनी आंदोलन बहुत बड़ा हो गया। उन्होंने झारखंड के किसानों, कामगारों और काश्तकारों को एकजुट किया और आदिवासियों को शोषण से मुक्त करवाने में अहम भूमिका निभायी। यही वजह है कि शिबू सोरेन को झारखंड के लोगों ने दिशोम गुरु की उपाधि दी। दिशोम का मतलब देश को दिशा देने वाला होता है और यहां देश का मतलब आदिवासी क्षेत्र से है।

रात्रि पाठशाला चलायी

1970 से 1975 के बीच शिबू सोरेन रात्रि पाठशाला चलाते थे, ताकि दिन भर अपना काम निपटाने के बाद आदिवासी लोग पढ़ पायें। शिबू सोरेन का मानना था कि शादी और त्योहारों पर खर्च कम करना चाहिए और पैसा बचाकर उसे शिक्षा पर लगाना चाहिए। उन्होंने आदिवासियों के उत्थान के लिए सामूहिक खेती, पशुपालन, रात्रि पाठशाला पर जोर दिया। शिबू सोरेन को पता था कि उनका समाज शिक्षा की रौशनी से ही आगे बढ़ सकता है। उनका समाज पढ़ेगा, तभी अन्याय के खिलाफ लड़ेगा। उन्होंने गरीब छात्रों को लालटेन तक बांटे, ताकि वे रात में पढ़ सकें। जीवन का बड़ा हिस्सा उन्होंने जंगलों, पहाड़ों और गांवों में लोगों को एकजुट करने में बिताया। आदिवासी समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए सामाजिक आंदोलन को धार दी।

पोखरिया आश्रम की खामोशी
आज भी बुलाती है
पहाड़ पर गुमसुम बैठे
पहाड़ी आदमी के चेहरे पर दिख रहा है
पहाड़ का भूगोल
उसके भीतर चुप्पी साधे बैठा है
पहाड़ का इतिहास

अगर कभी आपका चंदू या कभी टुंडी जाना हुआ, तो निर्मला पुतुल की ये पंक्तियां जरूर आपके साथ हो लेंगी। आप जब टुंडी जायेंगे, तो हो सकता है कि राजमहल की पहाड़ियों पर बैठा आदिवासी आपको इस कविता का नायक लगने लगे, क्योंकि यही वह जमीन है, जहां से झारखंड मुक्ति मोर्चा की शुरुआत हुई और शिबू सोरेन जन नायक के रूप में उभरे। इतना ही नहीं, इसी मिट्टी ने उन्हें दिशोम गुरु बनाया। 1972 के पहले यह पूरा क्षेत्र महाजनों के चंगुल में कराह रहा था। आदिवासियों और खेतिहर कुर्मियों-कोयरियों की हालत खराब थी। भूख और रोग की फसल पूरे क्षेत्र में लहलहा रही थी। इन परिस्थितियों के बीच झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन हुआ था। दिशोम गुरु पार्टी के महासचिव बनाये गये थे।

झारखंड मुक्ति मोर्चा की स्थापना

गोला, पेटरवार, जैनामोड़, बोकारो में आंदोलन को मजबूत करने के बाद विनोद बिहारी महतो से मुलाकात हुई। फिर धनबाद गये। वहां कुछ दिनों तक विनोद बाबू के घर पर ही रहे थे। साल 1973 में सोरेन ने गोल्फ ग्राउंड, धनबाद में एक जनसभा के दौरान बंगाली मार्क्सवादी ट्रेड यूनियनिस्ट एके रॉय और कुर्मी-महतो नेता बिनोद बिहारी महतो के साथ मिलकर झारखंड मुक्ति मोर्चा की स्थापना की। यह संगठन आदिवासियों की लड़ाई का प्रतीक बना। संघर्ष करते हुए बात भारत में एक नये राज्य की मांग तक पहुंच गयी। राह आसान नहीं थी। अविभाजित बिहार में दक्षिण के क्षेत्र में 26 जिलों को मिलाकर एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में शिबू सोरेन ने झारखंड राज्य की कल्पना की थी। 80 के दशक में शिबू सोरेन की रैलियों में जनसैलाब उमड़ता था। उन्हें सुनने के लिए लोग 50-60 किलोमीटर दूर पैदल चल कर आते थे।

पहला सार्वजनिक भाषण

झामुमो के स्थापना के मौके पर अपने संबोधन में गुरुजी ने कहा था, मुझे झारखंड मुक्ति मोर्चा का महासचिव बनाया गया है। पता नहीं मैं इस योग्य हूं भी या नहीं। लेकिन मैं अपने मृत पिता की सौगंध खाकर कहता हूं कि शोषणमुक्त झारखंड के लिए अनवरत संघर्ष करता रहूंगा। हम लोग दुनिया के सताये हुए लोग हैं। अपने अस्तित्व के लिए हमें लगातार संघर्ष करते रहना पड़ा है। हमें बार-बार अपने घरों से, जंगल से और जमीन से उजाड़ा जाता है। हमारे साथ जानवरों जैसा बर्ताव किया जाता है। हमारी बहू-बेटियों की इज्जत से खिलवाड़ किया जाता है। दिकुओं के शोषण, उत्पीड़न से परेशान होकर हमारे लोगों को घर-बार छोड़कर परदेस में मजूरी करने जाना पड़ता है। हरियाणा-पंजाब के ईंट के भट्ठों में, असम के चाय के बागानों में, पश्चिम बंगाल के खलिहानों में मांझी, संथाली औरतें, मरद मजूरी करने जाते हैं। वहां भी उनके साथ बंधुआ मजदूरों जैसा व्यवहार किया जाता है। यह बात नहीं कि हमारे घर, गांव में जीवन यापन करने के साधन नहीं, लेकिन उन पर बाहर वालों का कब्जा है। झारखंड की धरती का, यहां की खदानों का दोहन कर, उनकी लूट-खसोट कर नये शहर बन रहे हैं। जगमग आवासीय कॉलोनियां बन रही हैं और हम सब गरीबी-भुखमरी के अंधकार में धंसे हुए हैं। लेकिन अब यह सब नहीं चलेगा। हम इस अंधेरगर्दी के खिलाफ संघर्ष करेंगे।

पहली बार संसद में गूंजी आदिवासियों की आवाज

शिबू सोरेन जब जेएमएम के पहले सांसद बने, तो आदिवासियों की आवाज संसद तक सुनाई देने लगी। पहली बार सांसद बनने के बाद जब उन्होंने संसद में भाषण दिया, तो वह शराब के खिलाफ बोले। शिबू सोरेन का मानना था कि आदिवासियों का विकास तब तक नहीं होगा, जब तक वे इससे दूर नहीं होंगे।

शायद ही ऐसा कोई नेता हो, जिनके भाषण को सुनने लोग दो-तीन बजे रात तक इकट्ठा रहते हों

1980 के जून महीने में हुए बिहार विधानसभा के चुनाव में खास कर संथाल परगना की 18 सीटों में से आठ सीटों पर झामुमो ने जीत का परचम लहराया था। इस जीत ने क्षेत्र की जनता के करीब चार दशक से शिथिल पड़े झारखंड अलग राज्य की मांग पर मुहर लगा दी। इसी समय झारखंड के गांधी कहे जाने वाले शिबू सोरेन के नेतृत्व में अलग झारखंड राज्य के आंदोलन ने जोर पकड़ लिया। कंपकंपाती ठंडी रात में भी भारी तादाद में इस क्षेत्र के लोग शिबू सोरेन की एक झलक पाने और उनके भाषण को सुनने के लिए रात भर सभा स्थल पर जमे रहते थे। देश में शायद ही ऐसा कोई नेता हो, जिनके भाषण को सुनने के लिए लोग दो-तीन बजे रात तक इकट्ठा रहते हों। उनकी राजनीति में प्रविष्टि किसी पारंपरिक राजनीतिक महत्वाकांक्षा से प्रेरित नहीं थीं, बल्कि एक व्यक्तिगत अन्याय के खिलाफ उपजे आक्रोश और अपने समुदाय के लिए न्याय की गहन प्रतिबद्धता का परिणाम थी। यह कारक उन्हें उन नेताओं की श्रेणी में रखता, जिनका उदय व्यक्तिगत बलिदान और सार्वजनिक सेवा के एक गहरे नैतिक भाव से हुआ था। इस प्रकार उनका संघर्ष केवल सत्ता प्राप्ति का नहीं था, बल्कि अपने समाज के उत्थान और उसके लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने का था।

भूमिगत भी रहे

1970 के दशक में शिबू सोरेन ने कई रातें गिरिडीह, पारसनाथ और धनबाद के जंगल और पहाड़ों में गुजारी। यह वह दौर था, जब एक ओर आंदोलन से परेशान महाजन और शराब कारोबारी, शिबू सोरेन के खिलाफ किसी भी हद को पार कर सकते थे। वहीं विभिन्न आंदोलनों के कारण भी पुलिस को उनकी तलाश में रहती। जंगल और पहाड़ों में समय गुजराने वाले शिबू सोरेन हर रात तीन बार जगह बदलते थे। वे इतने घने और गुप्त स्थानों पर रहते थे, जहां उस वक्त पुलिस को भी जाने में भी डर लगता था। पुलिस से बचने के लिए शिबू सोरेन ने पारसनाथ की पहाड़ियों के बीच पलमा गांव को अपना केंद्र बनाया। फिर टुंडी के पास पोखरिया में आश्रम बनाया। उन्होंने टुंडी के आसपास महाजनों के कब्जे से संतालों की जमीन को मुक्त कराया। सामाजिक और आर्थिक सुधार के साथ-साथ, शिबू सोरेन ने आदिवासियों के बीच त्वरित न्याय की अदालतें स्थापित कीं। ये अदालतें शोषित आदिवासियों को जमींदारों और सूदखोरों के खिलाफ त्वरित न्याय प्रदान करती थीं, जो उस समय की कानूनी प्रक्रिया में संभव नहीं था। टुंडी और उसके आसपास शिबू सोरेन की समानांतर सरकार चलती। उनकी अपनी न्याय व्यवस्था थी, कोर्ट लगाते थे और फैसला भी सुनाया जाता।

आपातकाल में जेल

1975 में आपातकाल के दौरान शिबू सोरेन को समर्पण के लिए तैयार किया गया। उन्हें धनबाद जेल में रखा गया था। झगड़ू पंडित उनके साथ थे। वह डीसी-एसपी से बहस कर जबरन जेल गये थे, पुलिस उन्हें जेल ले जाने को तैयार नहीं थी। पिपरासोल निवासी झगड़ू पंडित ने ही शिबू सोरेन की राजनीतिक जमीन संथाल में तैयार की थी। दोनों साथ ही काम करते थे और शिबू को अपने घर पर ही रखते थे। किसानों के हक और सूदखोरों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। गुरुजी का कद जब धीरे-धीरे बढ़ने लगा, तो सबसे ज्यादा खुशी झगड़ू पंडित को ही हुई थी। बोकारो की एक सभा में गुरुजी से पहली बार भेंट हुई, तभी निमंत्रण देकर पंडित ने कहा था कि गुरुजी संथाल आइए, संथाल को आपके नेतृत्व का इंतजार है। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के निर्देश पर बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ जगन्नाथ मिश्र ने शिबू सोरेन की रिहाई का रास्ता साफ किया था।

झारखंड अलग राज्य आंदोलन को धार

झारखंड राज्य आंदोलन के सशक्त नेता के रूप में शिबू सोरेन ने दशकों तक इस लड़ाई का नेतृत्व किया। इस आंदोलन के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का एक बड़ा प्रमाण वह था, जब उन्होंने अलग राज्य के विरोध के कारण लालू प्रसाद यादव के साथ अपने राजनीतिक संबंध तोड़ लिये। यह निर्णय उनके लिए राजनीतिक रूप से जोखिम भरा था, लेकिन उन्होंने आदिवासियों की आकांक्षाओं को सर्वोपरि रखा। अलग राज्य के गठन से पहले झारखंड क्षेत्रीय स्वायत्त परिषद (जैक) का गठन एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी, जिसके लिए शिबू सोरेन ने अथक प्रयास किया। यह परिषद झारखंड के लोगों को उनकी प्रशासनिक व्यवस्था में अधिकार और भागीदारी देने वाली पहली संस्था थी। यह परिषद सीधे तौर पर राज्य गठन के मार्ग को प्रशस्त करने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। झारखंड राज्य का गठन सिर्फ एक भौगोलिक विभाजन नहीं था, बल्कि यह दशकों से चल रहे आदिवासी पहचान, संस्कृति और स्वायत्तता के संघर्ष की परिणति थी।

शिबू सोरेन किसी पद के मोहताज नहीं थे, वह खुद में सुशोभित थे

शिबू सोरेन का राजनीतिक सफर लंबा और उतार-चढ़ाव भरा रहा। उन्होंने अपने जीवनकाल में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, लेकिन उनकी सबसे बड़ी ताकत जनता के बीच उनकी लोकप्रियता और स्वीकृति रही। उनके राजनीतिक करियर की एक दिलचस्प विशेषता यह है कि वे तीन बार मुख्यमंत्री बने, लेकिन उनका कोई भी कार्यकाल पूरा नहीं हो सका। कुछ लोग इसे उनकी राजनीतिक अस्थिरता के रूप में देख सकते हैं, लेकिन यह उनके जन-नेता के रूप में उनकी छवि को और मजबूत करता है। यह दर्शाता है कि उनकी असली ताकत राजनीतिक पद में नहीं, बल्कि जनता के बीच थी, जिसने उन्हें बार-बार संसद तक पहुंचाया। वे एक पारंपरिक राजनेता से अधिक एक आंदोलनकारी और प्रतीक थे, जिनकी उपस्थिति ही झारखंड की राजनीति को आकार देने के लिए पर्याप्त थी। उनके छोटे-छोटे कार्यकाल भी झारखंड की राजनीतिक चेतना और उसके भविष्य को आकार देने में निर्णायक थे।

शिबू सोरेन का संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक था

एक जननायक के रूप में शिबू सोरेन का जीवन भी विवादों से घिरा रहा। उनके जीवन के दो प्रमुख न्यायिक मामले चिरुडीह नरसंहार और निजी सचिव शशिनाथ झा की हत्या से संबंधित थे। इन मामलों के अलावा, 1993 में नरसिंह राव सरकार को बचाने के लिए कथित कैश फॉर वोट मामले में भी उनका नाम आया। लेकिन इन सभी प्रमुख मामलों में उन्हें न्यायिक प्रक्रिया द्वारा बरी कर दिया गया। एक हिंसक और कठिन आंदोलन का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति पर ऐसे आरोप लगना स्वाभाविक है। भारत की न्यायपालिका द्वारा उन्हें दोषमुक्त किया जाना उनकी शुचिता को स्थापित करता है। शिबू सोरेन का संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक था। उन्होंने एक पूरी सभ्यता और पहचान को शोषण से बचाने और उसे राष्ट्रीय पटल पर स्थापित करने का काम किया। यह एक ऐसा योगदान है, जो भारत के संघीय ढांचे को अधिक समावेशी बनाता है और हाशिये पर पड़े समुदायों को राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा में लाने का मार्ग प्रशस्त करता है। शिबू सोरेन भारत रत्न के हकदार हैं। यही झारखंड की भी मांग है। आज गुरुजी हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन उनकी सोच, उनके विचार झारखंड की हवाओं में तैर रहे हैं।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	31.8 °c	23.4 °c
सूर्यास्त (आज) :		18.09 बजे
सूर्योदय (कल) :		05.30 बजे

झारखंड स्मॉल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन की 63वीं वार्षिक आमसभा संपन्न

रणधीर कुमार शर्मा अध्यक्ष बने जयदीप और अजय उपाध्यक्ष

नयी कार्यकारिणी का गठन सर्वसम्मति से किया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड स्मॉल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन (जेएसआइए) की 63वीं वार्षिक आमसभा शनिवार को रांची में आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता अजय पचेरिवाला ने की। इस दौरान एसोसिएशन की ओर से वार्षिक आय-व्यय का विवरण मानद सचिव शिवम सिंह ने प्रस्तुत किया। इसके साथ ही ऑडिट रिपोर्ट भी सदन में रखी गयी और सर्वसम्मति से पारित की गयी। सभा में नयी कार्यकारिणी का गठन सर्वसम्मति से किया गया। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने पदभार ग्रहण किया।

नवनिर्वाचित पदाधिकारी : रणधीर कुमार शर्मा - अध्यक्ष
जयदीप मोदी -उपाध्यक्ष
अजय कुमार दाधीच - उपाध्यक्ष
शिवम सिंह- मानद सचिव
विवेक तिबरेवाल- संयुक्त मानद सचिव
आदर्श रामसिसारिया - मानद कोषाध्यक्ष

इसके अलावा 15 अन्य सदस्यों को कार्यकारिणी सदस्य चुना गया, जिनमें अरुण शर्मा, विजय चौधरी, कमल अग्रवाल, मिलन पोद्दार, निखिल केडिया, निशांत प्रकाश, रवि तिबरेवाल, सुनील अग्रवाल, सचिन केजरीवाल, संदीप जाजोदिया, सौरव मोदी, सिद्धार्थ जायसवाल और विवेक बगला शामिल हैं। नव निर्वाचित अध्यक्ष रणधीर शर्मा ने कहा कि एसोसिएशन का उद्देश्य राज्य के लघु उद्योगों की प्रगति एवं उत्थान करना है। उन्होंने पूर्व अध्यक्षों के कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया और कहा कि संस्था को और ऊंचाई पर ले जाया जायेगा। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे उद्योग क्षेत्र में आगे आयें। जेएसआइए हर संभव सहयोग करेगा। संस्था ने आरसीएफ प्रोजेक्ट के तहत विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योग स्थापित कर युवाओं को प्रोत्साहित करने का भी संकल्प लिया। एसोसिएशन ने सरकार से बेहतर संवाद और उद्योग हित में कानूनों के अनुपालन की दिशा में काम करने का भरोसा जताया। राज्य के विभिन्न शहरों में जाकर औद्योगिक संगठनों से संवाद स्थापित करने की योजना बनायी गयी। चुनाव पदाधिकारी अरुण कुमार खेतान और फिलिप मैथ्यू को विशेष धन्यवाद दिया गया। सभा में रामगढ़, हजारीबाग, बोकारो, गिरिडीह, जमशेदपुर आदि जगहों से आये उद्यमियों ने भाग लिया और संगठन को मजबूत बनाने का आश्वासन दिया।

उपराष्ट्रपति पद के आइएनडीआइए गठबंधन उम्मीदवार बी सुदर्शन रेड्डी का रांची में भव्य स्वागत

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आइएनडीआइए गठबंधन के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बी. सुदर्शन रेड्डी शनिवार को अपराह्न 3 बजे विशेष विमान से रांची पहुंचे। प्रदेश कांग्रेस प्रभारी के. राजू के नेतृत्व में कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने पुष्पगुच्छ और अंगवस्त्र भेंटकर उनका जोरदार अभिनंदन किया। एयरपोर्ट पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, विधायक दल के नेता प्रदीप यादव, मंत्री दीपिका पांडेय सिंह, वरिष्ठ नेता राधाकृष्ण किशोर, कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की, प्रदेश कांग्रेस महासचिव आलोक कुमार दुबे, डॉ. एम तौशिफ, शकील अख्तर अंसारी, केदार पासवान, डॉ. कुमार राजा समेत बड़ी संख्या में नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभी ने मिलकर रेड्डी के प्रति अपना समर्थन और उत्साह प्रकट किया।

इस मौके पर प्रदेश कांग्रेस महासचिव आलोक कुमार दुबे ने कहा, झारखंड की धरती हमेशा लोकतांत्रिक मूल्यों और एकजुटता की मिसाल रही है। उपराष्ट्रपति पद के आइएनडीआइए गठबंधन के उम्मीदवार बी. सुदर्शन रेड्डी को यहां से भारी समर्थन मिलेगा। मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य इस बात का संकेत देता है कि राष्ट्रीय स्तर पर भी परिणाम निश्चित रूप से पक्ष में होंगे। उन्होंने कहा झारखंड कांग्रेस पूरी मजबूती से रेड्डी के साथ खड़ी है और राज्य की जनता का उन्हें व्यापक समर्थन हासिल होगा। झारखंड कांग्रेस प्रभारी के. राजू की लगातार झारखंड में सक्रियता और सूझबूझ और परस्पर तालमेल ने गठबंधन को और मजबूत किया है। कांग्रेस नेताओं का कहना है कि रेड्डी का झारखंड आगमन पूरे प्रदेश संगठन को नयी ऊर्जा और उत्साह देने वाला है।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

राशि	फल
मेष	व्यापार व व्यवसाय में उलझनों से राहत मिलेगी.लम्बित कार्य पूरा करने में व्यस्तता रहेगी।
वृष	वृष-कारोबारी हालत सुधरेंगे। बाधाएं तो आएगी परंतु आप अपनी चतुराई व सूझ-बूझ से उनसे छुटकारा पा लेंगे।
मिथुन	आत्मविश्वास की वृद्धि, नये कार्ययोजनाओं के प्रति रूचि बढ़ेगी।
कर्क	काम की गति बढ़ेगी, सुख-संसाधनों की वृद्धि, व्यापारिक विस्तार की योजना।
सिंह	आप इस समय किसी राजकीय विपत्ति के शिकार हो सकते हैं, व्यावसायिक उलझनें भी बढ़ने की संभावना।
कन्या	बहुत दिनों से चली आ रही इच्छाओं की पूर्ति होगी, व्यवसाय में सफलता।
तुला	कुछ संघर्षों के बाद नौकरी-सरकारी कार्यों में आशातीत सफलता मिलेगी।
वृश्चिक	चतुर्दिक हर्ष तथा उल्लास का वातावरण रहेगा, संयम, धैर्य से काम आसान होंगे।
धनु	आय के नये स्रोत बनेंगे, प्रभावशाली व्यक्तित्व का विकास, षड्यंत्र विफल रहेगा।
मकर	नये व्यवसाय का आरंभ हो सकता है, परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होगा।
कुंभ	रुके हुए कार्य में तेजी, उत्साह-उमंग भरा रहेगा, भ्रमण के साधन बनेंगे,नये लोगों से संपर्क।
मीन	किसी नये कार्य आरंभ करने से पूर्व परिवार में विचार-विमर्श करें, कठिनाइयों पर विजय।

राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश ने किया सामुदायिक भवन का उद्घाटन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश ने अपने विकास निधि से वार्ड संख्या 28, सुखदेव नगर थाना, खादगढ़ा स्थित शनि मंदिर के पीछे सामुदायिक भवन निर्माण कार्य का उद्घाटन किया। इस अवसर पर निवर्तमान वार्ड पार्षद राहुल चौधरी, हिंदपीढ़ी के मंडल अध्यक्ष ऋषि खाखड़, युवा मोर्चा के उज्जवल दास और अमन जायसवाल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सांसद दीपक प्रकाश ने कहा कि सामुदायिक भवन के निर्माण से आने वाले समय में क्षेत्रवासियों के सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों का केंद्र बनेगा। उन्होंने कहा कि समाज के लोग क्षेत्र के विकास की चर्चा करने या शादी-विवाह में जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल कर सकेंगे। कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने सामुदायिक भवन के निर्माण के लिए सांसद दीपक प्रकाश का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह सामुदायिक भवन क्षेत्र के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और क्षेत्रवासियों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा।

रेड्डी को भारतीय संविधान पर विश्वास नहीं : बाउरी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और पूर्व नेता प्रतिपक्ष, अमर कुमार बाउरी ने आइएनडीआइ गठबंधन के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बी सुदर्शन रेड्डी के बयान पर प्रतिक्रिया दी है। बाउरी ने कहा कि झारखंड के मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी केंद्र सरकार के निर्देश पर नहीं, बल्कि न्यायपालिका के आदेश पर हुई थी। बाउरी ने आरोप लगाया कि आइएनडीआइ गठबंधन के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का बयान वोटबैंक की राजनीति और तुष्टिकरण की ओर इशारा करता है। बाउरी ने यह भी स्पष्ट किया कि सीएम की जमानत भी न्यायपालिका के आदेश पर दी गयी थी, और ऐसा कोई संकेत नहीं है कि केंद्र सरकार ने इसमें हस्तक्षेप किया हो।

उन्होंने आइएनडीआइ गठबंधन के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार की बयानबाजी पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि उन्हें भारतीय संविधान पर विश्वास नहीं है। यह बयान झारखंड में लगातार हो रही राजनीतिक बयानबाजी और आरोप-प्रत्यारोप के बीच आया है, जहां भाजपा और विपक्षी दलों के बीच सियासी संघर्ष तेज हो गया है।

झारखंड में जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिए तेज होगा संघर्ष : महेंद्र पाठक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाकपा के राज्य सचिव के रूप में चुने गये महेंद्र पाठक ने कहा है कि पार्टी राज्य में जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए संघर्ष को तेज करेगी। पाठक शनिवार को प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि झारखंड में लाल झंडे के विकल्प के लिए राज्य स्तरीय संगठन को मजबूत करने, जन समस्याओं को लेकर जन आंदोलन विकसित करने का फैसला लिया गया है। पिछले दिनों हुए पार्टी के सम्मेलन में जल, जंगल, जमीन की हिफाजत करने और खनिज संपदाओं के दोहन पर रोक लगाने, बेरोजगार युवाओं के रोजगार 10 हजार रुपये बेरोजगारी भत्ता, वित्त रहित शिक्षा, विस्थापन नीति विस्थापन आयोग का गठन सहित दर्जनों प्रस्ताव आंदोलन के लिए पास किये गये हैं। उन्होंने बताया कि सम्मेलन में राज्य भर से 300 से अधिक प्रतिनिधि भाग लेने पहुंचे थे। इसमें से 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने बहस में हिस्सा लिया। वहीं राज्य के संचालन के लिए 47 सदस्य राज्य परिषद, 21 सदस्यों कि राज्य कार्यकारिणी का गठन किया गया। दूसरी बार राज्य सचिव चुने जाने पर पाठक ने सभी कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट करते हुए कहा कि झारखंड में जनता की जन समस्याओं को लेकर जन आंदोलन तेज किया जायेगा। आने वाले दिन में लोकसभा और विधानसभा की चुनाव सहित पंचायत और नगर निगम के चुनाव में भी पार्टी बढ़कर के हिस्सा लेगी। उन्होंने अभी से ही चुनाव की तैयारी में कार्यकर्ताओं को जाने का आह्वान किया। उन्होंने आने वाले विधानसभा चुनाव में झारखंड में वाम विकल्प देने की वकालत की। झारखंड में मजबूत कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण के लिए छात्रों युवाओं साथ ही महिलाओं को भी जोड़ने के लिए रणनीति बनायी गयी। इस मौके पर पार्टी के राष्ट्रीय परिषद के सदस्य पीके पांडे और जिला सचिव अजय सिंह उपस्थित थे।

चैंबर भवन में सौंदर्यीकृत सभागार और मोबाइल एप का शुभारंभ

वित्त एवं वाणिज्यकर मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने फीता काटा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के चैंबर भवन में शनिवार को सौंदर्यीकृत पीएल चोपड़ा ऑडिटोरियम और संगठन का नया मोबाइल एप लॉन्च किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राज्य के वित्त एवं वाणिज्यकर मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने किया।

मंत्री ने दोनों पहलों की सराहना करते हुए कहा कि यह व्यापारियों और उद्यमियों के लिए उपयोगी साबित होंगी। उन्होंने आश्वस्त किया कि चैंबर की समस्याओं के समाधान के लिए विभागीय अधिकारियों और चैंबर प्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक करायी जायेगी।

उन्होंने माना कि राज्य में प्रशासनिक कार्यप्रणाली को अधिक पारदर्शी बनाने की जरूरत है। साथ ही उन्होंने बैंकर्स के अपेक्षित सहयोग की कमी पर चिंता जतायी और कहा कि जिन बैंकों का परफॉर्मेंस संतोषजनक नहीं होगा, वहां सरकार अपनी राशि जमा नहीं करेगी। चैंबर अध्यक्ष परेश गट्टानी ने इस अवसर पर कहा कि अब चैंबर भवन में चार सुसज्जित सभागार उपलब्ध हैं जिनका उपयोग सभी सदस्य कर सकते हैं। उन्होंने संबद्ध संस्थाओं से अपनी बैठकों का आयोजन भी चैंबर भवन में करने की अपील की। सभा का संचालन पूर्व अध्यक्ष पवन शर्मा ने किया। उन्होंने मंत्री से स्मार्ट सिटी क्षेत्र में कॉमर्स हाउस निर्माण हेतु सरकारी दर पर एक एकड़ भूमि उपलब्ध कराने का आग्रह किया। वहीं, पूर्व अध्यक्ष विनय अग्रवाल ने उद्योग-व्यापार से जुड़े विभागों में चैंबर का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने की मांग रखी। पूर्व अध्यक्ष मनोज नरेड़ी ने भवन नियमितीकरण योजना लागू करने की मांग की और कुणाल अजमानी ने इज ऑफ डूइंग बिजनेस की धरातल पर कमजोर स्थिति की ओर ध्यान दिलाया। चैंबर महासचिव आदित्य मल्होत्रा ने कहा कि सौंदर्यीकृत सभागार और मोबाइल एप, दोनों ही चैंबर को आधुनिक स्वरूप देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। मोबाइल एप की जानकारी देते हुए कनेक्ट चैंबर उप समिति के चेयरमैन अरुण भरतिया ने बताया कि यह डिजिटल प्लेटफॉर्म सदस्यों को रीयल-टाइम अपडेट्स, नोटिफिकेशन, कार्यक्रमों की जानकारी और सदस्यता संबंधी सुविधाएं उपलब्ध करायेगा। इस मौके पर चैंबर पदाधिकारियों और बड़ी संख्या में सदस्य उपस्थित रहे।

कांग्रेस कमेटी के विभिन्न पदों के पुनर्गठन चयन प्रक्रिया की अंतिम तिथि बढ़ायी गयी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के विभिन्न पदों के पुनर्गठन के लिए चल रहे चयन प्रक्रिया की अंतिम तिथि को सात दिनों के लिए बढ़ाया गया। पहले इसकी अंतिम तिथि 30 अगस्त निर्धारित थी। मीडिया विभाग के चेयरमैन सतीश पॉल मुजनी ने बताया कि इस प्रक्रिया के तहत अब तक लगभग 600 आवेदन प्राप्त हुए हैं। सतीश पॉल मुजनी ने बताया कि प्रदेश प्रभारी के. राजू और प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के बीच चर्चा उपरांत यह निर्णय लिया गया है कि चयन प्रक्रिया की अवधि को 7 दिनों के लिए और बढ़ाया जाये। अब इस प्रक्रिया की नयी अंतिम तिथि 7 सितंबर 2025 निर्धारित की गयी है। इस चयन प्रक्रिया में कांग्रेस का कोई भी कार्यकर्ता वंचित न रह जाये, इसे सुनिश्चित करने के लिए झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने एक व्हाट्सएप नंबर 9059808833 जारी किया है। यह नंबर अगले 7 दिनों तक सक्रिय रहेगा। कांग्रेस कार्यकर्ता इस नंबर पर केवल जय कांग्रेस संदेश भेजकर आवेदन लिंक प्राप्त कर सकते हैं और बड़ी सरलता से अपना आवेदन कर सकेंगे।

सांसद कला महोत्सव : नरेंद्र मोदी को भेंट की जायेगी बेहतर पेंटिंग्स

हमारे देश के बच्चे विकसित भारत 2047 के ब्रांड एंबेसडर हैं : संजय सेठ

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सांसद कला महोत्सव जहां हजारों बच्चों ने ऑपरेशन सिंदूर और पीएम मोदी के सैन्य प्रेम पर अपनी चित्रांकन प्रतिभा की प्रस्तुति कागजों पर की। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ की पहल पर इस कार्यक्रम का आगाज किया गया है। सांसद कला महोत्सव के नाम से आयोजित इस कार्यक्रम के पेंटिंग कार्निवल में रांची लोकसभा क्षेत्र के हजार से अधिक बच्चे अपने चित्रांकन प्रतिभा का प्रदर्शन किये। यह महोत्सव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75 में जन्मदिन पर होने वाले सेवा पखवाड़ा तक चलेगा।

इस बाबत रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने रांची के दो स्कूलों गुरु नानक पब्लिक स्कूल, टेंडर हार्ट स्कूल में आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में सम्मिलित हुए। उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता में ऑपरेशन सिंदूर में हमारे सैन्य बलों ने जो शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया है उसे रांची के बच्चे अपनी पेंटिंग के माध्यम से बहुत ही शानदार स्वरूप दे रहे हैं। इस अवसर पर श्री सेठ ने बच्चों से कहा हमारे देश के बच्चे विकसित भारत 2047 के ब्रांड एंबेसडर हैं। आप कोई भी काम करो नेशन फर्स्ट के भाव से करो। उन्होंने बच्चों द्वारा की गयी पेंटिंग की सराहना की। इसके प्रथम चरण में विद्यालय स्तर पर महोत्सव का आयोजन होगा, जिसमें पांच अच्छे प्रतिभागियों का चुनाव किया जायेगा। उसके बाद सभी विद्यालयों से चयनित पाच प्रतिभागियों की एक प्रतियोगिता अलग से करायी जायेगी। यहां से चयनित बेहतर पेंटिंग्स को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेंट की जायेगी। महोत्सव में शामिल होने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी दिया जायेगा। बेहतर पेंटिंग करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। इन सभी स्कूलों में राजीव सहाय, रमेंद्र कुमार, मनोज गुप्ता, ऐश्वर्या सेठ, धनंजय कुमार, सुभाकर चौधरी, मनोज तिवारी रतन अग्रवाल ने कार्यक्रम में शामिल थे।

गिरिडीह: छेड़खानी के आरोपियों की गिरफ्तारी न होने से आक्रोश

हिंदू संगठनों ने देवरी थाना का किया घेराव

ट्यूशन से लौट रही छात्राओं के साथ बीच सड़क पर की थी छेड़खानी

आजाद सिपाही संवाददाता

गिरिडीह। देवरी प्रखंड के एक गांव में छात्राओं के साथ हुई छेड़खानी की घटना में फरार चल रहे आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने से आक्रोशित हिंदू संगठन के सदस्यों ने शनिवार को विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने देवरी प्रखंड मुख्यालय के ग्राउंड में बैठक की, इसके बाद विरोध प्रदर्शन करते हुए देवरी थाना पहुंचकर थाना का घेराव किया।

विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों का कहना था कि ट्यूशन से लौट रही नाबालिग छात्राओं के साथ बीच सड़क पर हुई छेड़खानी की घटना ने बेटियों में भय का माहौल पैदा कर दिया है। उनका आरोप था कि इस मामले में पुलिस आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के बजाय उन्हें बचाने की कोशिश कर रही है। वहीं, इस घटना को लेकर खोरीमहुआ के एसडीपीओ राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि पुलिस अपना काम कर रही है और दोषियों को कड़ी सजा दिलायी जायेगी। उन्होंने कहा कि पुलिस द्वारा घटना की जांच की जा रही है और किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जायेगा।

विहिप की बैठक, संगठन को मजबूत करने पर चर्चा

जयनगर (आजाद सिपाही)। प्रखंड के पावरहाउस स्थाही मंदिर प्रांगण में विश्व हिन्दू परिषद की बैठक विहिप प्रखंड अध्यक्ष महादेव शर्मा की अध्यक्षता और संचालन प्रखंड मंत्री सतीश कुमार पांडेय ने किया। बैठक में अपनी पद्धति के अनुसार तीन बार ॐ, एकात्मता मंत्र, विजय महामंत्र और परिचय के साथ प्रारंभ हुआ। बैठक में विश्व हिंदू परिषद संगठन को मजबूत करने और आर एस एस के शताब्दी वर्ष मनाने पर विचार किया गया। आगामी प्रखंड स्तरीय बैठक दिनांक 3 सितंबर को दुर्गा मंदिर प्रांगण जयनगर में किया जायेगा, जिसमें सभी पंचायत स्तर के पदाधिकारी और सनातन धर्म के लोग दिन दो बजे उपस्थित रहेंगे। मौके पर जिला सामाजिक समरसता प्रमुख पप्पु कुमार बर्णवाल, जिला कार्यकारणी सदस्य सुरेंद्र प्रसाद मोदी, महेश पांडेय, प्रखंड उपाध्यक्ष सदानंद सिंह, सत्संग प्रमुख दिगंबर पांडेय, विनोद कुमार चौधरी, कृष्ण कुमार, महेंद्र साव, सुर्य देव राणा,राजु प्रसाद, राम फल चौधरी, लालबहादुर चौधरी, हर्ष राज, पप्पु पांडेय, सोनु पासवान, राहुल साव, आकाशदीप शर्मा, भगवान राम, रंजीत सिंह, राजु प्रसाद उपस्थित थे।

गौ सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं: त्रिलोकी

झुमरीतिलैया (आजाद सिपाही)। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय गौ रक्षा टोली सदस्य सह पटना क्षेत्र के गौ रक्षा विभाग के पालक त्रिलोकी नाथ बागी ने आज सुबह कोडरमा गौशाला का भ्रमण किया। वहां सामूहिक रूप से गौ पूजन, गौ माता की आरती और गौ माता को गुड़ और केला खिलाया। श्री बागी ने वहां उपस्थित गौशाला समिति के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को भारतीय गौ वंश रक्षण संवर्धन परिषद और उसके कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विश्व हिंदू परिषद का काम अपने धर्म और संस्कृतियों के मान बिंदु है! गौ, गंगा और गीता की रक्षा करना सभी हिंदुओं का परम कर्तव्य है। गौ रक्षा का मुख्य उद्देश्य कर्ज मुक्त किसान कीटाणु मुक्त अनाज का निर्माण करना है। गौ रक्षा से कम लागत में अधिक उत्पादन हो सकता है, जिससे शुद्ध और कीटाणु मुक्त अनाज प्राप्त होता है। अपनी छोटी गाय के गोबर में कई गुण संपन्न है, देशी गाय की गोबर में ऑक्सीजन और तरह तरह के औषधि का मिश्रण है और इसके दूध में स्वर्णभस्म है। श्री बागी जी ने गौ मूत्र का परीक्षण भी करके दिखाया। गौशाला दर्शन में प्रांत सामाजिक समरसता सह प्रमुख मनोज चंद्रवंशी, प्रांत टोली गौ रक्षा विभाग के सदस्य अजय कुमार वर्मा, जिला गौ रक्षा प्रमुख आदित्य वर्णवाल, जिला गौ रक्षा सह प्रमुख संतोष यादव, जिला महिला गौ भक्त प्रमुख कुसुम साहू, जिला धर्म प्रसार प्रमुख बिनय सिन्हा, लाल बहादुर चौधरी, मनोज राणा, गौशाला समिति के सचिव अरुण मोदी, कोषाध्यक्ष अविनाश सेठ, कार्यकारिणी सदस्य संजय अग्रवाल, बिनोद बजाज, गोपाल बगेरिया, आनंद चंद्रा, सौरभ मिश्रा, मन्टू यादव आदि उपस्थित थे। वहीं दूसरी ओर झुमरीतिलैया के शिव वाटिका में विश्व हिंदू परिषद की 61वां स्थापना दिवस मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता नगर अध्यक्ष अरबिंद एकघरा ने, जबकि संचालन नगर सह मंत्री लाल बहादुर चौधरी ने किया। मुख्य अतिथि केंद्रीय गौ रक्षा टोली सदस्य सह पटना क्षेत्र गौ रक्षा विभाग के पालक त्रिलोकी नाथ बागी ने विश्व हिंदू परिषद की स्थापना के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मौके पर अरबिंद सिंह, ओम प्रकाश राय, मनोज चंद्रवंशी, अजय कुमार वर्मा, आशुतोष भदानी, सुनील दास, विजय पांडे, बिनय सिन्हा, पप्पु वर्णवाल, संतोष यादव, महाबीर मोदी, मनोज राणा, विशाल कुमार, अतुल कुमार के साथ साथ दर्जनों लोग मौजूद थे।

एचओपी सुब्रत कुमार दास ने किया एनटीपीसी के मशरूम कल्टीवेशन सेंटर का उद्घाटन

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। एनटीपीसी (एनएमएल) पकरी बरवाडीह कोल माइंस प्रोजेक्ट के बैनर आर एंड आर कॉलोनी में मशरूम कल्टीवेशन सेंटर का उद्घाटन मुख्य अतिथि पंखुरी बरवाडी कोयला खनन परियोजना के एचओपी सुब्रत कुमार दास ने फीता काट और नारियल फोड़ कर किया। इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुए सुब्रत कुमार दास ने कहा कि एनटीपीसी ने आर एंड आर कॉलोनी में निवास करने वाली सक्षम महिला ग्रुप को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए सकारात्मक कदम उठाया है। इसमें महिलाएं मशरूम की खेती कर अपनी आर्थिक व्यवस्था बढ़ाने और अपने साथ-साथ दूसरों को रोजगार से जोड़ने की योजना है। 30 महिलाओं को साक्षात्कार में लिया गया जिसमें मात्र 10 महिलाएं सफल हुई और उन्हें मशरूम की खेती के लिए योग्य पाया गया। जिन महिलाओं को इस योजना से जोड़ा गया उसमें सक्षम ग्रुप के सावित्री देवी, मंजू देवी, कविता देवी, मोनिका देवी, किरण देवी, हेवंती देवी, सरोज देवी, मौसमी देवी, बबीता देवी रेखा देवी, को कल्टीवेशन बैग व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर एनटीपीसी के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी और सदस्य उपस्थित थे। जिनमें सीएसआर विभाग से लाइवलीहुड कमिटी के सदस्य कमल कमला राम राजक, राहुल कुमार जायसवाल, मिथिलेश कुमार उपाध्याय, पी आर ओ दिलीप कुमार लैंड विभाग से मुकेश कुमार ट्रेनर संतोष राणा और आईटीआइ मैडति की संपूर्ण टीम शामिल थी। इसके अलावा अन्य विभागों के विभागाध्यक्ष और सदस्य भी उपस्थित थे। एनटीपीसी के इस पहल से स्थानीय महिलाओं को रोजगार के नये अवसर प्रदान करने में मदद मिलेगी और क्षेत्र के विकास में भी योगदान होगा।

भक्ति जागरण में झूमे श्रद्धालु

विष्णुगढ़ (आजाद सिपाही)। विष्णुगढ़ ग्राम देवी मंडप स्थित सार्वजनिक गणपति पूजन महोत्सव में आयोजित पांच दिवसीय गणेश पूजा के तीसरे दिन भक्ति जागरण का आयोजन किया गया। भक्ति जागरण में हजारों की संख्या में श्रद्धालु जुटे और रातभर माता रानी के जगराते में भक्ति भाव में डूबे दिखे। जागरण का शुभारंभ प्रथम पूज्य विघ्नहर्ता की वंदना से साथ कि गयी। भक्ति जागरण में रातभर, वाणी कुणाल म्यूजिकल ग्रुप द्वारा बेहतरीन भक्ति गाने और एक से बढ़कर एक झांकी प्रस्तुत किया गया। जागरण में दो महिला गायिकाओं ने बेबी रेखा और सिंगर खुशबू ने अपने गायकी से दर्शकों को रात भर खूब झुमाया। सिंगर बेबी रेखा ने लगन लागी, तोसे मोरी मईया, भजन से दर्शको को भक्ति का रस पान कराया। वही सिंगर खुशबू ने, लेके पूजा की थाली, भजन से श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम के बीच-बीच में वाणी कुणाल म्यूजिकल ग्रुप द्वारा बेहतरीन झांकी में हनुमान विराट रूप में दिखे और अपनी पुछ में आग लगा कर लंका दहन किया, वही राधा कृष्ण की जोड़ी ने प्रेम का प्रतीक बताया, दुर्गा जी का विराट रूप में दर्शाया कि जगतजननी मां दुर्गा सृष्टि को बनाया, महाकाल रूप में भगवान भोलेनाथ का दर्शन कराया, काली मां ने विराट रूप से प्रकट कर अनेकों मुंड द्वारा शत्रुओं का नाश करते दिखाया गया। इसके अलावे विभिन्न प्रकार की झांकी प्रस्तुत किया गया। जागरण टीम के सदस्यों में अजीत कुमार, रितेश कुमार, नंदू कुमार, आलोक कुमार शामिल थे।

मामूली सर्दी, खांसी और बुखार का इलाज कराने आये व्यक्ति की मौत

परिजनों ने सदर अस्पताल में काटा बवाल

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। जिले का सदर अस्पताल फिर सुर्खियों में है। व्यवस्था सुधारने की मांग को लेकर जहां कांग्रेस नेताओं का अनशन शुरू हुआ है, वहीं सर्दी, खांसी व बुखार का इलाज कराने आए एक व्यक्ति की इलाज के दौरान ही रात में मौत हो गयी। मौत हो जाने के पश्चात मृतक के परिजनों ने जमकर बवाल काटा। हरदिया, नवादा (बिहार) निवासी सुरेश मांझी की पत्नी ने बताया कि उनके पति को पिछले 2-3 दिनों से सर्दी, जुकाम और बुखार था। इलाज हेतु शुक्रवार को 11 बजे दिन में उन्हें लेकर सदर अस्पताल कोडरमा आई। जहां मौजूद चिकित्सक द्वारा उन्हें भर्ती कराने की सलाह दी गयी। उन्होंने बताया

कि उनके पति के भर्ती होने के बाद कोई भी चिकित्सक या नर्स उनकी सुध लेने तक नहीं आये। वहीं देर शाम जब उनकी हालत बिगड़ने लगी तब वे भाग कर इमरजेंसी में गयीं। जहां से एक एएनएम आईं और उन्हें इंजेक्शन लगाया। एएनएम द्वारा इंजेक्शन लगाते ही 5 मिनट के भीतर सुरेश मांझी की मौत हो गयी। इसके बाद वहां मौजूद सुरेश के परिजन व अन्य मरीजों के भी परिजन इमरजेंसी वार्ड में जाकर इसकी शिकायत कर उक्त एएनएम की खोजबीन करने लगे। पता चला कि मौजूद स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा उसे वहां से भगा दिया गया। इसके पश्चात मृतक के परिजन व वहां भर्ती अन्य मरीजों के परिजन आक्रोशित हो गये और सदर अस्पताल की इस लापरवाही के खिलाफ हो हल्ला करने लगे। वहां भर्ती मरीजों के परिजनों ने वहां बरती जा रही लापरवाही के खिलाफ सदर में मौजूद कर्मियों को खूब खरी खोटी सुनाई। परिजनों ने कहा कि सदर अस्पताल के डॉक्टर और नर्स का कहना है कि दुनिया में सिर्फ यही अस्पताल है क्या? यहां इलाज नहीं होता है तो दूसरे अस्पताल जाओ। बताते चलें कि आए दिन सदर अस्पताल की लापरवाही को लेकर शिकायतें आती रहती हैं, लेकिन कोई भी सुनने वाला नहीं है। अस्पताल में लापरवाही के बीच वित्तीय पावर को लेकर सिविल सर्जन और अस्पताल उपाधीक्षक के बीच विवाद भी कायम है।

दिशा की बैठक में उठे कई जमीनी मुद्दे

जिला परिषद भवन आवंटन का मुद्दा भी उठा

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। जिले के विकास समन्वय और मूल्यांकन समिति (दिशा) की बैठक केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री, कोडरमा सांसद-सह- समिति अध्यक्ष अन्नपूर्णा देवी की अध्यक्षता में शनिवार को समाहरणालय सभागार में हुई। बैठक में सदस्य के रूप में हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल, बरही विधायक मनोज कुमार यादव, बरकट्ठा विधायक अमित कुमार यादव, बगोदर विधायक नागेंद्र महतो, बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी, मांडू विधायक निर्मल महतो उर्फ.तिवारी महतो, डीसी शशि प्रकाश सिंह, एसपी अंजनी अंजन, हजारीबाग जिला परिषद अध्यक्ष उमेश कुमार मेहता, जिला परिषद उपाध्यक्ष किसुन यादव समेत अन्य विधायक के प्रतिनिधिगण और दिशा के अन्य सदस्यगण शामिल हुए। बैठक में राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल आपूर्ति योजना, कृषि विभाग की योजना, स्वास्थ्य विभाग, सर्व शिक्षा अभियान, कल्याण विभाग, आपूर्ति विभाग, समाज कल्याण, बिजली विभाग, भूमि संरक्षण, भवन प्रमंडल, एनएच, वन

विभाग, जिला परिषद, नगर निगम, भू-अर्जन सहित केंद्र और राज्य सरकार की अन्य कल्याणकारी योजनाओं की अनुपालन और प्रगति प्रतिवेदन और क्रियान्वयन पर विस्तार से चर्चा की गयी।बैठक की अध्यक्षता करते केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि सरकार की सभी योजनाओं का लाभ आम जनता तक समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण ढंग से पहुंचे यह हम सभी जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता अनिवार्य है तथा इसके लिए सतत मॉनिटरिंग की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।

बैठक के दौरान सांसद मनीष जायसवाल ने 2024-25 वित्तीय वर्ष में तालाब स्वीकृति की स्थिति, शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज हजारीबाग की स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार तथा प्रखंड स्तरीय स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया। केंद्रीय मंत्री ने स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को लिखित रूप में जिला प्रशासन को उपलब्ध कराने और प्रशासन द्वारा उस पर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया। बिजली आपूर्ति से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करते हुए विधायकगणों ने कई गांवों में अब तक बिजली न पहुंचने की शिकायत की। इस पर केंद्रीय मंत्री ने तत्काल विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने, खराब ट्रांसफार्मरों की मरम्मत शीघ्र कराने और बिजली समस्या के समाधान को मिशन मोड में लेने का निर्देश दिया। नगर निगम द्वारा झील की सफाई हेतु उपलब्ध कराई गयी मशीन की कार्यशीलता की जानकारी दी गयी। सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि फुटपाथ व्यापारियों के लिए बनाये गये वेंडिंग जॉन के दुकानों का लोहा चोरी हो रहा है। नगर निगम को अविलंब इसे देखना चाहिए। नगर निगम क्षेत्र और नेशनल हाईवे के किनारे के सूखे पेड़ों को नगर निगम को ससमय कटवा लेना चाहिए ताकि कोई अप्रिय घटना न हो। हजारीबाग जिला परिषद द्वारा जिला बोर्ड चौक के आगे बनाये गये एक विशाल भवन को बनकर तैयार हुए 2 साल हो गये अब तक उसे आवंटित नहीं किया गया। इसे तत्काल एक दर तय करके डाक कराकर एक नहीं बल्कि कईयों के बीच आवंटित किया जाना चाहिए। साथ ही जिला परिषद के पुराने ऑफिस को कोविड काल में सीमित समय के लिए किसी को आवंटित किया गया लेकिन कोविड खत्म हुए बरसों हो गये अब तक उस भवन को मुक्त नहीं कराया गया। इसे तत्काल मुक्त कराकर इसे पुनर्निमित कर जिला परिषद को अपना आय का स्रोत बढ़ाना चाहिए।

लोक अदालत में 54 वादों का निष्पादन

कोडरमा(आजाद सिपाही)। जिला विधिक सेवा प्राधिकार कोडरमा के तत्वावधान में व्यवहार न्यायालय परिसर में शनिवार को विशेष लोक अदालत सह मासिक लोक अदालत का आयोजन किया गया। मौके पर पीडीजे बाल कृष्ण तिवारी ने कहा कि आज के वर्तमान परिवेश में लोक अदालत किसी परिचय की मोहताज नहीं है। यही कारण है कि इसकी लोकप्रियता दिन प्रति दिन बढती जा रही है। लोक अदालत में नौ बेंचों के माध्यम से कुल 54 वादो का निष्पादन किया गया और विभिन्न विभागों से 2 करोड़ 23 लाख 57 हजार पांच सौ पंचानबे रुपये की वसूली की गयी। मौके पर विद्युत विभाग, उत्पाद विभाग के अधिकारी, न्यायालयकर्मी रणजीत कुमार सिंह, मूंगा लाल दास, राजेंद्र कुमार, मनोज मिश्रा, रंजीत कुमार, राजीव रंजन, कुमार संजय, महेश्वर कुमार, राजीव कुमार, प्रियंका कुमारी, रवि कुमार, आशीष सिन्हा, अनिल कुमार सिंह, सहित अन्य लोग मौजूद थे।

धरगांव ने गोल्डन क्लब बोकारो को 1-0 से हराया

मरकच्चो (आजाद सिपाही)। प्रखंड के विचरिया नईटांड खेल मैदान मे न्यू स्पोर्टिंग क्लब तेलोडीह द्वारा आयोजित नॉक आउट फुटबॉल प्रतियोगिता के अंतर्गत शनिवार को गोल्डन क्लब बोकारो व एफसी क्लब धरगांव के बीच मुकाबला हुआ। उक्त मैच मे एफसी क्लब धरगांव ने गोल्डन क्लब बोकारो को 1-0 से हराकर अगले चक्र मे प्रवेश कर लिया। मैच मे दोनों टीम की ओर से जबरदस्त खेल का प्रदर्शन किया। पहले हाफ मे दोनों टीम कोई भी गोल नहीं कर पायी। लेकिन दूसरे हाफ मे धरगांव की टीम ने एक गोल कर निर्णायक बढ़त हासिल कर मैच को जीत लिया तथा अगले चक्र मे प्रवेश कर लिया। मैच मे रेफरी की भूमिका सूरज पासवान, प्रवीण कुमार रवि व सुनील कुमार पासवान ने निभाई। उद्घाटक के रूप मे एम. चंद्रा व हरिहर सिंह मौजूद थे। प्रतियोगिता का अगला मैच रविवार को एफएलसी क्लब बरकट्ठा हजारीबाग व एफसी क्लब बिरसा नगर कोडरमा के बीच खेला जायेगा। मौके पर राजकुमार यादव, मुखिया रंजीत कुमार सिंह, सुनील यादव, मनिन्द्र राम, प्रदीप राम, सकलदेव सिंह, जनार्दन यादव समेत काफी संख्या में दर्शक मौजूद थे।

बाबा गणिनाथ गोविंद का 37वां वार्षिक जयंती समारोह सह पूजनोत्सव मनाया गया

वरिष्ठजनों, महिला-पुरुषों और मेधावी छात्र-छात्राओं को किया गया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। अखिल भारतीय मद्धेशिया वैश्य हलवाई पंचायत के तत्वावधान में पूज्य संत शिरोमणि कुल देवता बाबा गणिनाथ गोविंद का 37वां वार्षिक जयंती समारोह सह पूजनोत्सव पैराडाइज रिसोर्ट में शनिवार को मनाया गया। समारोह की शुरुआत बाबा गणिनाथ गोविंद की विधिवत पूजा-अर्चना, झंडोत्तोलन और अभ्युदभगान कार्यक्रम के साथ की गयी। पूजा के दौरान उपस्थित श्रद्धालु भाव विभोर होकर बाबा के जयकारे लगाते रहे। समाज के गणमान्य लोगों ने बाबा गणिनाथ के

आदर्शों, जीवन दर्शन और समाज सुधार के संदेशों को उपस्थित जनसमूह के बीच रखा। बाबा गणिनाथ ने समाज में सद्भाव, सेवा और सत्यनिष्ठा का संदेश दिया, जिसे आत्मसात कर जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ना ही उनके प्रति सच्ची आराधना है। इस दौरान समाज के वरिष्ठजनों, महिला-पुरुषों और मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। आयोजन को सफल बनाने में अध्यक्ष कुलदीप कृष्णा, सचिव अमित कुमार गुप्ता, उप-कोषाध्यक्ष गुंजन मद्धेशिया और प्रवक्ता राजेश कुमार गुप्ता की सक्रिय भूमिका रही। समिति की कार्यकारिणी में संगम मद्धेशिया, विकास गुप्ता, नीरज गुप्ता, अमन गुप्ता, संजीव गुप्ता सहित कई अन्य सदस्य भी शामिल थे। समारोह में समाज के संरक्षक कृष्णा गुप्ता ने कहा कि बाबा गणिनाथ केवल हमारे कुल देवता ही नहीं, बल्कि एक प्रेरणा पुंज हैं, जिन्होंने हमें ईमानदारी, सेवा और भाईचारे का मार्ग दिखाया। मौके पर समाज के प्रभारी सचिव रणधीर गुप्ता, उपाध्यक्ष पवन कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष राजेंद्र कुमार गुप्ता, उप-कोषाध्यक्ष राजू कुमार गुप्ता, विशेष संयोजक महेश प्रसाद, योगेंद्र प्रसाद, उदय शंकर गुप्ता, दीपक लाल, आनंद गुप्ता, संजीव गुप्ता, प्रीति गुप्ता, महिला मंडल की अध्यक्ष रीना किशोर, उपाध्यक्ष इंदु देवी, सचिव किरण गुप्ता, उप सचिव आरती गुप्ता, कोषाध्यक्ष रंजीत गुप्ता आदि उपस्थित थे।

हाथियों के झुंड ने तीन मकानों को तोड़ा

विष्णुगढ़ (आजाद सिपाही)। ग्रामीण क्षेत्रों में हाथियों का उत्पात पंद्रह दिनों से जारी है। बीती रात हांथियों को ने फिर एक बार पंचायत गोविंदपुर पंचायत के चितरामो के गिधिनिया टोला के तीन मकान को तोड़ डाले वही फसलों को भी नुकसान पहुंचाने का काम किया। जिसमें मोतीलाल मरांडी, छोटूमरांडी और साहबराम मरांडी, के घरों को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। घर में रखे अन्नाज भी पूरा चट कर गये। अब ये तीनो परिवार के ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है लगातार एक महीने में दूसरी बार इन लोगों का घर में हमला किया गया। साथ में मोतीलाल मरांडी का पूरा धान का फसल को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। बताते हैं कि एक हाथिनी ने बच्चे को जन्म दिया है जिससे हाथी और आक्रामक हो गये है। एक दिन पूर्व भेलवारा के गावो में भी हाथियों के झुंड ने कई घरों को नुकसान पहुंचाया है। उप प्रमुख सरयू साव ने चित रामो गाव का दौरा किया और पीड़ित परिवारो को तत्काल आवास व अन्य राहत सामग्री मुहैया कराने की मांग की है।

थानों में निजी ड्राइवर और मुंशी नहीं रख सकेंगे थानेदार

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। जिले के कई थानों में प्राइवेट ड्राइवर और मुंशी रखकर काम करवाने वाले थाना प्रभारी अब प्राइवेट ड्राइवर और मुंशी नहीं रख सकेंगे। हजारीबाग एसपी अंजनी अंजन ने पत्र जारी कर जिले के सभी थाना प्रभारी को आदेश दिया है। एसपी ने कहा है कि महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक, झारखंड, रांची के द्वारा आदेश में स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि किसी भी थाना या ओपी में सिरिस्ता कार्य और चालक के रूप में प्राईवेट व्यक्ति को नहीं रखने का प्रावधान है। इसलिए सभी थानेदार अपने-अपने थाना या ओपी में कार्यरत निजी (प्राईवेट) चालक और मुंशी को अविलम्ब हटाए। भविष्य में यदि किसी भी थाना या ओपी में प्राईवेट चालक और मुंशी द्वारा कार्य करने की सूचना मिलती है तो इसके लिए थानेदार जिम्मेवार होगें और उनके विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई की जायेगी।

धोखाधड़ी के मामले में एक वारंटी को भेजा जेल

चरही (आजाद सिपाही)। शनिवार को चरही पुलिस द्वारा विशेष छापामारी अभियान चला कर एक वारंटी को जेल भेजा गया। प्रभारी कुंदन कांत विमल ने जानकारी देते हुए बताया कि अभियुक्त लगभग एक वर्ष से फरार चल रहा था। जिसके बाद एक विशेष छापामारी अभियान चला कर गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार वारंटी जलील अंसारी पिता रौशन मियां साकिन इंद्रा जरबा को धोखाधड़ी तथा संपति नुकसान करने के आरोप में जेल भेजा गया। जलील अंसारी को आई पी सी की धारा 406/420 लगाकर गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

पत्रकारों ने पूर्व मंत्री के बयान का किया खंडन

केरेडारी (आजाद सिपाही)। स्थानीय प्रेस क्लब के भवन में केरेडारी प्रखंड के पत्रकारों की एक बैठक प्रेस क्लब केरेडारी के अध्यक्ष मनोज वर्मा की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयोजित की गयी। इस बैठक में पूर्व मंत्री योगेंद्र साव के द्वारा लोकल मीडिया के विरुद्ध दिये गये ब्यान की घोर निंदा की गयी। पूर्व मंत्री योगेंद्र साव ने डीजीपी व एसपी पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने के बाद अब यही आरोप लोकल मीडिया पर भी लगाना शुरू कर दिया है। अध्यक्ष मनोज वर्मा ने कहा योगेंद्र साव खुद 13 अगस्त को गांव के चार बुजुर्गों को धरना में बिठा कर बेटा और बेटी को लेकर हैदराबाद ऋत्विक कम्पनी के एक्सक्यूटिव डायरेक्टर सीएम राजेश से डील करने पहुंचते हैं और उल्टा तीन दिन पहले झारखंड विधान सभा के बाहर पूर्व मंत्री एक यूट्यूब चैनल में बात चीत के दौरान लोकल मीडिया पर कम्पनी से बिके रहने व हमारे न्यूज को नहीं भेजने का आरोप लगाते हैं। जबकि सभी अखबार और चैनलों में उनकी खबर चली है। आगे कहा कि हम पत्रकारों को दोनों का पक्ष लेना मजबूरी है इसलिये खबरों में योगेंद्र साव व कंपनी दोनों का पक्ष छापी गयी है। इस बैठक में स्थानीय पत्रकारों ने निर्णय लिया है कि पूर्व मंत्री योगेंद्र साव के द्वारा जब तक गलती स्वीकार नहीं किया जाता है तब तक योगेंद्र साव व पूर्व विधायक अम्बा प्रसाद के कार्यक्रमों की खबर का बहिष्कार होगा। बैठक में मुकेश कुमार, अवधेश कुमार यादव,अरुण कुमार यादव, अमित माली, गणेश कुमार, रविंद्र सोनी, रवि कुमार मिश्रा, सुरेश मिश्रा, मिथिलेश कुमार, अशोक बेटी राज, अशोक राणा, ज्ञान पासवान, इंद्रजीत गिरी, पवन कुमार दास, अजय तिवारी, सनोज कुमार महतो, सुरेश साव आदि शामिल थे।

भूमि पर 163 लागू होने के बाद भी जारी है निर्माण, पीड़ित पहुंचे थाना

बरकट्ठा (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के ग्राम बरकनगांगों में भूमि विवाद को लेकर तनाव गहराता जा रहा है। संजय प्रसाद ने न्यायालय अनुमंडल दंडाधिकारी बरही वाद संख्या 303/25 के तहत धारा 163 बीएनएसएस लागू होने के बावजूद विपक्षी पक्ष लगातार भूमि पर अवैध निर्माण और कब्जा कर रहा है। विवादित भूमि का खाता संख्या 106 और प्लॉट संख्या 1878 है। मामले में प्रथम पक्ष में संजय प्रसाद और बैजू प्रसाद हैं जबकि द्वितीय पक्ष में सीताराम महतो, राजेंद्र चौधरी, अर्जुन चौधरी, जमुना महतो, शिवा प्रसाद, चंद्रदेव महतो, गंगा प्रसाद, रामेश्वर पंडित सहित अन्य लोग शामिल हैं। आवेदक संजय प्रसाद का कहना है कि कई बार थाना से सहयोग की मांग की गयी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। वहीं बेबी देवी और मंटू प्रसाद ने आरोप लगाया कि सीताराम महतो के पुत्र शिव प्रसाद दारोगा पद पर कार्यरत हैं, जिसके कारण सीताराम महतो खुलेआम दबंगई करते हुए कहते हैं— जहां जाना है जाओ। सब मेरा है। साथ ही उन्होंने कहा थाना प्रभारी पंकज सिंदुरिया शिवा प्रसाद दरोगा के साथ दोस्ती निभा रहे हैं। पीड़ितों ने पुलिस प्रशासन से निष्पक्ष कार्रवाई की मांग की है। इस बाबत थाना प्रभारी पंकज सिंदुरिया ने कहा कि दोनों पक्ष एक ही जैसा है। भूमि सबंधित 164 लगा दिया गया है। भूमि सबंधित मजिस्ट्रेट जायेंगे उस समय हम पुलिस बल भेज देंगे। साथ ही कहा कि लगाये गये आरोप बेबुनियाद हैं।

रौशन कुमार वर्णवाल बने मुफस्सिल थाना के नये थाना प्रभारी

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। मुफस्सिल थाना प्रभारी कुणाल किशोर को हटाते हुए रौशन कुमार बर्नवाल को नया थाना प्रभारी बनाया गया है। रौशन कुमार वर्णवाल चौपारण थाना में एसआई के पद पर थे। एसपी अंजनी अंजन ने उन्हें अब नई जिम्मेवारी सौंपी है। वहीं मिली जानकारी के अनुसार गत दिन पूर्व मुफस्सिल थाना क्षेत्र के फोरलेन में चल रहे आधा दर्जन होटल में अवैध देह व्यापार का भंडाफोड़ हुआ था, जिसमें छह होटल को सिल किया गया था और होटल संचालक को जेल भेजा गया था। इसी मामले में तत्कालीन थाना प्रभारी कुणाल किशोर पर कारवाई हुई है।

जिउतिया पूजा को लेकर कमेटी गठित

उरीमारी (आजाद सिपाही)। पोटंगा न्यू शिव मंदिर के सामने जिउतिया पूजा को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गयी, जिसमें पूजा कमेटी का गठन किया गया। बैठक का संचालन गणेश गंझू ने किया। बैठक में पोटंगा के प्रमुख व्यक्तित्वों ने हिस्सा लिया और पूजा के आयोजन को लेकर विचार विमर्श किया। पूजा कमेटी में अध्यक्ष के रूप में मनोज मुंडा, उपाध्यक्ष राजू गंझू, राजेन्द्र गंझू, सचिव पप्पू मुण्डा, उपसचिव राजेश मुंडा और सुमित मुंडा, कोषाध्यक्ष सूरज मुंडा और संतोष प्रजापति बनाये गये। इस वर्ष जिउतिया मेला का आयोजन 15 सितंबर 2025 को पोटंगा में किया जायेगा। मेले में नागपुरी संगीत कार्यक्रम होगा, जिसमें जोहार बैंड विक्की म्यूजिकल प्रस्तुति देगा। कार्यक्रम में प्रमुख सिंगर्स प्रितम, सुमन गुप्ता, पंकज महली, और केशव देवी के अलावा डांसर साइन स्टार भी अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे। बैठक में अकल मुंडा, जितन मुंडा, कामेश्वर मुंडा, अजय मुंडा, राजेन्द्र गंझू, मुकुन्द्र मुण्डा, लिट्टू गंझू, गिरधारी प्रजापाती, हन्दू मुंडा, कर्तिक मुंडा, दिनेश मुंडा, मटु मुण्डा, संजय मुंडा, छोटू मुंडा, सिकेन्द्र मुंडा, डब्लू मुंडा, सुरेश प्रजापति, संदीप सिंह, टिंकू प्रजापति सहित कई लोग उपस्थित थे।

मुखिया ने जनवितरण प्रणाली में बांटी धोती-साड़ी

उरीमारी (आजाद सिपाही)। उरीमारी हेसाबेड़ा स्थित जनवितरण प्रणाली में शनिवार को एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पंचायत समिति सदस्य गीता देवी, वार्ड सदस्य फुलमती किस्कू, और जन वितरण प्रणाली (ज्योति महिला समूह) के सहयोग से धोती साड़ी वितरण किया गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से उरीमारी पंचायत मुखिया कमला देवी ने लाभार्थियों के बीच धोती साड़ी वितरित की। इस अवसर पर सुषमा श्रीवास्तव, सीतामुनी देवी, रुसुमुनी देवी, फुलासरी देवी, सुशीला देवी, फुलमनी देवी समेत कई स्थानीय महिलाएं उपस्थित थीं। यह कार्यक्रम महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ और स्थानीय महिलाओं को समाज में अपनी स्थिति को सशक्त बनाने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान मुखिया कमला देवी ने जन वितरण प्रणाली के माध्यम से महिलाओं को उचित सामग्री और लाभ की बात बताई।

डीएवी रजरप्पा के लैब अटेंडेंट जनार्दन सिंह हुए सेवानिवृत, दी गयी विदाई

रजरप्पा (आजाद सिपाही)। सीसीएल रजरप्पा में डीएवी पब्लिक स्कूल रजरप्पा के गैर शैक्षणिक कर्मचारी (लैब अटेंडेंट) पद पर कार्यरत जनार्दन सिंह अपने सेवाकाल की सफलतम 35 वर्षों की यात्रा पूर्ण कर सेवानिवृत्त हो गये। उन्होंने 16 अप्रैल 1990 से विद्यालय में योगदान दिया और पूरी निष्ठा, इमानदारी और सादगी के साथ अपनी सेवाएं प्रदान कीं। उनके सम्मान में विद्यालय परिसर में एक सादगीपूर्ण विदाई समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम वरीय शिक्षक मनोज कुमार पी. नायक, राजीव सिंह और ऑफिस स्टाफ के वरिष्ठ सदस्य महेश मेहता सहित सभी सहकर्मियों ने उन्हें पुष्पगुच्छ और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर मनोज कुमार और महेश मेहता ने उनके साथ बिताये गये संस्मरण साझा करते हुए कहा कि जनार्दन सिंह अत्यंत शालीन, सरल स्वभाव, कर्मठ और ईमानदार व्यक्ति रहे हैं। झारखंड प्रक्षेत्र डी के सहायक क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. एस.के. शर्मा ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि सेवा से जुड़ने वाला हर कर्मचारी अंततः सेवा से निवृत्त होता है, किंतु अपनी ईमानदारी और कर्मठता से जो छाप छोड़ता है वही उसकी वास्तविक पहचान होती है। उन्होंने जनार्दन सिंह के उज्ज्वल भविष्य और स्वस्थ जीवन की मंगलकामना की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी शिक्षकों और कर्मचारियों ने श्री सिंह को जीवन की दूसरी पारी के लिए ढेरों शुभकामनाएं दीं।

मां शीतला देवी मंदिर में भंडारा का आयोजन

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। लायंस क्लब ऑफ भुरकुंडा ने प्रत्येक सप्ताह की भांति इस शनिवार को भी भुरकुंडा के पटेलनगर सयाल मोड़ स्थित मां शीतला देवी मंदिर में नर सेवा नारायण सेवा कार्यक्रम के तहत भव्य भंडारा का आयोजन किया। सर्वप्रथम पूरे विधि-विधान एवं वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पूजा-अर्चना कर मां को लड्डू का भोग चढ़ाया गया। इसके बाद भव्य भंडारा का आयोजन कर लायंस क्लब ने फूड फॉर हंगर के तहत लगभग 350 लोगों को खिचड़ी रूपी प्रसाद खिलाकर आशीर्वाद लिया गया। बताया गया कि पिछले एक वर्ष से अधिक समय से प्रत्येक सप्ताह लायंस परिवार के द्वारा व्यक्तिगत सहयोग से इस तरह का आयोजन किया जाता है। लायंस परिवार ने ऐसे नेक और सामाजिक कार्यों में सबों को सहयोग करने की अपील की। कार्यक्रम को सफल बनाने में क्लब के अध्यक्ष लायन अशोक सिन्हा, सचिव लायन अखिलेश शर्मा, कोषाध्यक्ष लायन निर्मल अग्रवाल, लायन अंजू देवी, लायन रेखा वर्णवाल, लायन माला शर्मा, लायन रेखा मंजुल, एमजेएफ लायन संजय जायसवाल, लायन विजयंत कुमार, लायन विजय वर्णवाल, लायन डॉ एमके मंजुल, लायन दीनबंधु सिंह आदि सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

विद्युत प्रवाहित तार के संपर्क में आने से हाइवा में लगी आग, चालक की मौत

चतरा (आजाद सिपाही)। सदर थाना क्षेत्र के बधार गांव के समीप कोरचा गांव में बोल्डर से लदे हाईवा के 11 हजार विद्युत प्रवाहित तार के संपर्क में आने से हाइवा में आग लग गयी। जिससे हाइवा चालक की जलकर मौत हो गयी। मृतक चालक सदर थाना क्षेत्र के संघरी गांव निवासी अबुल रहमान का 45 वर्षीय पुत्र यूनुस खान है। मृतक के परिजनों ने बताया कि यूनुस खान सदर थाना क्षेत्र के कामता गांव के रिशु सिंह का हाईवा चला रहा था। जिसका नंबर जेएच 13 एफ/ 5845 है। वह हाइवा से नाली निर्माण के लिए पत्थर का बोल्डर लेकर कोरचा गांव गया था। वह बोल्डर को जैसे ही अनलोड किया। हाईवा का डल्ला 11हजार विद्युत प्रवाहित तार के संपर्क में आ गया। जिससे हाईवा में आग लग गयी। जिससे हाईवा को भी काफी नुकसान हुआ है। घटना की जानकारी मिलते हैं पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का हुआ आयोजन

जीवन में पढ़ाई के साथ खेल भी महत्वपूर्णः डीसी

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। पर्यटन कला संस्कृति खेलकूद और युवा कार्य विभाग झारखंड सरकार के निर्देशानुसार राष्ट्रीय खेल दिवस पर शनिवार को विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान इनडोर स्टेडियम छत्तरमांडू रामगढ़ में बैडमिंटन, योग, वुशू और राधा गोविंद यूनिवर्सिटी ललकी घाटी रामगढ़ में गुलेल, मटका दौड़, फुटबॉल, कबड्डी और स्विमिंग का आयोजन किया गया।

डीसी ने किया प्रतियोगिता का उद्घाटनः इस दौरान उद्घाटन समारोह का आयोजन उपायुक्त रामगढ़ फैज अक अहमद मुमताज की अध्यक्षता में इंडोर स्टेडियम छत्तरमांडू रामगढ़ में किया गया। मौके पर उपायुक्त, जिला खेल पदाधिकारी, जिला योजना पदाधिकारी, एसएमपीओ सहित अन्य ने दीप प्रज्वलित कर विधिवत रूप से प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। मौके पर सभी को संबोधित करते हुए उपायुक्त ने राष्ट्रीय खेल दिवस मनाये जाने के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी महत्वपूर्ण है। खेल से शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास में भी काफी लाभ होता है। मौके पर उपायुक्त ने उपस्थित सभी से अपने जीवन में किसी न किसी खेल में नियमित रूप से अपना समय देने की अपील की। इस दौरान फुटबॉल बालक बालिका, कबड्डी बालक बालिका, गुलेल, मटका दौड़, स्विमिंग बालक बालिका, योग बालक बालिका, वुशू बालक बालिका प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और विजय खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया।

मेडिकल स्टोर और राशन दुकान से मिली नशीली दवा

आजाद सिपाही संवाददाता

पतरातू। स्वास्थ्य विभाग रामगढ़ की टीम ने पतरातू पुलिस के सहयोग से शनिवार को बड़ी कार्रवाई की। टीम ने खैरा मांझी चौक स्थित एक दवा दुकान, पेट्रोल पंप समीप राशन दुकान सहित पतरातू मेन रोड पर स्थित मेडिकल स्टोर व अन्य दुकानों में छापामारी कर प्रतिबंधित नशीली दवाइयां बरामद की। इस दौरान दो विक्रेताओं को गिरफ्तार भी किया गया। जानकारी के अनुसार, स्वास्थ्य विभाग को पिछले कुछ दिनों से शिकायत मिल रही थी कि पतरातू क्षेत्र के कई मेडिकल स्टोर समेत राशन दुकानों में प्रतिबंधित नशीली दवाएं बेची जा रही हैं। शिकायतों के आधार पर की गयी छापामारी में टीम ने भारी मात्रा में नशीले टैबलेट जब्त किये हैं। छापामारी अभियान में ड्रग इंस्पेक्टर रामगढ़ वीरेंद्र स्वनसी, अभिषेक कुमार, थाना प्रभारी शिवलाल कुमार गुप्ता सहित पतरातू पुलिस के सशस्त्र बल मौजूद थे। अधिकारियों ने बताया कि गुप्त सूचना मिल रही थी कि प्रतिबंधित दवाओं की बिक्री ग्रामीण क्षेत्रों तक हो रही है, जिससे युवा वर्ग के कई लड़के इसकी चपेट में आ रहे हैं। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ आवश्यक कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है।

रामगढ़ डीसी से मिला चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का प्रतिनिधिमंडल, रखी समस्याएं

रामगढ़(आजाद सिपाही)। चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के एक प्रतिनिधिमंडल अध्यक्ष मंजीत साहानी के नेतृत्व में उपायुक्त फैज अक अहमद मुमताज से मिला। साथ ही शहर और जिला के समस्याओं से अवगत कराया। इस दौरान निष्पादन के लिए एक मांग पत्र सौंपा। प्रतिनिधिमंडल में शामिल लोगों ने बताया कि रामगढ़ शहर में बड़े वाहनों के प्रवेश से ट्रैफि क की समस्या, रामगढ़ बाजार समिति प्रांगण में सड़कों की जर्जर स्थिति, बरसात के दिनों में बाजार समिति के अंदर पानी जमा होने की समस्याओं, बाजार समिति की चहारदीवारी के जर्जर अवस्था के संबंध में, रामगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों खासकर मेन रोड से दामोदर नदी तक जाने वाली नली जो काफी संकीर्ण है, उसे चौड़ीकरण करने, रामगढ़ शहर की एक महत्वपूर्ण सड़क पुरानी एनएच 33 जो पटेल चौक से लेकर अटल चौक को जोड़ती है, उस सड़क पर जल जमाव से होने वाली परेशानी को दूर करने, पतरातू प्रखंड के भुरकुंडा स्थित नलकारी नदी में एक शवगृह निर्माण कराने आदि की मांग की। मांग पत्र उपायुक्त ने समस्याओं का निष्पादन के लिए आवश्यक कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रतिनिधिमंडल में अध्यक्ष मंजीत साहानी, उपाध्यक्ष अमरेश गणक, मानद सचिव मनोज चतुवेर्दी, कोशाध्यक्ष दिनेश पोद्दार सहसचिव इंदरपाल सिंह सैनी, पूर्व चेंबर अध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह, पंकज तिवारी, विनय कुमार अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य अभिजीत कुमार उर्फ.बीजी शामिल थे।

जेएसएलपीएस रतवे आजीविका महिला संकुल की वार्षिक आमसभा

आजाद सिपाही संवाददाता

कुजू। जेएसएलपीएस के तत्वावधान में रतवे आजीविका महिला संकुल का वार्षिक आमसभा करमा उतरी पंचायत सचिवालय में किया गया। आमसभा में मुख्य अतिथि मुखिया प्रतिनिधि शक्ति कुमार, विशिष्ट अतिथि पंचायत की उप मुखिया रीता देवी, जेएलकेएम केंद्रीय महासचिव लीलावती देवी, बीओआइ करमा शाखा मैनेजर श्याम सुंदर मुंडा, शिक्षाविद सर्वेश्वर राम, रवि कुमार महतो शामिल रहे। आमसभा की अध्यक्षता संकुल अध्यक्ष कुंती देवी और संचालन सीआरपी-ईपी सुनीता देवी ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ आगत अतिथियों का पारंपरिक तरीके से स्वागत गान गाकर और पुष्प गुच्छ देकर किया गया। इस अवसर पर पूर्व मुखिया शक्ति कुमार ने कहा कि सात

पंचायत की महिलाएं जेएसएलपीएस संस्था में शामिल होकर स्वाबलंबी और आर्थिक रूप से मजबूत हो रही है। आज इनका काम करने के तरीके और सभी जगहों पर इनकी भागीदारी से हम काफी हर्षित हैं। उन्होंने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने की बात कही। वहीं, उप मुखिया रीता देवी ने कहा कि महिलाएं संस्था से जुड़कर आत्मनिर्भर बनी है। अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ कर रही है। वहीं, लीलावती देवी ने कहा कि समूह की महिलाएं अब पूर्ण रूप से जागरूक हो चुकी है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्कीमों का लाभ उठाएं। वहीं, बैंक मैनेजर श्याम सुंदर मुंडा ने संस्था और महिलाओं को बैंक के द्वारा हर संभव सहयोग करने का आश्वासन दिया। तत्पश्चात महिलाओं ने शिक्षा, शराबबंदी, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या पर नुक्कड़ नाटक की। साथ ही, सीएलएफ मैनेजर रेणु देवी द्वारा सालाना लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया। जिसमें करीब तीन करोड़ का लेन देन, कुल आय व्यय और 14 लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा का वित्तीय विवरण दी गयी। साथ ही, टारगेट और उपलब्धियां से अवगत कराया। वहीं, समूह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले महिलाओं को सम्मानित किया गया। जबकि सीआरपी-इपी सुनीता देवी ने कहा कि पहले लेनदेन बैंकों से करते थे। लेकिन संस्था स्वयं बैंक बनकर महिलाओं को सहयोग कर रहा है। इस अवसर पर ओमप्रकाश कुशवाहा, अर्चना देवी कंचन देवी, निशा, रीता, जयंती, कृति कुमारी, गुड़िया देवी, सीता कुमारी, प्रमिला देवी, हेमंती, किरण, सुषमा, गायत्री, जुली, प्रीति मीणा आशा समेत करमा उत्तरी व दक्षिणी, रतवे, छोटकीडूंडी, सारूबेड़ा, सोनडीहा और नावाडीह की दर्जनों महिलाएं शामिल रहे।

झोलाछाप डॉक्टर के चक्कर में महिला की मौत, क्लिनिक बंद कर आरोपी फरार

इंजेक्शन लगाने के बाद बिगड़ी थी तबीयत, 5 मिनट में तोड़ी दम

आजाद सिपाही संवाददाता

चतरा। जिले में झोलाछाप डॉक्टरों द्वारा बेधड़क चलाये जा रहे निजी क्लिनिकों में इलाज के नाम पर गरीबों के पैसे लूटे जा रहे हैं और पैसों के लालच में झोलाछाप डॉक्टर मरीजों की जान ले रहे हैं। ताजा मामला हंटरगंज प्रखंड के वशिष्ठ नगर थाना क्षेत्र का है। जहां तथाकथित झोलाछाप डॉक्टर के गलत इंजेक्शन से एक 48 वर्षीय महिला की मौत हो गयी। परिजनों ने बताया कि इंजेक्शन देने के बाद अचानक तबीयत बिगड़ गयी। इसकी जानकारी होते ही आनन-फानन में परिजन क्लिनिक पहुंचे। जहां महिला मृत अवस्था में मिली। मृतका पनवा देवी 48 वर्ष जोरी मास्टर मुहल्ला गांव निवासी शंकर दास की पत्नी है। परिजनों ने बताया कि पनवा शुक्रवार शाम तेज बुखार का इलाज कराने गांव के ही एक निजी क्लिनिक डॉक्टर गुलाम सरवर के पास गई थी। डॉक्टर ने तुरंत एक इंजेक्शन लगा दिया। जिसके बाद पनवा की हालत खराब हो गयी। 'ज्यादा तबीयत बिगड़ने के 5 मिनट के अंदर ही उसकी मौत हो गयी। इसी बीच झोलाछाप डॉक्टर गुलाम सरवर मामला बिगड़ते देख अपना क्लीनिक छोड़ फरार हो गया। जानकारी मिलते ही वशिष्ठ नगर थाना पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए चतरा सदर अस्पताल भेज दिया। खबर लिखे जाने तक परिजनों के द्वारा थाने में कोई लिखित आवेदन नहीं दी गयी थी।

गोला में महिला संघ की वार्षिक आमसभा

गोला (आजाद सिपाही)। पंचायत सचिवालय चोकाद में शनिवार को कल्याणी महिला आजीविका संकुल का प्राथमिक स्वावलंबी सहकारी सोसोकलां का वार्षिक आमसभा का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक ममता देवी उपस्थित हुई। महिलाओं ने पारंपरिक तरीके से विधायक का भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर जेएसएलपीएस के अधिकारी, स्थानीय जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में महिला स्वंय सहायता समूह के सदस्य मौजूद रहीं। विधायक ने कहा कि आज महिलाएं गांव स्तर से निकलकर आगे बढ़ रही है। महिलाएं अब किसी से काम नहीं है। सरकार भी महिलाओं के लिए कई जन कल्याणकारी योजनाएं चल रही है। उन्होंने इसका लाभ लेने की अपील की। मौके पर मुखिया रूपा देवी, पूर्व मुखिया बजरंग महथा, रीमा देवी, पिंकी देवी सहित कई मौजूद थे।

नि:शुल्क एनीमिया जांच शिविर और जागरूकता अभियान का आयोजन

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। इनर व्हील क्लब रामगढ़ द्वारा नि:शुल्क एनीमिया जांच शिविर और जागरूकता अभियान का आयोजन छावनी परिषद उत्क्रमित मध्य विद्यालय स्टाफ क्वार्टर में किया गया। शिविर में छात्राओं का हीमोग्लोबिन जांच किया गया। साथ ही एनीमिया से बचाव और इसके लक्षणों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित डॉ रंजन कुमार ने बताया कि एनीमिया आज सबसे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है, जिसका समय रहते पता लगाना और उपचार करना आवश्यक है। उन्होंने संतुलित आहार, हरी सब्जियां, आयरन युक्त खाद्य पदार्थ और उचित जीवन शैली को अपनाने पर बल दिया। शिविर में जिन प्रतिभागियों में एनीमिया पाया गया, उन्हें निशुल्क दवाइयां और आवश्यक परामर्श उपलब्ध कराया गया। इसके बाद डॉ रंजन कुमार ने बताया कि कई बार एनीमिया का कारण पेट में कीड़े (वर्म्स) हो सकते हैं। इसलिए जरूरत पड़ने पर एनीमिक किशोरियों को डिवर्मिंग की दवा भी उपलब्ध कराई जायेगी। साथ ही उपस्थित छात्राओं को एनीमिया से बचाव के उपायो पर विस्तृत जानकारी दी गयी। क्लब की ओर से यह संदेश दिया गया कि नियमित जांच, संतुलित भोजन और स्वास्थ्य जागरूकता के माध्यम से एनीमिया जैसी समस्या से प्रभावी रूप से निपटा जा सकता है। क्लब की तरफ से बच्चों को फल भी बांटे गये। मौके पर नमिता श्रॉफ, जनेशा वडेरा, मेघा बगरिया, नीरू साहनी, नवलजीत कौर, हरमीत कौर, विजयलक्ष्मी आयंगर, अंबाली जैन आदि मौजूद थे।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर ओलंपिक संघ से मान्यता प्राप्त खेलों का आयोजन

चतरा (आजाद सिपाही)। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती के अवसर पर जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के समीप हैलीपेड मैदान में शुक्रवार को राष्ट्रीय खेल दिवस पर चतरा जिला ओलम्पिक संघ के तत्वाधान में वॉलीबॉल, कबड्डी, वेटलिफ्टिंग, कुश्ती खेल स्पधोओं का आयोजन हुआ।इस मौके पर बड़ी संख्या में दर्शक जुटे। कार्यक्रम का उद्घाटन चतरा जिला एथलेटिक्स एसोसिएशन के अध्यक्ष सह जिप उपाध्यक्ष ब्रजकिशोर तिवारी, जिला शिक्षा अधीक्षक रामजी कुमार, जिला खेल पदाधिकारी कैलाश राम ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। मौके पर जिला ओलम्पिक संघ के कार्यकारी अध्यक्ष चंद्रेश शर्मा, सचिव राकेश कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष जितेंद्र चंद्रवंशी, जिला वॉलीबॉल संघ के संयुक्त सचिव मो शाहबान, जिला वेटलिफ्टिंग संघ के उपाध्यक्ष अबुल जमाल शादी, कोषाध्यक्ष निशांत जायसवाल, वेटलिफ्टिंग कोच मो कैफी, कबड्डी कोच सुनील कुमार वॉलीबॉल के पूर्व नेशनल प्लेयर अधिवक्ता संत कुमार सिंह समेत अन्य खिलाड़ी मौजूद थे । वॉलीबॉल से छह टीमों ने हिस्सा लिया। नॉक आउट पद्धति से खेले गए मैच में अव्वल मुहल्ला, चतरा और पत्थलगड्डा प्रखंड की नावाडीह टीम फाइनल में पहुंची। कांटे के मुकाबले में नावाडीह की टीम ने अव्वल मुहल्ला को तीन सेट के मैच में 2- 1 से शिकस्त दी। इसी प्रकार वेटलिफ्टिंग में अंडर 60 किलोग्राम कैटेगरी में मो शमी को गोल्ड मेडल मिला। सिल्वर अमित कुमार जयसवाल और ब्रारॉन्ज मेडल मो अबू सईद को मिला। 60 अधिकतम कैटेगरी में मो तहसीम को गोल्ड, आदर्श साहू को सिल्वर और उज्ज्वल कुमार को ब्रॉन्ज मेडल प्राप्त हुआ। कबड्डी में चतरा ए ने फाइनल में चतरा बी को शिकस्त दिया। सभी विजेता और उपविजेता खिलाड़ियों को मेडल देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावे जिले के अन्य प्रखंडों में भी खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया गया।

झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ की बैठक आज

कुजू (आजाद सिपाही)। झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ जगेसर पलानी परगना की केंद्रीय कार्यकारिणी की बैठक 31 अगस्त रविवार को ओरला पंचायत सचिवालय में आयोजित की गयी है। बैठक में संघ के केंद्रीय पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, आमंत्रित सदस्य, केन्द्रीय उप समितियों के अध्यक्ष व संयोजक, सभी सदस्य गण, ग्राम समितियों के अध्यक्ष, सचिव व कोषाध्यक्ष को शामिल होने का आग्रह किया गया है। उक्त आशय की जानकारी संघ के केंद्रीय कोषाध्यक्ष शंकर प्रसाद ने दी। उन्होंने सभी सदस्यों को बैठक में ससमय उपस्थित होने की बात कही है।

हंटरगंज व्यापारी संघ की हुई बैठक

हंटरगंज / चतरा (आजाद सिपाही)। व्यापारी संघ की बैठक शनिवार को हंटरगंज स्थित डाक बंगला में मोहम्मद लड़न की अध्यक्षता में हुई । जबकि संचालन सोनू कुमार ने किया। बैठक में हंटरगंज व्यापार संघ (जूता चप्पल, कपड़ा, श्रृंगार, मोबाइल दुकान, इलेक्ट्रॉनिक और फर्नीचर) के सभी सदस्याओं और पदाधिकारियों ने प्रत्येक माह की 30 तारीख को अपने अपने प्रतिष्ठान बंद रखने का निर्णय लिया। बैठक में सभी व्यापारियों ने सर्वसम्मति से राजेंद्र प्रसाद को अध्यक्ष, चंदन सिंह को उपाध्यक्ष, राहुल कुमार को सचिव, मोहम्मद साजिद को उपसचिव, सोनू कुमार को कोषाध्यक्ष, दिलीप कुमार को संयोजक के पद पर चयन किया। बैठक केदली कला, गोसाईंडीह, हंटरगंज, डाहा, डुमरी से रिक्की सिंह, रोहित कुमार, मो हामिद, कमलजीत सिंह, मंटू सिंह, मो० दानिश, टुनटुन केशरी, सरवन कुमार साहू, दिनेश गुप्ता, अमीर महतो, सुदर्शन महतो सहित कई व्यापारियों ने भाग लिया।

आहार और जरूरी दिनचर्या

आहार किसी भी रोग की चिकित्सा में औषधि जितनी ही भूमिका निभाता है। अक्सर हम यह मान लेते हैं कि दवा ही सब कुछ है, जबकि आयुर्वेद स्पष्ट कहता है कि आहार और जीवनचर्या को बदले बिना केवल औषधि से स्थायी स्वास्थ्य संभव नहीं। अभी का समय संक्रमण और बुखार का है। लेकिन यह समझना जरूरी है कि आयुर्वेद का ज्वर केवल तापमान बढ़ने तक सीमित नहीं है। यह पूरे शरीर की असंतुलित अवस्था है जिसमें अग्नि मंद पड़ती है, दोषों की गति रुकती है और मन भी प्रभावित होता है। इसीलिए इसे केवल 'फीवर' कहना अपूर्ण है। बुखार के पहले दिन, यदि शरीर अनुमति दे तो केवल गुनगुना पानी लेना चाहिए। यह शरीर को विषहर और शुद्धि की ओर ले जाता है। दूसरे दिन से हल्के, सुपाच्य आहार की शुरूआत करें। दालों का यूष (सूप) यहां सर्वोत्तम है - जैसे मूंग, मसूर, कुलथि या मोठ। यह शरीर को ताकत भी देता है और पचने में भी सहज रहता है। सब्ज़ियों में भी हल्की और कड़वी प्रवृत्ति की सब्जियां लाभकारी मानी जाती हैं। चौलाई, बथुआ, परवल, छोटी मूली, करैला, बैंगन जैसी चीजें रुचि अनुसार दी जा सकती हैं। इनसे शरीर को आवश्यक पोषण भी मिलता है और रोगजनक कफ-पित्त की वृद्धि भी नहीं होती। अनाज में चावल कम से कम एक वर्ष पुराना होना चाहिए। नये चावल भारी और ज्वर में हानिकारक माने गये हैं। गेहूं का प्रयोग भी तभी करना चाहिए, जब अनिवार्य हो, वह भी कम से कम दो साल पुराना। रोटी बुखार में टालना ही उत्तम है। ध्यान रहे कि दूध और दूध से बने पदार्थ, मिठाइयां या मधुर रस प्रधान आहार इस समय वर्जित हैं। यह आहार नियम केवल ज्वर में ही नहीं, बल्कि किसी भी ऐसी अवस्था में जहां शरीर में सूजन या इन्फ़्लैमेशन हो, जैसे उपद्ध बढ़ा हुआ हो, वहां भी समान रूप से लाभकारी है। आयुर्वेद का यह मत है कि जब तक अग्नि को सही दिशा नहीं दी जाती, रोग की जड़ नहीं मिटती। इसीलिए रोगी को क्या खिलाना है और क्या नहीं, यह उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना औषध देना। सही आहार शरीर को न केवल रोग से बाहर निकालता है, बल्कि रोग के बाद की दुर्बलता को भी दूर करता है।

आयुर्वेद का यह मत है कि जब तक अग्नि को सही दिशा नहीं दी जाती, रोग की जड़ नहीं मिटती। इसीलिए रोगी को क्या खिलाना है और क्या नहीं, यह उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना औषध देना।

अभिमत
आजाद सिपाही

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत ने अपने सबसे छोटे नागरिकों को अपनी विकास यात्रा के केंद्र में रखा है। प्रधानमंत्री ने न केवल विश्वविद्यालयों और डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश करके, अपितु बच्चे के जीवन की पहली कक्षाः आंगनबाड़ी के अतिशय महत्व को पहचानते हुए हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को नये सिरे से परिभाषित किया है। आज के भारत में, खेल अब सिर्फ़ मनोरंजन भर नहीं, अपितु-नीति है और इसके परिणाम बिल्कुल स्पष्ट और विश्वसनीय हैं।

पोषण भी पढ़ाई भी: भारत के भविष्य के लिए खेल-आधारित शिक्षा

अन्नपूर्णा देवी

यदि हमें विकसित भारत का निर्माण करना है, तो हमें शुरुआत - अपने सबसे छोटे नागरिकों की क्षमता के विकास से करनी होगी, जहां से जीवन का आगाज होता है। आंगनवाड़ी केंद्र में बच्चों की खिलखिलाती हंसी में उनके द्वारा गायी जानेवाली कविताओं में और उनके द्वारा बनाये जाने वाले ब्लॉक में हमारे राष्ट्र के भविष्य का सामर्थ्य आकार लेता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत ने अपने सबसे छोटे नागरिकों को अपनी विकास यात्रा के केंद्र में रखा है। प्रधानमंत्री ने न केवल विश्वविद्यालयों और डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश करके, अपितु बच्चे के जीवन की पहली कक्षाः आंगनबाड़ी के अतिशय महत्व को पहचानते हुए हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को नये सिरे से परिभाषित किया है।

आज के भारत में, खेल अब सिर्फ़ मनोरंजन भर नहीं, अपितु-नीति है और इसके परिणाम बिल्कुल स्पष्ट और विश्वसनीय हैं। पिछले एक दशक में, मोदी सरकार ने प्रारंभिक बाल्यावस्था के विकास के प्रति अपने दृष्टिकोण को मूलभूत रूप से पुनर्परिभाषित किया है।

पोषण भी पढ़ाई भी पहल के तहत देश भर के आंगनवाड़ी केंद्रों को समग्र प्रारंभिक शिक्षा के लिए पोषण स्थलों में बदला जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनइपी) 2020 निर्णायक मोड़ साबित हुई, जिसमें यह स्वीकार किया गया कि मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास छह साल की उम्र से पहले ही हो जाता है। यदि हम स्मार्ट, स्वस्थ और अधिक उपयोगी आबादी चाहते हैं, तो हमें वहां निवेश करना होगा, जहां इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है-जीवन के शुरुआती छह वर्षों में।

वैज्ञानिक प्रमाण इस बदलाव का समर्थन करते हैं। सीएमसी वेल्लोर के क्लिनिकल महामारी विज्ञान विभाग द्वारा किये गये एक अध्ययन में पाया गया कि जिन बच्चों को 18 से 24 महीने तक व्यवस्थित प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (इसीसीइ) मिली, उनके आइक्यू में पांच साल की उम्र तक 19 अंक तक और नौ साल की उम्र तक तो 5 से 9 अंक तक की उल्लेखनीय और स्थायी वृद्धि देखी गयी। विकासशील भारत के लिए ये वृद्धि बेहद महत्वपूर्ण है।

भारत के ये निष्कर्ष वैश्विक शोध के अनुरूप हैं। अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों से पता चलता है कि पांच साल की उम्र से पहले गुणवत्तापूर्ण इसीसीइ कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बच्चों में उच्च आइक्यू, बेहतर सामाजिक कौशल और बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन की संभावना 67 प्रतिशत अधिक होती है। जैसा कि नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ जेम्स हेकमैन की प्रसिद्ध उक्ति है, जितनी जल्दी शुरुआत,उतने बेहतर परिणाम और उतने ही कुशल रिटर्न उनके शोध में अनुमान व्यक्त किया गया है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था में निवेश से 13-18 प्रतिशत तक रिटर्न मिलता है-जो शिक्षा या नौकरी के प्रशिक्षण के किसी भी अन्य चरण से अधिक है।

इसीसीइ के आर्थिक और सामाजिक दोनों ही प्रकार के महत्व को समझते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने पोषण भी पढ़ाई भी नामक एक पहल शुरू की है, जिसने आंगनवाड़ी केंद्रों को जीवंत प्रारंभिक शिक्षा केंद्रों में तब्दील कर दिया है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को पहली बार स्थानीय और स्वदेशी सामग्रियों का उपयोग कर गतिविधि-आधारित और खेल-उन्मुख दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यवस्थित रूप से इसीसीइ में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

शिक्षण-अधिगम सामग्री के लिए बजट आवंटन में भी पर्याप्त वृद्धि की गयी है और मासिक इसीसीइ दिवसों को संस्थागत रूप दिया गया है। आज आंगनवाड़ी केंद्र केवल पोषण का स्थान नहीं है। यह प्रत्येक बच्चे की पहली पाठशाला है, जो जीवन के सबसे महत्वपूर्ण वर्षों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और समग्र विकास का पोषण करती है।

मंत्रालय ने इस परिवर्तन को दिशा देने के लिए 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रम-आधारशिला की शुरुआत की है।

आधारशिला बच्चों के केवल बौद्धिक विकास पर ही नहीं, बल्कि भावनात्मक, शारीरिक और सामाजिक कल्याण पर भी जोर देते हुए समग्र विकास पर केंद्रित है। यह खेल के माध्यम से सीखने की व्यवस्थित प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है, जिससे बच्चों को सहयोगपूर्ण वातावरण में बढ़ने और फलने-फूलने का अवसर मिलता है।

बच्चे खेलने के प्रति सहज रूप से आकर्षित होते हैं - अपनी दुनिया के कोने-कोने को खोज और आनंद के स्थान में तब्दील कर देते हैं। सही वातावरण के साथ यह प्रवृत्ति आजीवन सीखने की नींव बन जाती है।

पोषण भी पढाई भी सुरक्षित, व्यवस्थित और प्रेरक वातावरण प्रदान करके इस भावना को पोषित करती है जहां बच्चे निर्देशित खेल और शिक्षा के माध्यम से फल-फूल सकते हैं।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (इसीसीइ) हमारे देश के भविष्य को आकार देने में बुनियादी भूमिका निभाती है। पोषण भी पढाई भी पहल के तहत देश भर के आंगनवाड़ी केंद्रों को समग्र प्रारंभिक शिक्षा के लिए पोषण स्थलों में बदला जा रहा है।

व्यवस्थित आधारशिला की 5+1 साप्ताहिक योजना यह सुनिश्चित करती है कि दिन की शुरुआत 30 मिनट के उन्मुक्त खेल से हो, उसके बाद भाषा, रचनात्मकता, मोटर स्किल और सामाजिक संपर्क को बढ़ाने वाली व्यवस्थित गतिविधियां हों। दोपहर के पौष्टिक भोजन और आराम के बाद दिन का समापन बाहरी खेल और बातचीत के साथ होता है, जो मूल्यों को सुदृढ़ करता है और भावनात्मक संबंध बनाता है।

व्यवस्थित और निर्बाध खेल के प्रति यह संतुलित दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। खास कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनइपी) 2020 के आलोक में, जिसने औपचारिक स्कूल प्रवेश की आयु को छह वर्ष कर दिया है। व्यवस्थित इसीसीइ यह सुनिश्चित करती है कि बच्चे भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक रूप से स्कूल के लिए तैयार हों।

देश भर के अभिभावकों का बढ़ता विश्वास वास्तव में उत्साहजनक है। जो परिवार पहले कभी आंगनवाड़ियों को केवल पोषण केंद्र मानते थे, अब उन्हें अपने बच्चे की शिक्षा की यात्रा में पहला कदम मानते हैं।

भारत में हर बच्चा जन्म से ही मजबूत शुरुआत का हकदार है। जन्म से तीन साल तक की आयु वर्ग के बुनियादी महत्व को समझते हुए मंत्रालय ने प्रारंभिक बाल्यावस्था प्रोत्साहन के लिए राष्ट्रीय ढांचा - नवचेतना की भी शुरुआत की है। यह पहल माता-पिता और देखरेखकर्ताओं को बच्चों के विकास के लिए घर पर ही सरल, खेल-आधारित, आयु के उपयुक्त गतिविधियों के माध्यम से सशक्त बनाती है।

माता-पिता की भागीदारी बच्चे के विकास की कुंजी है। जहां एक ओर उच्च आय वाले परिवार खिलौनों और किताबों में निवेश कर सकते हैं, वहीं सरकार की भूमिका कम आय वाले परिवारों के लिए समान अवसर प्रदान करने की है। नवचेतना और पोषण भी पढ़ाई भी के माध्यम से हम भारत के कोने-कोने में हर बच्चे को शुरू से ही आवश्यक प्रोत्साहन, देखभाल और पोषण मिलना सुनिश्चित करते हुए इस अंतर को पाट रहे हैं। यदि भारत को सही मायनों में विकसित बनना है, तो हमारी युवा पीढ़ी को जीवन की सही शुरुआत के साथ सशक्त बनाना होगा। खेल कोई विलासिता नहीं है, यह सीखने का आधार है।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि भारत के प्रत्येक बच्चे को सीखने, बढ़ने और फलने-फूलने का अवसर मिले, क्योंकि राष्ट्र निर्माण की शुरुआत उसके सबसे छोटे नागरिकों के पोषण से होती है।

(लेखिका : केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री, भारत सरकार हैं।)

कोल्हान की खबरें

केरल समाजम मॉडल स्कूल का वार्षिक महोत्सव

विद्या भारती चिन्मय विद्यालय ओवरऑल चैंपियन और हिल टॉप स्कूल उपविजेता

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। केरल समाजम मॉडल स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक अंतर विद्यालय महोत्सव KSMS FIESTA 2K25 का भव्य आयोजन किया गया। शनिवार को ट्रस्टी टीके सुकुमारन, प्राचार्या नंदिनी शुक्ला एवं अन्य पदाधिकारियों ने महोत्सव का उद्घाटन किया। दो दिवसीय वार्षिक महोत्सव में 18 विद्यालयों की भागीदारी वाली 12 प्रतियोगिताओं में विद्या भारती चिन्मय विद्यालय ने ओवरऑल चैंपियनशिप अपने नाम किया और हिल टॉप स्कूल उपविजेता बने।इस अवसर हिल टॉप,चिन्मय विद्यालय, जुस्को साउथ पार्क, जेएच तारापुर, गुलमोहर, केपीएस गमहरिया एवं एडीएल सनशाइन स्कूल विजयी रहे। महोत्सव की सफलता के लिए योगदान देने वाले शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों की सराहना की गयी। इस अवसर पर वरिष्ठ गतिविधि प्रभारी शालिनी कुमार और कनिष्ठ प्रभारी पायल रॉय को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

तमोलिया से 62 मजदूर मुक्त, तीन गिरफ्तार

चांडिल (आजाद सिपाही)। सरायकेला-खरसावां जिले के कपाली ओपी पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है।पुलिस ने कार्रवाई करते हुए तमोलिया में जबरन काम कराया जा रहा 62 मजदूरों को बंधन मुक्त कराया और मौके पर जनक कुमार, सुरेंद्र कुमार और वीरेंद्र कुमार को गिरफ्तार किया गया। पुलिस के अनुसार ये आरोपी लड़कों को विनमेकर आयुर्वेद प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में काम करने के लिए मजबूर कर रहे थे। गुप्त सूचना पर छापेमारी में पुलिस ने तीन अलग-अलग मकानों से सभी लड़कों को मुक्त कराया और कई महत्वपूर्ण दस्तावेज भी बरामद की। चांडिल एसडीपीओ अरविंद कुमार बिनहा के नेतृत्व में कार्रवाई के दौरान कपाली ओपी प्रभारी धीरंजन कुमार, अनीता सोरेन, हसनैन अंसारी, विभाष कुमार चौधरी, विपुल कुमार तिवारी व अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे। फिलहाल पुलिस फरार आरोपियों की तलाश में जुट गयी है।

टाटा स्टील और समूह कंपनियों ने खेल दिवस के साथ सर दोराबजी टाटा की जयंती उत्साहपूर्वक मनायी

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। टाटा स्टील ने अपनी सहयोगी कंपनियों में टाटा स्टील टेक्निकल सर्विसेज लिमिटेड और टाटा स्टील सपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड के साथ मिलकर राष्ट्रीय खेल दिवस और सर दोराबजी टाटा की जयंती खेलकूद गतिविधियों के साथ उत्साहपूर्वक मनाया। टाटा स्टील द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रतियोगिता कराटे चैंपियनशिप और कम्युनिटी चिल्ड्रन एथलेटिक्स मीट में बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। इससे कंपनी की जमीनी स्तर पर खेलों को प्रोत्साहित करने की परंपरा और मजबूत हुआ। राष्ट्रीय खेल दिवस पर टाटा स्टील टेक्निकल सर्विसेज लिमिटेड और टाटा स्टील सपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड द्वारा जमशेदपुर,कालिंगानगर और वेस्ट बोकारो में वॉकाथॉन का आयोजन किया गया। महिला और पुरुष दोनों वर्गों में कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

आयोजन का उद्देश्य फिटनेस, स्वास्थ्य और आपसी सौहार्द्र को बढ़ावा देना था। जमशेदपुर में वॉकाथॉन की शुरूआत टाटा स्टील सपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड में मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीपक कामथ ने हरी झंडी दिखाकर की। मौके पर उन्होंने कर्मचारियों को खेल और शारीरिक गतिविधियों को जीवनशैली का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया।

हॉर्टिकल्चरल सोसाइटी ऑफ जमशेदपुर की 9वीं वार्षिक आमसभा में समिति का गठन

सुमिता अध्यक्ष और डॉ अनुराधा महासचिव बनीं

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। बिष्टुपुर स्थित एसएनटीआई ऑडिटोरियम मे हॉर्टिकल्चरल सोसाइटी ऑफ जमशेदपुर की 9वीं वार्षिक आमसभा का आयोजन किया गया। शनिवार आमसभा में बड़ी संख्या में समाज के सदस्यगण विशिष्ट अतिथि और नये सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सोसाइटी की अध्यक्ष सुमिता नूपुर के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने चेयरपर्सन रुचि नरेंद्रन, टाटा स्टील लिमिटेड के वाइस प्रेसिडेंट (कॉर्पोरेट सर्विसेज) सह नये संरक्षक डीबी सुंदरा रामम और सभी उपस्थित सदस्यों का अभिनंदन किया।मौके पर श्रीमती नूपुर ने बीते वर्ष की उपलब्धियों को साझा किया। इनमें 34वां वार्षिक फ्लावर शो और 41वां रोज कन्वेंशन सह रोज शो शामिल रही। इसके अलावा रोज गार्डन का उद्घाटन, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट थीम पर आधारित मंभावन गार्डन का निर्माण, मालियों के लिए निःशुल्क कार्यशालाएं और एचएसजी के आधिकारिक वेबसाइट का शुभारंभ प्रमुख उपलब्धियां शामिल है।

महासचिव डॉ अनुराधा मोहापात्रा ने सचिवीय प्रतिवेदन प्रस्तुत की। उन्होंने कहा फ्लावर शो में 85,000 से अधिक दर्शकों ने हिस्सा लिया। गार्डन ऑफ द ईयर कॉन्टेस्ट को भी शहरवासियों का शानदार प्रतिसाद मिला। इस अवसर पर संजय मुखर्जी द्वारा विकसित एक नयी रोज प्रजाति रतन टाटा को समर्पित की गयी। कोषाध्यक्ष बिपिन कुमार ने ऑडिटेड रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। चेयरपर्सन रुचि नरेंद्रन ने सोसाइटी की उपलब्धियों की सराहना करते हुए आगामी प्रमुख आयोजनों की घोषणा की। उन्होंने कहा कि 35वां वार्षिक फ्लावर शो 28 दिसंबर से 1 जनवरी 2026 तक किया जायेगा। गार्डन ऑफ द ईयर कॉन्टेस्ट 10 और 11 जनवरी 2026 होगा। इस अवसर पर नये कार्यकारी समिति (2025-2028) का गठन किया गया। नये कार्यकारी समिति में अध्यक्ष सुमिता नूपुर, उपाध्यक्ष प्रणय सिन्हा, कर्नल अर्नेस्ट पॉल, अश्वनी श्रीवास्तव, महासचिव डॉ अनुराधा मोहापात्रा, संयुक्त सचिव जयंता घोष और कृष्णेंदु शॉ, कोषाध्यक्ष बिपिन कुमार, सहायक कोषाध्यक्ष जगदीप सिंह सैनी, संयोजक मनोज कुमार और ज्योति हांसदा को सर्व सहमति से पदभार सौपा गया। संयुक्त सचिव अश्वनी श्रीवास्तव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद वार्षिक आमसभा का समापन किया गया।

किताडीह ब्वॉयज क्लब का गणेश उत्सव

लड्डुओं के लिए लगी ₹70 हजार की बोली

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। जमशेदपुर में इन दिनों गणेश उत्सव की धूम है। इस बीच किताडीह ब्वॉयज क्लब के गणेशोत्सव की अनोखी परंपरा की खूब चर्चा हो रही है। यहां वर्ष 1983 से यहां गणेशोत्सव का आयोजन होता आ रहा है। इसके विसर्जन की खासियत यह होती है कि यहां गणपति के लड्डू की बोली लगायी जाती है। मान्यता के अनुसार जिसकी मन्नत पूरी होती है, वे इस बोली में हिस्सा लेते हैं। इस वर्ष 5 किलो लड्डू के लिए 70 हजार की बोली लगी, जिसे जोगिंदर राव के परिवार ने खरीदा। विगत वर्ष यहां 5 किलो लड्डू के लिए 55000 रुपये की बोली लगी थी। लड्डुओं के लिए 500 रुपये से बोली शुरू होती है। बोली लगा कर लड्डू खरीदने के बाद जोगिंदर राव का परिवार काफी खुश नजर आया। उन्होंने इसे गणपति की कृपा बताया। उन्होंने बताया कि हर साल बोली में शामिल होते हैं। इस साल मन बना लिया था कि चाहे जितनी कीमत चुकानी पड़े, गणपति का लड्डू जरूर खरीदेंगे। देर शाम धूमधाम से गणपति का विसर्जन किया गया।

ब्राउन शुगर के साथ तीन तस्कर गिरफ्तार

आदित्यपुर। सरायकेला खरसावां जिले के एसपी मुकेश कुमार लुनायत के निर्देश पर एसडीपीओ समीर कुमार सवैया के नेतृत्व में आरआईटी प्रभारी संजय कुमार सिंह व पुलिस टीम को बड़ी सफलता हाथ लगी है।शनिवार को पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर रोड नंबर-32 सूर्य मंदिर के पास सरकारी शौचालय के समीप छापामारी के दौरान ब्राउन शुगर के अवैध कारोबार में लिप्त तीन तस्करों को गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार आरोपियों में संजय गोस्वामी,सिरिल जोजो और रतन नाग उर्फ रतन लोहार शामिल है। जांच में आरोपियों के पास से 110 पुड़िया ब्राउन शुगर बरामद की गई।पुलिस के अनुसार जिले में ब्राउन शुगर के अवैध कारोबार पर लगाम कसने के लिए यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापामारी की जा रही है। फिलहाल सभी आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

डीसी ने किया नगर उंटारी में अनुसूचित जाति छात्रावास और प्रखंड भवनों का निरीक्षण

किराया न मिलने पर दुकान आवंटन रद्द, पालन सुनिश्चित करने के आदेश

जर्जर भवन न हटाने पर 48 घंटे में जवाब मांगा, गंभीर नाराजगी जतायी

आजाद सिपाही संवाददाता

बंशीधर नगर। शनिवार को क्षेत्र भ्रमण के दौरान उपायुक्त-सह-जिला दंडाधिकारी दिनेश कुमार यादव ने नगर ऊंटरी स्थित राजकीय कृत प्लस टू उच्च विद्यालय के प्रांगण में स्थित अनुसूचित जाति छात्रावास का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान भवन की स्थिति कुछ भागों में जर्जर पायी गयी, जिसे तत्काल मरम्मत कराने का निर्देश उपायुक्त ने भवन प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता को दिया गया।

मौके पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक और शिक्षकों ने उपायुक्त को बताया कि विद्यालय के मुख्य द्वार के आसपास विद्यालय द्वारा बनाई गयी दुकानों का किराया नियमित रूप से नहीं मिल रहा है। इस पर उपायुक्त ने निर्देश दिया कि सभी दुकानों का किराया बाजार दर के अनुसार प्रत्येक माह के अंत तक विद्यालय को दिया जाये। जो लोग किराया नियमित रूप से नहीं देंगे, उनके दुकान आवंटन को रद्द कर दुकान खाली कर दिया जायेगा। अनुमंडल पदाधिकारी श्री बंशीधर नगर को इसका पालन सुनिश्चित कराने का जिम्मा दिया गया।

उपायुक्त श्री यादव ने हॉस्टल की मरम्मत कार्य की देखरेख करने हेतु जिला कल्याण पदाधिकारी धीरज प्रकाश और भवन निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता प्रेमलाल सिंह को निर्देशित किया।

साथ ही, प्रखंड कार्यालय नगर ऊंटारी के बाहर पुराना जर्जर भवन पूर्व में दिये गये निर्देशों के बावजूद हटाया नहीं गया। इसके लिए प्रखंड विकास पदाधिकारी नगर ऊंटरी से 48 घंटे के भीतर स्पष्टीकरण मांगा गया। समय पर कार्रवाई नहीं होने पर उपायुक्त ने अपनी गंभीर नाराजगी व्यक्त की।

इस अवसर पर अनुमंडल पदाधिकारी प्रभाकर मिर्धा, अंचल पदाधिकारी विकास कुमार सिंह, बीडीओ रोशन कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

हर माह की 15 तारीख को अंचल और 30 को थाना दिवस का होगा आयोजन: डीसी

गढ़वा (आजाद सिपाही)। जिले में भूमि विवाद को लेकर प्रायः उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक के पास बार-बार शिकायत प्राप्त होते हैं। भूमि से संबंधित अधिकांश मामले का समाधान अंचल एवं थाना स्तर से समाप्त हो जायेगा। भूमि विवाद से संबंधित विभिन्न शिकायतों के अविलंब समाधान हेतु प्रत्येक माह के 15 तारीख (अवकाश की स्थिति में 14 तारीख) को पूर्वाह्न 11:00 बजे से संबंधित अंचल परिसर में संबंधित अंचल अधिकारी एवं थाना प्रभारी अंचल दिवस का आयोजन करेंगे। इसी प्रकार प्रत्येक माह के 30 तारीख को (अवकाश की स्थिति में 29 तारीख) को पूर्वाह्न 11:00 बजे थाना परिसर में संबंधित अंचल अधिकारी एवं थाना प्रभारी थाना दिवस का आयोजन करेंगे। उपायुक्त ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में यह भी निर्देश दिया गया कि सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचल अधिकारी प्रत्येक सप्ताह के मंगलवार एवं शुक्रवार को जन सुनवाई करना सुनिश्चित करेंगे।

उपायुक्त ने प्लस टू उच्च विद्यालय भवनाथपुर के प्रांगण में अवस्थित छात्रावास की जांच की

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। गढ़वा उपायुक्त दिनेश यादव ने शनिवार को भवनाथपुर पहुंचकर प्लस टू उच्च विद्यालय के प्रांगण में अवस्थित छात्रावास की जांच की। इस दौरान छात्रावास में अंदर से ताला जड़ा हुआ पाया। ताला तोड़ने का प्रयास किया गया लेकिन ताला नहीं टूटा। उपस्थित बीडीओ नंदजी राम ने उपायुक्त को बताया कि छात्रावास मरम्मती हेतु बिना टेंडर निकले और बिना कार्यादेश के ही संवेदक द्वारा छात्रावास में काम लगाये जाने से नाराज झामुमो नेताओं ने ताला जड़ दिया था, इस पर जेएमएम प्रखंड अध्यक्ष अरविंद यादव ने झामुमो नेताओं द्वारा छात्रावास में ताला जड़ने से साफ इंकार कर दिया। वहीं उपायुक्त दिनेश कुमार यादव ने कहा कि छात्रावास में अंदर से ताला लगा होने के कारण निरीक्षण नहीं हो सकी। जबकि प्लस टू उच्च विद्यालय झगड़ाखांड के एचएम वरुण सिंह ने उपायुक्त से कहा कि मेरे विद्यालय की जमीन को कुछ लोगों द्वारा अतिक्रमण कर जोत कोड किया जा रहा है, इस पर उपायुक्त ने मौजूद सीओ शंभू राम को मामले की जांच कर विद्यालय की जमीन को अतिक्रमणमुक्त कराने का निर्देश दिया। वहीं उपायुक्त ने स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का भी निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. दिनेश कुमार से अस्पताल कर्मियों, मरीज वार्ड और लैब की जानकारी ली। उन्होंने चिकित्सा प्रभारी को अस्पताल से संबंधित कई आवश्यक दिशा निर्देश दिया। मौके पर श्रीबंशीधर नगर एसडीओ प्रभाकर मिर्धा, सीआई इंतिखाब आलम, कार्यपालक अभियंता भवन निर्माण विभाग संतोष कुमार, विकाश कुमार, सिद्धार्थ कुमार, कश्यप कुमार, मनोज यादव, दीपक वर्मा सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

सिविल सर्जन और एसडीओ ने अवैध रूप से संचालित अरविंद मेडिकल्स क्लिनिक और हॉस्पिटल को किया सील

आजाद सिपाही संवाददाता

बंशीधर नगर। सिविल सर्जन डॉ जॉन एफ केनेडी एवं एसडीओ प्रभाकर मिर्धा ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुये कथित अवैध रूप से संचालित अरविंद मेडिकल्स क्लिनिक व हॉस्पिटल को सील कर दिया है।

जानकारी के मुताबिक सीएस एवं एसडीओ ने अरविंद मेडिकल्स क्लिनिक व हॉस्पिटल का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान क्लिनिक के संचालन में कई अनियमितताएं पायी गयीं, जिसके बाद प्रशासन ने तत्काल प्रभाव से इसे सील कर दिया।

अधिकारियों ने बताया कि उक्त क्लिनिक बिना वैध लाईसेंस और आवश्यक दस्तावेजों के संचालित किया जा रहा था, जो नियमों का खुला उल्लंघन है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जिले में अवैध रूप से चल रहे निजी अस्पतालों और क्लिनिक के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

इस मौके पर अकाउंट मैनेजर राजीव रंजन, बिपेश राज तमांग, कौशलेश कुमार समेत कई अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी मौजूद थे।

लवाही कलां विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिताओं में बच्चों ने दिखाया दमखम

खेलों से होता है सर्वांगीण विकास : प्राचार्य

आजाद सिपाहीसंवाददाता

डंडई। प्रखंड अंतर्गत उत्क्रमित प्लस टू उच्च विद्यालय लवाही कला में शुक्रवार को राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन किया गया। मौके पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने गांव में प्रभात फेरी निकालकर 'खेल दिवस आज है, खेलने-कूदने का लो संकल्प, स्वस्थ रहने का यही विकल्प' जैसे नारे लगाए और लोगों को खेलों के महत्व का संदेश दिया। प्रभात फेरी के उपरांत विद्यालय परिसर में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के चित्र पर शिक्षकों और बच्चों ने पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इसके बाद छात्रों और शिक्षकों ने उनके जीवन और उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उन्हें भारतीय खेल जगत का गौरव बताया। तत्पश्चात विद्यालय प्रांगण में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें बोरा दौड़, चम्मच-गोली दौड़, 50 मीटर दौड़, कबड्डी और खो-खो जैसे खेल शामिल थे। वहीं प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को विद्यालय के प्राचार्य अमिताभ कुमार तथा शिक्षकों ने पुरस्कृत कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर प्राचार्य ने कहा कि खेल जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यह केवल शारीरिक विकास ही नहीं करता, बल्कि अनुशासन, आपसी सहयोग और टीम भावना को भी मजबूत बनाता है। छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना हम सभी की जिम्मेदारी है। इस अवसर पर विद्यालय अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता, शिक्षक अरशद अंसारी, मलय कुमार सिंह, शशांक मिश्र, राकेश कुमार, बलराम सहित कई शिक्षक एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

मेराल हाइस्कूल के शौचालय में लगेगी सेनेटरी नैपकिन डिस्पोजल मशीन भस्मक : मुखिया

मेराल (आजाद सिपाही)। प्रखंड मुख्यालय स्थित प्लस टू उच्च विद्यालय में छात्राओं की सुविधा के लिए शौचालय में लगाने के लिए सेनेटरी नैपकिन डिस्पोजल मशीन भस्मक स्वास्थ्य विभाग द्वारा उपलब्ध कराया गया। मुखिया राम सागर महतो ने बताया कि मशीन का शुभारंभ पंचायत सचिव राधा कुमारी, पंचायती राज एसोसिएट प्रियंका कुमारी द्वारा शनिवार को किया गया। मौके पर प्रियंका कुमारी द्वारा बताया गया कि किशोरियों की सुविधा के लिए यह मशीन स्वास्थ्य विभाग द्वारा उपलब्ध कराया गया है। उस मौके पर प्रधानाध्यापक लालता पटेल, संजय कुशवाहा, पंचायत स्वयंसेवक मसूद आलम आदि मौजूद थे। प्रधानाचार्य ने कहा कि मशीन का अधिष्ठापन बालिकाओं के शौचालय में किया जायेगा।

गुजरात में मृत विनोद भुइयां का शव पहुंचा बनसानी

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र अंतर्गत बनसानी पंचायत के माईधिया निवासी विनोद भुइयां पिता स्व. बिफन भुइयां 48 वर्ष की मौत बुखार से गुजरात के मुंद्रा स्थित छायापुरी में गुरुवार को हो गया। मृतक विनोद भुइयां अपनी पत्नी एवं दोनों बेटो के साथ पिछले दो वर्षों से गुजरात के छायापुरी में रहकर काम करता था। शनिवार के अहले सुबह मृतक का शव एंबुलेंस से बनसानी पहुंचा। घटना को लेकर मृतक के पुत्र दिनेश भुइया ने बताया कि मेरे पिता बिनोद भुइयां को बुखार आने पर उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां ईलाज के दौरान उनकी मौत हो गयी। वहीं मृतक की पत्नी जीरा देवी ने बताया कि समूह से ऋण लिए थे, ऋण के कर्ज से परिवार दबा हुआ था। ऋण चुकाने हेतु पूरा परिवार बाहर मजदूरी करने गये थे। उधर मृतक का शव आने की खबर मिलते ही प्रमुख पति शैलेंद्र पाठक, राजेश्वर पासवान, माणिक पासवान, उप मुखिया अवधेश यादव, निरंजन कुमार पाठक राजकुमार यादव, उदय यादव, मुन्ना यादव, धर्मजीत यादव, अवधेश यादव ने शोक व्यक्त करते हुए मृतक के घर पहुंचकर शोक संतप्त परिजनों को ढांढस बंधाया।

धूमधाम से मनायी गयी बाबा गणिनाथ गोविंद जयंती

कांडी (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत शोणभद्र आदर्श इंटर महाविद्यालय के प्रांगण में शनिवार को बाबा गणिनाथ गोविंद जयंती समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रखंड के साथ-साथ आसपास के इलाकों से भी मधेशिया हलवाई समाज के लोग बड़ी संख्या में एकत्र हुए। कार्यक्रम की शुरूआत संत गणिनाथ की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर पूजा-अर्चना से हुई। इसके बाद सैकड़ों श्रद्धालुओं ने बाजे-गाजे, बैनर और झंडे के साथ जयकारा लगाते हुए शोभायात्रा निकाली, जो कांडी बाजार होते हुए विभिन्न चौक-चौराहों का भ्रमण कर पुनः पूजा स्थल पर पहुंची। मौके पर कांडी मधेशिया हलवाई समाज कमेटी की ओर से बाहर से आये अतिथियों का अंगवस्त्र और माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। समारोह में अशोक प्रसाद, राजेश प्रसाद, रामनाथ प्रसाद, सोहर प्रसाद, बाबूलाल प्रसाद, नंदू प्रसाद, रामलखन प्रसाद, गरीब साह, राजाराम साह, पंकज कुमार, विजय कुमार, संतोष कुमार, सचिन कुमार समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

डंडई थाना दिवस पर सुनी गयी ग्रामीणों की समस्याएं

डंडई (आजाद सिपाही)। शुक्रवार को थाना परिसर में आयोजित थाना दिवस कार्यक्रम में अंचलाधिकारी जयशंकर पाठक और थाना प्रभारी अनिमेष शांतिकारी की मौजूदगी में ग्रामीणों की समस्याओं को सुना गया। भूमि विवाद से जुड़े कुल 07 मामलों पर दोनों पक्षों की सहमति से कार्रवाई की गई, वहीं गंभीर मामलों को लोक अदालत भेजने की सलाह दी गयी। कार्यक्रम में पुलिस पदाधिकारियों ने उपस्थित लोगों को सड़क सुरक्षा, साइबर अपराध से बचाव और नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक भी किया।

पोषाहार वितरण में पारदर्शिता जरूरी : सीओ

सेविकाओं को पोषाहार वितरण में पारदर्शिता के लिए दी गयी डिजिटल प्रशिक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

मेराल। प्रखंड कार्यालय के सभागार में शनिवार को आंगनबाड़ी सेविकाओं को पोषाहार वितरण में पारदर्शिता और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए एक दिवसीय डिजिटल प्रशिक्षण दिया गया। रांची से आए प्रशिक्षक विश्वजीत कुमार ने प्रोजेक्टर के माध्यम से पोषण ट्रैक्कर में एफआरएस इंट्री करने को लेकर विस्तार से जानकारी दिया गया। उन्होंने बताया कि पोषण ट्रैक्कर में शत प्रतिशत एफआरएस करना अनिवार्य है। जिसके लिए सेविकाओं को लगातार प्रयास करते हुए सफलता हासिल करना है। सीओ सह प्रभारी सीडीपीओ यशवंत नायक ने कहा कि पोषाहार वितरण में पारदर्शिता जरूरी है। मौके पर प्रधान सहायक मुरारी मिश्रा, महिला पर्यवेक्षिका प्रतिमा कुमारी, मीना देवी, समाज कल्याण विभाग के प्रभात कुमार ने भी पोषण ट्रैक्कर एफआरएस इंट्री एवं केंद्र संचालन के संबंध में जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों में विभा रानी, अनामिका देवी, रेणु देवी, श्याम दुलारी देवी,सुषमा देवी, खुश्बू गुप्ता, शांति मेहता, आशा देवी, गीता देवी, नागवंती देवी, प्रमीला देवी, अंबा रानी, अंजु देवी, सरीता देवी, गंगोत्री देवी आदि शामिल रहे।

रेड क्रॉस ने मच्छर जनित रोगों से बचाव को लेकर चलाया जागरूकता अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। रेड क्रॉस सोसाइटी गढ़वा के द्वारा रेड क्रॉस के अध्यक्ष डॉक्टर एम पी गुप्ता के नेतृत्व में गढ़वा घंटाघर के पास रंका मोड पर बरसात में होने वाली मच्छर जनित रोगों के बचाव हेतु एक जागरूकता कार्यक्रम किया गया। इन अवसर पर लोगों को बताया गया कि बरसात में मच्छर से अपने आप को बचाना चाहिए खासकर एडीस मच्छर जो साफ पानी में होता है वह दिन में ही काटता है, इसलिए पूरे बांह का शर्ट और फुल पैंट या पजामा पहनना चाहिए ताकि मच्छर ना काटे। बरसात के दिनों में अपने आसपास जो भी जल जमाव का जगह हो उसको साफ रखना चाहिए। कूलर में या कहीं फूलपति हेतु पानी जमा कर-के रखे हो तो उसको गिरा देना चाहिए। इस अवसर पर रेड क्रॉस के द्वारा डेंगू चिकनगुनिया से बचाव सम्बन्धी एक हैंड बिल भी वितरण किया गया। कार्यक्रम में रेड क्रॉस के वॉयस चेयरमैन विनोद कमलापुरी, रेड क्रॉस सोसाइटी गढ़वा के सचिव डॉ ज्वाला प्रसाद सिंह, रेड क्रॉस के कोषाध्यक्ष रामनारायण प्रसाद, सहसचिव नंदकुमार गुप्ता रेड क्रॉस कार्यकारिणी सदस्य दया शंकर गुप्ता, मनोज केसरी, विनोद कुमार, अमन गुप्ता, गजेन्द्र चौधरी, गौतम कुमार, राजीव रंजन तिवारी आदि लोग मुख्य रूप से उपस्थित है।

महाप्रभु अवधेश्वर के जन्मदिन पर बच्चों के बीच चिप्स, बिस्कुट का वितरण

रंका (आजाद सिपाही)। महाप्रभु अवधेश्वर अवधूत राम जी के जन्मदिन के शुभ अवसर पर मृत्युंजय सिंह के द्वारा रंका प्रखंड अंतर्गत ग्राम सिंगाकला विद्यालय एवं आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों के बीच चिप्स, चॉकलेट और बिस्कुट का वितरण किया गया। इस मौके पर मुकेश मिश्रा, महेंद्र सिंह, अनिल राम, शुभम मिश्रा, मृत्युंजय सिंह, रविकांत सिंह, शशिकांत सिंह, सत्यनारायण सिंह, शिक्षक गौरीशंकर राम , शिव शंकर जी सहित काफी संख्या में बच्चे उपस्थित थे।

आरके पब्लिक स्कूल, उचरी में अंतर-सदनीय बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

मझिआंव। राष्ट्रीय खेल दिवस के दूसरे दिन, आरके पब्लिक स्कूल, ऊंचरी, मंझिआंव में अंतर-सदनीय बैडमिंटन टूर्नामेंट का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लड़कों और लड़कियों की टीमों ने अलग-अलग हिस्सा लिया और खेल में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

लड़कियों का वर्ग : प्रथम स्थान: जिया पांडे (कक्षा 9बी, नेहरू सदन) - मेजर ध्यानचंद ट्रॉफी जीती। **द्वितीय स्थान:** वर्षा कुमारी (कक्षा 8ए, नेताजी सुभाष सदन)। **तृतीय स्थान:** रिया कुमारी (कक्षा 8ए, भगत सिंह सदन)।

लड़कों का वर्ग : प्रथम स्थान: हर्ष मिश्रा (कक्षा 9ए, नेताजी सुभाष सदन) - मेजर ध्यानचंद ट्रॉफी जीती। **द्वितीय स्थान:** अतुल कुमार (कक्षा 9ए, नेहरू सदन)। **तृतीय स्थान:** मुस्लिम खान (कक्षा 9ए, भगत सिंह सदन)।

विद्यालय के प्रधानाचार्य, केआर झा ने विजेताओं को बधाई दी और सभी विद्यार्थियों को खेल गतिविधियों में ईमानदारी, रुचि और उत्साह के साथ भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि खेल भावना से खेलने से व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

इस अवसर पर, विद्यालय के निदेशक, प्रसिद्ध शिक्षाविद और लोकप्रिय समाजसेवी अलख नाथ पांडे ने छात्र-छात्राओं की इस सक्रिय भागीदारी की सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसी सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ छात्रों को शिक्षा और अच्छे स्वास्थ्य दोनों में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करेंगी।

यह खेल आयोजन विद्यालय के पीटीआई, जय गोविंद ठाकुर के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर सभी छात्र और शिक्षक उपस्थित थे।

कार्यालय कार्यपालक अभियंता, लघु सिंचाई प्रमंडल, लातेहार

ई० निविदा आमंत्रण सूचना

ई० निविदा संख्या–WRD/MID/ Latehar F2 - 21/2025-26

पत्रांक– 654 लातेहार/दिनांक–29.08.2025

1	कार्य का नाम	दनदाहा मध्यम सिंचाई योजना का जीर्णोद्धार, प्रखंड– बरवाडीह, जिला–लातेहार।
2	प्राक्कलित राशि	78.70 (लाख में)
3	कार्य पूर्ण करने की अवधि	11 माह
4	ई० निविदा वेबसाईट पर प्रकाशित करने की तिथि	10.09.2025
5	ई० निविदा प्राप्त करने की अंतिम तिथि एवं समय	20.09.2025 (3.00 बजे अपराह्न तक)
6	बीड फीस एवं अग्रधन जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय	20.09.2025 (3.00 बजे अपराह्न तक) e-procurement portal(Jharkhand tenders.gov. in)
7	ई० निविदा खुलने की तिथि एवं समय	23.09.2025 (5.00 बजे अपराह्न)
8	(क) निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का पदनाम एवं पता (ख) निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का फोन नं०	कार्यपालक अभियंता, लघु सिंचाई प्रमंडल, लातेहार।
	ई० प्रोक्योमेंट सेल एवं हेल्प लाईन संख्या	0651– 2214784

नोटः– केवल ई० निविदा ही स्वीकार की जायेगी, प्राक्कलित राशि घट बढ़ सकती है।
विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट–jharkhandtenders gov in में देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता,
लघु सिंचाई प्रमंडल, लातेहार

PR 360813 Water Resource(25-26)#D

कार्यालय कार्यपालक अभियंता, लघु सिंचाई प्रमंडल, लातेहार

ई० निविदा आमंत्रण सूचना

ई० निविदा संख्या–WRD/MID/ Latehar F2 - 16/2025-26

पत्रांक– 649 लातेहार/दिनांक–29.08.2025

1	कार्य का नाम	सेडे नदी पर पक्का चेकडैम निर्माण, प्रखंड–महुआडाड़, जिला–लातेहार।
2	प्राक्कलित राषि	64.83 (लाख में)
3	कार्य पूर्ण करने की अवधि	11 माह
4	ई० निविदा वेबसाईट पर प्रकाषित करने की तिथि	10.09.2025
5	ई० निविदा प्राप्त करने की अंतिम तिथि एवं समय	20.09.2025 (3.00 बजे अपराह्न तक)
6	बीड फीस एवं अग्रधन जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय	20.09.2025 (3.00 बजे अपराह्न तक)e-procurement portal(Jharkhand tenders.gov. in)
7	ई० निविदा खुलने की तिथि एवं समय	23.09.2025 (5.00 बजे अपराह्न)
8	(क) निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का पदनाम एवं पता (ख) निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का फोन नं०	कार्यपालक अभियंता, लघु सिंचाई प्रमंडल, लातेहार।
	ई० प्रोक्योमेंट सेल एवं हेल्प लाईन संख्या	0651– 2214784

नोटः– केवल ई० निविदा ही स्वीकार की जायेगी
प्राक्कलित राशि घट बढ़ सकती है।
विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट–jharkhandtenders gov in में देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता,
लघु सिंचाई प्रमंडल, लातेहार

PR 360802 (Water Resource)25-26*D

जिला में शिक्षा के क्षेत्र में बेहरत योजना हो: सैयद रियाज

लातेहार (आजाद सिपाही)। लातेहार उप विकास आयुक्त सैय्यद रियाज अहमद की अध्यक्षता में शिक्षा विभाग अंतर्गत संचालित योजनाओं की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में समग्र शिक्षा, कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय, पोषाक, डिजिटल शिक्षा, छात्रवृति और मध्याह्न भोजन से संबंधित समीक्षा कर जिला स्तर पर शिक्षा विभाग के द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की गयी। उप विकास आयुक्त ने पारदर्शी तरीके से विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति का वितरण करने का निर्देश दिया। विद्यार्थियों को पोशाक उपलब्ध कराने के लिए कहा गया। छूटे हुए विद्यार्थियों का बैंक खाता खुलवाने का निर्देश दिया गया। उन्होंने सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारियों को विद्यालय भ्रमण कर जमीनी स्तर पर निरीक्षण करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। उप विकास आयुक्त ने लंबित कार्यों को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करने और सभी विद्यालयों में शैक्षणिक वातावरण को और सुदृढ़ बनाने का निर्देश दिया। जिला शिक्षा अधीक्षक एडीपीओ, एपीओ, सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी उपस्थित थे।

आवास योजना के नाम पर पंचायत सेवक पर पैसे लेने का ग्रामीणों ने लगाया

बरवाडीह (आजाद सिपाही)। बरवाडीह प्रखंड क्षेत्र के गढवातांड में आवास जियो टैग के नाम पर पंचायत सेवक के द्वारा पैसे लेने का मामला प्रकाश में आया है। इस संबंध में भुक्तभोगी परिवारों ने गढवाताण्ड में स्टेडियम शिलान्यास के दौरान मनिका विधायक रामचन्द्र सिंह को आपबीती सुना न्याय की गुहार लगायी है। मामला पंचायत क्षेत्र के गढवाताण्ड मैदान के पूर्वी इलाके से जुड़ा है। जहां आवास प्लस में नाम जुड़वाने व जियो टैग करने के नाम पर एक हजार से लेकर पन्द्रह सौ दो हजार तक दर्जनों ग्रामीणों से वसूली की गयी है। वसूली कोई और नहीं, बल्कि तत्कालीन पंचायत सेवक व पंचायत सहायक ने किया है। उक्त आरोप ग्रामीणों ने लगाया है। दिलचस्प बात यह है कि जिन जिन लोगों से रुपए लिये गये है, उनका जियो टैग ही नहीं हुआ। जिसके बाद यह मामला खुला है। गांव की प्रमिला देवी तबसुम बीबी रूबी देवी, कलावती देवी, पूनम देवी, नाजमा बीबी सोनी देवी, सबीबा बीबी, सुरेश तुरी समेत दर्जनों ग्रामीणों ने बताया कि आवास के लिए तरस रहे है और मिट्टी के मकान व झोपड़ी में रहने को विवश है। इसी गरीबी का फायदा पंचायत सेवक व पंचायत सहायक ने घर पहुंचकर घर का फोटो लिया और रुपये की ठगी किया है। महिलाओं ने कहा कि पंचायत क्षेत्र में जिन लोगो के पक्के मकान व पूर्व में आवास मिला है उन्हीं लोगों का पुनः नाम जोड़ा गया है। महिलाओं ने विधायक से जांच कर आवास आवंटित करने की मांग की है। वहीं पंचायत सेवक ने पैसा लेने का आरोप को बेबुनियाद बताया है। उन्होंने कहा कि आरोप सरासर निराधार है।

हिंदू महासभा ने वापस लिया अनिश्चितकालीन बंद

महुआडांड (आजाद सिपाही)। महुआडांड़ हिंदू महासभा के आह्वान पर आयोजित अनिश्चितकालीन बंद महुआडांड हिन्दू महासभा ने शनिवार देर शाम वापस ले लिया। इसके बाद अनिश्चितकालीन बंदी को लेकर दो दिनो से बंद पड़ी दुकाने और प्रतिष्ठान दूकानदारों ने खोल दिये। वहीं इस संबंध में महुआडांड हिन्दू महासभा के अध्यक्ष मनोज जायसवाल ने बताया कि बंदी को लेकर शनिवार को झारखंड राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री सह प्रतिपक्ष के नेता बाबूलाल मरांडी से हिन्दू महासभा के प्रतिनिधियों ने मुलाकात कर अपनी बातें रखी। सुनने के बाद बाबूलाल मरांडी ने प्रशासनिक उच्च पदाधिकारियों से बात किये एवं इस समस्या का तुरंत समाधान करने को कहा। इसके बाद महुआडांड एसडीपीओ शिवपूजन बहेलिया के बुलावे पर देर शाम हिन्दू महासभा के प्रतिनिधियों के साथ बैठक हुई। बैठक में हमें आश्वासन दिया गया कि उक्त बैगई स्थल पर कोई भी संगठन निर्माण कार्य नहीं करेगा और उक्त स्थल पर कोई भी सरना समाज के लोग अपनी पंरपरा के अनुसार पुजा पाठ कर सकते हैं। किसी को रोक नहीं रहेगा। उक्त स्थल बैगा का है और बैगा का ही रहेगा। उनके बिना मर्जी के कोई कार्य नहीं होगा। इसके बाद स्थानीय दुर्गा बाड़ी परिसर में हिन्दू महासभा की दोबारा बैठक हुई तदुपरांत सर्वसम्मति से बंद को वापस लेने का निर्णय लिया गया। साथ ही जो बंदी में सहयोग किये सभी को हिन्दू महासभा की ओर से धन्यवाद दिया गया।

जिला बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर जिला बैडमिंटन एसोसिएशन, लोहरदगा के तत्वावधान में एम.एल.ए. कॉलेज कोर्ट में बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उप विकास आयुक्त लोहरदगा दिलीप सिंह शेखावत, विशिष्ट अतिथि अपर समाहर्ता जितेंद्र मुंडा और जिला बैडमिंटन एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. गणेश प्रसाद, समाजसेवी अजातशत्रु जिला खेल पदाधिकारी ने मेजर ध्यानचंद के चित्र पर माल्यार्पण कर टूर्नामेंट का शुभारंभ किया। उप विकास आयुक्त दिलीप सिंह शेखावत ने कहा कि खेल जीवन का अभिन्न हिस्सा है। खेल न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि अनुशासन, टीम भावना और आत्मविश्वास को भी बढ़ाते हैं। मेजर ध्यानचंद जैसे महान खिलाड़ियों से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। अपर समाहर्ता जितेंद्र मुंडा ने कहा कि खेल दिवस हमें यह याद दिलाता है कि फिटनेस और खेलों का महत्व आज की पीढ़ी के लिए कितना जरूरी है। बैडमिंटन जैसे खेल युवाओं को तेज, फुर्तीला और मानसिक रूप से मजबूत बनाते हैं। समाज सेवी अजातशत्रु ने कहा कि खेल युवाओं को नशा और गलत आदतों से दूर रखते हैं। ऐसे आयोजनों से बच्चों में आत्मविश्वास और सकारात्मकता बढ़ती है। जिला अध्यक्ष डॉ. गणेश प्रसाद ने कहा कि जिला बैडमिंटन एसोसिएशन हमेशा खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए कार्य करता रहा है। हमारा उद्देश्य है कि लोहरदगा के खिलाड़ी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाएं। आयोजन को सफल बनाने में जिला खेल पदाधिकारी उपवन बड़ा, एम एल ए कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर स्नेह कुमार, अरुण राम, मुरारी गोस्वामी, रंजीत साहू, नसीम अख्तर, दुबराज यादव, गणेश पांडेय, शिवकुमार भगत, वाल्मीकि सिंह सहित काफी संख्या में खेल प्रेमी उपस्थित थे।

छिपादोहर थाना क्षेत्र में डबल मर्डर

जेल गया पत्नी और 3 वर्षीय बच्चे की हत्या का आरोपी

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीह। बरवाडीह के छिपादोहर पुलिस को शनिवार को बड़ी सफलता मिली है। छिपादोहर थाना परिसर में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी भरत राम ने प्रेस वार्ता कर बताया कि छिपादोहर थाना कांड संख्या 26/2025 (धारा-103(1) बीएनएस) के नामजद आरोपी मोहन लाल उरांव को पुलिस ने छापामारी कर गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार, पुलिस अधीक्षक लातेहार कुमार गौरव के आदेश पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, बरवाडीह के नेतृत्व में छापामारी दल का गठन किया गया था। इसी टीम ने शनिवार को आरोपी मोहन लाल उरांव को गिरफ्तार कर लिया। उसकी निशानदेही पर हत्या में उपयोग किया गया हथियार लोहे का घुठा (छैनी) बरामद किया गया।

बरामदगी : हत्या में उपयोग किया गया हथियार छैनी मृतक सूरज उरांव के शव से खून का नमूना (रुई में) खून सनी मिट्टी, मृतिका सोनामुनी देवी के गले से नमूना रुई, खून से सनी मिट्टी।

घटनास्थल से 2,500 खून लगे नोट : लाल रंग की टूटी चूड़ियों के टुकड़े और टूटा हुआ मंगलसूत्र जैसा नेकलेस, छापामारी दल में रितेश कुमार राव (छिपादोहर), पारस मणी (थाना प्रभारी गारु), बिकाशेन्दु त्रिपाठी (छिपादोहर), इन्द्रजीत तिवारी (छिपादोहर) और IRB-04 के सशस्त्र बल शामिल थे। पुलिस का कहना है कि आरोपी से आगे की पूछताछ जारी है। बरामद साक्ष्यों को फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जायेगा ताकि मामले में ठोस सबूत पेश किया जा सके।

एथलेटिक्स प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग, झारखंड के निर्देश पर झारखंड शिक्षा परियोजना, लोहरदगा के तत्वावधान में खेलो झारखंड 2025-26 प्रतियोगिता के चतुर्थ चरण का आयोजन शनिवार को डायट कैंपस, चीरी कूडु में किया गया। एक दिवसीय इस प्रतियोगिता का शुभारंभ डीइओ सह डीपीओ दास सुनंदा चंद्रमौलेश्वर, जिला शिक्षा अधीक्षक सह अपर जिला कार्यक्रम पदाधिकारी अभिजीत कुमार, एडीपीओ मोनीदीपा बनर्जी और प्रभाग प्रभारी आकाश कुमार ने दीप प्रज्ज्वलित कर और खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया। इस दौरान अंडर-14, अंडर-17 और अंडर-19 वर्ग की बालिकाओं की सभी एथलेटिक्स स्पर्धाएं संपन्न हुईं। जिले के सातों प्रखंडों के सरकारी मध्य, उच्च विद्यालय, केजीबीवी और एकलव्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिताओं में 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 800 मीटर दौड़, लॉन्ग जंप, हाई जंप, हर्डल, शॉट पुट, जेवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो और रस्साकशी शामिल रहीं। डीइओ सह डीपीओ दास सुनंदा चंद्रमौलेश्वर ने कहा कि आज के प्रतिभागी ही भविष्य में पीटी उषा, कोनेरू हम्पी और दुति चंद जैसे अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बनकर जिले और राज्य का नाम रोशन करेंगे।

लकड़ी के पुल के सहारे बच्चे जाते हैं स्कूल, जिला प्रशासन मौन: राजू

आजाद सिपाही संवाददाता

चंदवा। चंदवा के बरवाटोली पंचायत में भारी बारिश से पुल का टूटा गया। करीब दो सप्ताह होने जा रहा है। करीब सभी अखबार के माध्यम से लातेहार प्रशासन तक इसकी जानकारी पहुंच गयी होगी। फिर भी अभी तक किसी प्रकार का कोई चहलकदमी सरकारी बाबु की नहीं दिखायी दी। इस पुलिया के टूटने के बाद एक पंचायत दो पंचायत तीन पंचायत नहीं रांची लातेहार और लोहरदगा जिला जोड़ने वाली सभी गांव का कार्य बाधित हो गया है। यहां का बच्चों को स्कूल कॉलेज जाने के लिए अपने माता-पिता के बनाए हुए काठपुलियां से पार होकर जाना पड़ रहा है। किसी मरीज को यदि डॉक्टर के यहां ले जाना पड़े तो जान को हथेली में रखकर काठफुलिया से गाड़ी गुजारना पड़ रहा है आखिर इस क्षेत्र के लोगों से प्रशासन और अनदेखी क्यों कर रही है। झारखंड के निमार्ता कहे जाने वाले झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन हो जाने के बाद उनके पैतृक गांव नेमरा आठ दिन में सभी सड़क की तस्वीर बदल सकती है तो फिर हमारे लातेहार की इस धरती में क्यों नहीं इस क्षेत्र के बच्चे भी इस देश के भविष्य हैं उनके साथ खिलवाड़ क्यों किया जा रहा है। यह बाते लातेहार विधायक प्रतिनिधि राजू उरांव कहि है। इस अवसर पर पंचायत समिति सदस्य बुधन गंझू बरबाटोली पंचायत के उप मुखिया परमेश्वर यादव चौकीदार किशोर महली उमेश तुरी, कृष्ण मुंडा, वीरेंद्र मुंडा बालेश्वर उरांव, मनोज उरांव, बालकिशन मुंडा, आनंद मुंडा, फूलचंद मुंडा, संतोष उरांव, शंकर मुंडा, राजेश मुंडा, रामजीत मुंडा, बुधन मुंडा और दर्जनों माताएं बहने सब यहां पर एक स्वर में कहा कि यदि प्रशासन जल्दी एक्शन नहीं लेती है तो हम सब चरणबद्ध तरीका से आंदोलन करेंगे।

भाजपा जनजाति सुरक्षा मंच ने की बैठक

आदिवासियों के शोषण और धर्मांतरण पर हुई गहन चर्चा

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। भारतीय जनता पार्टी जनजाति सुरक्षा मंच की एक अहम बैठक शनिवार को शहर के होटल नोवेल्टी के सभागार में आयोजित की गयी। इस अवसर पर मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष गणेश राम भगत मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। बैठक में भाजपा के वरिष्ठ नेता अजय पंकज, शनि उरांव, दिलीप भगत, लक्ष्मी नारायण भगत समेत अनेक ग्रामीण और पार्टी कार्यकर्ता बड़ी संख्या में शामिल हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष गणेश राम भगत ने कहा कि आदिवासी समाज का शोषण अब और बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। उनकी जमीनें छीनने और उन्हें उनकी जड़ों से काटने की कोशिश करने वालों को जनता कभी माफ नहीं करेगी। धर्मांतरण एक बहुत बड़ी साजिश है, जिसके जरिये आदिवासियों को उनकी संस्कृति और परंपराओं से दूर किया जा रहा है। भाजपा जनजाति सुरक्षा मंच इस लड़ाई को गांव-गांव तक ले जायेगा और हर हाल में आदिवासियों की पहचान की रक्षा करेगा। बैठक में वक्ताओं ने स्थानीय स्तर पर आदिवासियों की जमीनों पर हो रहे कब्जे, बिचौलियों की भूमिका और सरकारी योजनाओं का लाभ वंचित परिवारों तक न पहुंच पाने की समस्याओं पर भी विस्तार से चर्चा की। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि आने वाले समय में जनजाति सुरक्षा मंच जनजागरण अभियान चलायेगा। इसके तहत संगठन गांव-गांव जाकर समाज को जागरूक करेगा और हर स्तर पर आदिवासी हक की रक्षा करेगा। अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए लक्ष्मी नारायण भगत ने कहा कि संगठन की जड़ें अब और भी मजबूत की जायेंगी और समाज के हर वर्ग को जोड़ने का प्रयास जारी रहेगा।

ग्रामीणों ने श्रमदान से बनायी सड़क

बरवाडीह(आजाद सिपाही)। बरवाडीह प्रखंड के छिपादोहर पंचायत के गम्हरिया के ग्रामीणों ने सरकारी उदासीनता से उपेक्षित होकर शनिवार को श्रमदान से व चंदा करके आधा किलोमीटर सड़क का निर्माण कर दिया। गांव के गम्हरिया टोला के लोगो ने बताया कि अत्यधिक बारिश के कारण सड़क बह जाने के कारण सड़क से आवागमन करने को मजबूर थे। ग्रामीणों ने स्थानीय जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से कई बार सड़क मरम्मत कार्य कराने की गुहार लगायी। उसके बाउजूद भी आलम जस का तस रहा। ग्रामीण राजेंद्र राम, मुकेश प्रसाद, टोटो भुइयां, अरविंद भुइयां, राहुल प्रसाद,बिहारी यादव,बिनोद सिंह, प्रदीप कुमार, मुकेश राम ने बताया कि बारिश के कारण सड़क बह गया था। पैदल चलना दुभर हो गया था। सड़क निर्माण के लिए अधिकारी, पंचायत प्रतिनिधियों से गुहार लगायी, लेकिन किसी ने नहीं सुना। तब जाकर अंतिम में यह कदम उठाना पड़ा।

वाहन जांच अभियान में 37 वाहन जब्त, 65 हजार की वसूली

प्रेशर हॉर्न लगे वाहन होंगे जब्त : डीटीओ

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। लोहरदगा सड़क हादसों में कमी लाने और ट्रैफिक नियमों का कड़ाई से अनुपालन करने को लेकर उपायुक्त डॉ कुमार ताराचंद के निर्देश पर परिवहन विभाग ने सघन वाहन जांच अभियान शनिवार को चलाया। जिला परिवहन पदाधिकारी जया सांखी मुर्मू और जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक अमृतेश्वर गिरी ने शहरी क्षेत्र के कचहरी चौक में दो पहिया, तीन पहिया और चार पहिया वाहनों की जांच किया। इस दौरान वाहनों में प्रेशर हॉर्न, बिना हेलमेट बाइक चलाने, मोडिफाइड साइलेंसर लगाने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की गयी। तत्काल वाहनों से प्रेशर हॉर्न और मोडिफाइड साइलेंसर को हटाने की कड़ी चेतावनी दी गयी। चेतावनी के बावजूद फिर प्रेशर हॉर्न और मोडिफाइड साइलेंसर का उपयोग करते पकड़े जाने पर वाहन जब्त कर चालक को जेल की हवा खिलाने के चेतावनी मिली। इस दौरान चार पहिया वाहनों में ब्लैक फिल्म लगाने और सीट बेल्ट का उपयोग नहीं करने वाले चालकों को भी परिवहन विभाग के निदेर्शों का कड़ाई से अनुपालन करने कहा गया। वाहन जांच अभियान के दौरान परिवहन विभाग ने लगभग 37 वाहनों पर कार्रवाई किया। इस दौरान दंडात्मक कार्रवाई करते हुए विभाग ने वाहन चालकों से लगभग 65000 जुर्माना राशि की भी वसूली किया। इस संदर्भ में डीटीओ जया सांखी मुर्मू ने कहा कि, विभाग अभी लगातार अभियान चलायेगा। अब प्रेशर हॉर्न का उपयोग करने वाले वाहन जब्त होंगे।

पूर्व राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने लिया गणपति बप्पा का आशीर्वाद

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। देवस्थल किस्को मोड़ में पांच दिवसीय गणेशोत्सव के तीसरे दिन कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने गणेश भगवान के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर गणेश पूजा समिति के पदाधिकारियों द्वारा धीरज प्रसाद साहु का स्वागत किया गया। समिति के अध्यक्ष राजकुमार यादव, सचिव गुप्तेश्वर प्रसाद गुप्ता, बैजनाथ प्रसाद (गुड्डुस) के द्वारा अतिथियों को अंगवस्त्र ओढ़ाकार स्वागत किया गया। मौके पर पूर्व राजयसभा सांसद ने गणपति बप्पा के भक्तों को गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा की भक्ति और आस्था से भरा यह पावन पर्व सभी के लिए मंगलमय हो। मैं भगवान गजानन से प्रार्थना करता हूं कि वे अपने सभी भक्तों को सुख, शांति और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें। गणेश चतुर्थी विनायक चतुर्थी को विनायक चविथी के नाम से भी जाना जाता है। यह एक ऐसा त्योहार है, जो नयी शुरुआत का प्रतीक है। यह शुभ काम से पहले पूजे जाने वाले विघ्नहर्ता भगवान गणेश की वंदना का प्रतीक है। देश-विदेश में भक्त सजे-धजे घरों और पंडालों, प्रार्थनाओं, संगीत और जीवंत जुलूसों के साथ उनकी बुद्धि और बुद्धिमत्ता का जश्न मनाते हैं। देवस्थल मंदिर का भ्रमण कर उन्होंने मंदिर के सुंदर वातावरण की प्रशंसा भी की वहीं पूजा पंडाल में होने वाले संध्या महाआरती में भक्तो की भीड़ उमड़ रही हैं संध्या आरती के पश्चात प्रसाद बप्पा के भक्तों के द्वारा श्रद्धांलुओं के लिए प्रसाद का वितरण प्रतिदिन किया जा रहा हैं। मौके पर डॉ अजयनाथ शाहदेव, विधायक प्रतिनिधि निशीथ जायसवाल, निश्चय वर्मा, कुणाल वर्मा, अमित वर्मा, उदय साहू, गणेश पुजा समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे।

भक्ति भाव और धूमधाम के साथ संपन्न हुआ गणपति विसर्जन उत्सव

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। शुक्रवार की देर शाम तीन दिवसीय गणपति पूजनोत्सव का समापन भक्ति-भाव और उल्लास के साथ हुआ। सनातन धर्म समिति महादेव टोली रोड दुर्गा मंदिर, महाकाल क्लब गणेश पूजा समिति कृषि बाजार और अन्य पूजा पंडालों में पूजन उत्सव संपन्न होने के बाद प्रतिमा विसर्जन किया गया। विसर्जन से पूर्व वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पुरोहितों द्वारा विशेष पूजा-अर्चना, आरती और हवन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। सनातन धर्म समिति बौली बगीचा, दुर्गा मंदिर से ढोल-नगाड़ों के साथ शोभायात्रा निकाली गयी। गणपति बप्पा मोरया के उद्घोष से पूरा शहर भक्तिमय माहौल में सराबोर हो उठा। इस अवसर पर जय श्रीराम समिति के अध्यक्ष सुनील अग्रवाल और महामंत्री प्रदीप साहू ने लोहरदगा वासियों के सुख-समृद्धि और रिद्धि-सिद्धि की कामना की। उन्होंने कहा कि गणपति पूजन से घर-परिवार में खुशहाली और संपन्नता आती है और सभी विघ्न-बाधाएं दूर होती हैं। विभिन्न तालाबों और नदी घाटों पर भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी। प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए पूरे शहर में पुलिस बल की तैनाती की थी, जिससे विसर्जन शांतिपूर्ण और सफलतापूर्वक संपन्न हो सका। पूजा पंडालों के अध्यक्ष और पदाधिकारियों ने गणेश उत्सव को सफल बनाने में सहयोग के लिए प्रशासन को धन्यवाद ज्ञापित किया।

विहिप का मनाया गया स्थापना दिवस

भंडरा (आजाद सिपाही)। विश्व हिंदू परिषद का 61वां स्थापना दिवश भंडरा प्रखंड मुख्यालय स्थित स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के निकट गणेश पूजा पंडाल परिषर में भव्य रूप से विश्व हिन्दू परिषद प्रांत मार्गदर्शक मंडल संयोजक कृष्ण चेतन्य ब्रह्मचारी के अगुवाई में मनाया गया। स्वामी जी ने अपने संबोधन में विश्व हिन्दू परिषद के स्थापना के उद्येश्य और आवश्यक्ता के बारे में विस्त्रित रूप से व्याख्या किया। उन्होंने कहा की आज के समय में हिन्दू हित और हिन्दुत्व की रक्षा के लिए सभी सनातनियों को संगठित होकर रहने की आवश्यकता है। मौके पर विश्व हिन्दू परिषद जिला मंत्री रंजित कुमार साहु नगर सुरक्षा प्रमुख प्रद्युमन पाठक भंडरा है। प्रखंड अध्यक्ष शंकर साहु, उमेश गुप्ता, श्रीकांत गुप्ता, अमर साहु, विवेक यादव, विशाल सोनी, बिट्टू साहु, सनियाल यादव, करण साहु और प्रखंड के बजरंग दल दुर्गा वाहिनी मात्री शक्ति सहित भारी संख्या में सनातनी लोग उपस्थित थे।

बालूमाथ में डिग्री कॉलेज निर्माण के लिए 38.82 करोड़ का डीपीआर तैयार

बालूमाथ (आजाद सिपाही)। विधायक प्रकाश राम ने विधानसभा के चालू सत्र में तारांकित प्रश्न के माध्यम से बालूमाथ में डिग्री कॉलेज और बारियातू में महिला महाविद्यालय की स्थापना शीघ्र किए जाने की मांग सरकार से की है। सत्र के दौरान सोमवार को तारांकित प्रश्न के माध्यम से उन्होंने सरकार से जानना चाहा कि बालूमाथ प्रखंड में डिग्री महाविद्यालय हेतु पूर्ववर्ती सरकार द्वारा बजटीय प्रावधान किया गया था। जिसके बाद जिला प्रशासन लातेहार द्वारा महाविद्यालय निर्माण के लिए जमीन का चयन कर लिया गया था। प्रशासनिक स्वीकृति नहीं होने के कारण इसे अभी तक शुरू नहीं किया जा सका है। सरकार उपरोक्त डिग्री महाविद्यालय को प्रशासनिक स्वीकृति देते हुए भवन निर्माण और शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की नियुक्ति करते हुए कब तक पठन पाठन का कार्य शुरू कराना चाहती है। झारखंड सरकार उच्च और तकनीकी शिक्षा विभाग (उच्च शिक्षा निदेशालय) के द्वारा जवाब देते हुए बताया गया कि उपायुक्त लातेहार के पत्रांक-367/दिनांक 28 मई 2019 के द्वारा लातेहार जिला अंतर्गत बालूमाथ के तसतबार, थाना संख्या-70, खाता संख्या-91, प्लॉट संख्या 731 कुल रकबा-5.00 एकड़ भूमि डिग्री महाविद्यालय, बालूमाथ के लिए चिन्हित किया गया है। झारखंड राज्य भवन निर्माण निगम लिमिटेड, रांची के द्वारा डिग्री महाविद्यालय, बालूमाथ के निर्माण हेतु कुल राशि रू 38,82,08,000/- (अड़तीस करोड़ बयासी लाख आठ हजार) मात्र का डीपीआर तैयार किया गया है। प्रशासनिक स्वीकृति की कार्रवाई की जा रही है। वहीं विधायक प्रकाश राम ने अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग बहुसंख्यक क्षेत्र होने व उच्च शिक्षा में महिलाओं का प्रतिशत काफी कम रहने के कारण बारियातु प्रखंड में महिला डिग्री महाविद्यालय खोलने की मांग सरकार से की। झारखंड सरकार उच्च और तकनीकी शिक्षा विभाग (उच्च शिक्षा निदेशालय) के द्वारा जवाब देते हुए बताया गया कि विभागीय पत्रांक 82/बजट 04 जुलाई 2025 के द्वारा उपायुक्त, लातेहार को बारियातु प्रखंड में महिला महाविद्यालय की स्थापना हेतु भूमि चिन्हित करने हेतु पत्र प्रेषित किया गया है। उपायुक्त, लातेहार से प्रस्ताव प्राप्त होने पर उसका आकलन कराते हुए सरकार द्वारा समुचित निर्णय लिया जायेगा। 'दैनिक आजाद सिपाही' से बात करते हुए विधायक प्रकाश राम ने बताया कि शिक्षा विशेष रूप से तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में संपूर्ण विधानसभा क्षेत्र को आदर्श बनाना मेरा लक्ष्य है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए हरसंभव प्रयास जारी है।

ट्यूशन पढ़कर घर लौट रही छात्रा को हाइवा ने रौंदा, मौत

आक्रोशित ग्रामीणों ने मेदिनीनगर-औरंगाबाद मुख्य पथ जाम कर किया प्रदर्शन

- औरंगाबाद पुलिस अधीक्षक को बुलाने, दिन में हाइवा चलाने पर पाबंदी और संडा एनएच 139 से किशुनपुर जाने वाले मोड़ पर ब्रेकर लगाने की मांग

शव के समक्ष रोते बिलखते परिजन एवं सड़क जाम करते आक्रोशित ग्रामीण।

आजाद सिपाही संवाददाता

हरिहरगंज/पलामू। हरिहरगंज सीमा से सटे औरंगाबाद जिले के कुटुंबा थाना अंतर्गत सांडा स्थित एनएच 139 मुख्य पथ पर शनिवार को ट्यूशन पढ़कर घर लौट रही एक छात्रा को हाइवा ट्रेलर ने रौंद दिया। जिसके छात्रा की मौके पर ही मौत हो गयी। उसकी पहचान कुटुंबा थाना क्षेत्र के किशुनपुर निवासी उपेंद्र मेहता की पुत्री चांदनी कुमारी (18ः के रूप में हुई है। परिजनों ने बताया कि चांदनी बीएसी प्रथम वर्ष की छात्रा थी। वह प्रतिदिन साइकिल से हरिहरगंज ट्यूशन पढ़ने जाती थी। ट्यूशन से घर लौटने के दौरान उक्त हादसा हुआ। उधर, दुर्घटना के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने दुर्घटना के लिए जिम्मेदार हाइवा में जमकर तोड़फोड़ की और उसकी हवा निकाल दी। लगे हाथ मेदिनीनगर-औरंगाबाद मुख्य पथ जाम कर दिया। जिससे दोनों ओर घंटों वाहनों की लंबी कतार लग गयी। इसकी सूचना पाकर मौके पर पहुंची अंबा और कुटुंबा थाने की पुलिस पर भी आक्रोशित ग्रामीणों ने हमला कर दिया। हालांकि किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। दूसरी ओर, आक्रोशित ग्रामीण औरंगाबाद पुलिस अधीक्षक को मौके पर बुलाने, दिन में हाइवा वाहन बंद करने और संडा एनएच 139 से किशुनपुर जाने वाले मोड़ पर ब्रेकर लगाने की मांग कर रहे थे। उधर, प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि यह घटना उत्पाद विभाग पुलिस की लापरवाही के कारण घटी है। बताया कि शराब से लदे एक वाहन को उत्पाद विभाग की पुलिस पीछा कर रही थी। तभी हाइवा वाहन सड़क के किनारे चली गई और छात्रा को अपनी चपेट में ले लिया। समाचार लिखे जाने तक सड़क जाम कर लोगों का प्रदर्शन जारी था।

धूमधाम से मनेगा श्री गौशाला का शताब्दी वर्षः अरुणा शंकर

- 15 सितंबर तक सदस्यता अभियान चलाने का निर्णय
- शव दाह के लिए गोबर, चंदन, धूप-घी युक्त लकड़ी का होगा निर्माण

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। श्री गौशाला बारहलोटा समिति की बैठक शनिवार को हुई। जिसकी अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष विकास तिवारी ने की। इस दौरान श्री गौशाला में हो रहे आमद और खर्च का लेखाजोखा कोषाध्यक्ष नरेंद्र मेहता ने रखी जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया। साथ ही आजीवन सदस्य आनंद शंकर को श्री गौशाला के जीर्णोद्धार के विशेष सहयोग के लिए सभी ने धन्यवाद दिया। इस दौरान सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि श्री गौशाला समिति का आजीवन सदस्य बनने के इस्छुक लोगों से 21 हजार रुपए और वार्षिक सदस्य बनने के लिए 2100 रुपए प्रतिवर्ष शुल्क लिया जाएगा। पुराने सदस्य भी अपना वार्षिक शुल्क जमा करकर सदस्य बने रहेंगे। सदस्यता के लिए 15 सितंबर तक विशेष अभियान चलाया जाएगा उसके बाद समिति का विस्तार किया जाएगा। साथ ही निर्णय हुआ कि माहवारी खर्च के लिए कई प्रतिष्ठानों से संपर्क कर धर्मादा के नाम पर सहयोग राशि जमा करने का अनुरोध किया जाएगा। समिति के सदस्य इंद्रजीत सिंह डिंपल ने बताया हमारे गौशाला का 100 वर्ष पूर्ण हो गया है। 2025 शताब्दी वर्ष चल रहा है जिसे धूमधाम से इस साल के अंतिम महीने तक मनाया जाएगा। इस दौरान बाहर से अतिथियों को आमंत्रित किया जायेगा। वहीं, समिति ने मेदिनीनगर सदर एसडीओ के अलावे सर्वसम्मति से प्रथम महापौर अरुणा शंकर को अपना संरक्षक बनाने का प्रस्ताव रखा जिस पर प्रथम महापौर ने अपनी सहमति दी। संरक्षक बनने के बाद अरुणा शंकर ने प्रस्ताव दिया कि समिति भारी मात्रा में वर्मिकंपोस्ट खाद के अलावे गौशाला में गोबर द्वारा निर्मित दीये का निर्माण दीपावली से पहले महिला समूह से कराये। साथ ही जल्द गोबर, चंदन, धूप से निर्मित लकड़ी शव दाह के लिए तैयार कर राजा हरिश्चंद्र घाट में रखी जाए, जो शुद्धता और संस्कृति का प्रतीक होगा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। निर्णय लिया गया कि शताब्दी वर्ष मनाने के लिए योजना अध्यक्ष प्रथम महापौर अरुणा शंकर और सयोजना अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह डिंपल होंगे। अंत में सचिव सत्येंद्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया। बैठक में आजीवन सदस्य प्रदीप कुमार बाबूल, रितेश कुमार, सरस जैन, आनंद शंकर, डॉ राजीव नयन, विकास कुमार आदि उपस्थित थे।

कांग्रेस ने देश की मर्यादा को तार-तार कर दिया : कमलेश

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। पूर्व मंत्री सह भाजपा के वरिष्ठ नेता कमलेश कुमार सिंह ने दरभंगा के अतरबेल में आयोजित कांग्रेस की रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी मां को अपशब्द एवं गाली गलौज करने की घटना की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस, राजद और आइएनडीआइए गठबंधन दलों के नेताओं से शालीन भाषा की उम्मीद नहीं की जा सकती। लगातार चुनावी हार और राजनीतिक विफलताओं से उपजी उनकी हताशा और कुंठा अब गाली-गलौज और अपमानजनक बयानों के रूप में सामने आ रही है। कहा कि गरीब तबके से निकले एक व्यक्ति को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर देखकर इनका कलेजा जल रहा है। यही कारण है कि ये लोग बौखलाहट में देश के प्रधानमंत्री और उनकी मृत मां का भी अपमान करने से भी पीछे नहीं हटते। राहुल गांधी कहते हैं कि बिहार आकर उन्हें बहुत 'मजा' आता है। लेकिन बिहार मौज-मस्ती की जगह नहीं, बल्कि भगवान बुद्ध की भूमि है। ज्ञान, तप और चेतना की पावन धरती है। पूर्व मंत्री ने कहा कि कांग्रेस की तथाकथित यात्रा दरअसल 'घुसपैठिया बचाओ यात्रा' है। उन्हें असली मतदाताओं के अधिकार से कोई लेना-देना नहीं है। बल्कि असली चिंता इस बात की है कि अवैध घुसपैठियों को मतदाता बनाकर कैसे बचाया जाए। यह पूरा आडंबर और नौटंकी इसी मकसद से रची गई है। कहा कि महागठबंधन बिहार की धरती पर नफरत और भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहा है। पर बिहार की जनता प्रधानमंत्री और उनकी मां का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगी। चुनावों में करारा जवाब देगी।

अनुपयोगी जगह पर बन रहा आंगनबाड़ी केंद्र का भवन, ग्रामीणों ने किया विरोध

संवेदक पर फिर आहार में आंगनबाड़ी केंद्र भवन का निर्माण कराने का आरोप

आजाद सिपाही संवाददाता

विश्रामपुर/पलामू। विश्रामपुर नगर परिषद अंतर्गत वार्ड एक के भलूही गांव में संवेदक द्वारा आहर किनारे आंगनबाड़ी केंद्र के भवन का निर्माण कराये जाने का मामला सामने आया है। वैसे भी भवन का निर्माण गांव के बाहर सुनसान जगह पर है। प्रथम दृष्टया ही निर्माणस्थल पूरी तरह अनुपयोगी लग रहा है। जिस कारण ग्रामीण निर्माण स्थल को बदलने की मांग कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार भलूही गांव में भवन निर्माण के लिए संवेदक ने शुक्रवार को सुनसान जगह पर आहार किनारे जेसीबी मशीन से नींव खुदवाया। ग्रामीणों को जब इसकी जानकारी मिली तो वे शनिवार को निर्माणस्थल पर पहुंच गये और इसका विरोध शुरू कर दिया। नेतृत्व कर रहे भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष बबन राम ने कहा कि यह भवन गांव के आबादी वाले जगह पर बनना चाहिए न कि सुनसान और अनुपयोगी जगह पर। आहार किनारे अगर भवन का निर्माण हुआ तो बरसात में यह पानी में डूब जायेगा। आंगनबाड़ी सेविका सहायिका संघ के प्रमंडलीय अध्यक्ष शिवबंश मिश्रा ने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्र में स्कूल पूर्व शिक्षा दी जाती है, जिसमें पांच वर्ष से कम आयु के बच्चे पढ़ने आते है। इस सुनसान जगह पर छोटे-छोटे बच्चे कैसे आयेंगें। इस अनुपयोगी जगह के बजाय भवन का निर्माण गांव के बीच में होना चाहिए। इस संबंध में आंगनबाड़ी सेविका सीमा देवी ने बाल विकास परियोजन कार्यालय को भी आवेदन देकर निर्माणस्थल को बदलने की मांग की है। विरोध करने वालों में धर्मेंद्र कुमार, परशु राम, विवेक कुमार, पप्पू राम, अजय राम, सरजू राम, महेंद्र चौधरी, रघु चौधरी आदि शामिल है।

देवघर डीसी के नाम से फर्जी फेसबुक एकाउंट बनाकर पैसों की मांग, एफआइआर का निर्देश

देवघर (आजाद सिपाही)। डीसी नमन प्रियेश लकड़ा के नाम से साइबर अपराधियों ने फर्जी फेसबुक एकाउंट बनाकर लोगों से पैसों की मांग की जा रही है। मामला संज्ञान में आते ही डीसी ने एफआईआर दर्ज कराने का निर्देश दिया है। डीसी ने साइबर अपराध के प्रति जिलावासियों को जागरूक और सतर्क रहने की अपील की है। कहा कि आज के समय में अधिकांश लोग सोशल मीडिया के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े हैं, क्योंकि वर्तमान समय में यह माध्यम सूचनाओं का आदान-प्रदान करने का सबसे सरल एवं सशक्त माध्यम बन चुका है। सोशल मीडिया ने जिस तेजी लोगों के जीवन में अपनी जगह बनाई है, उसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगे हैं। वर्तमान समय में साइबर अपराधियों ने ठगी का नया तरीका निकाला है। प्रतिदिन किसी न किसी का फर्जी फेसबुक अकाउंट का क्लोन बनाकर अनजान लोगों के साथ ही रिश्तेदारों और जान-पहचान वालों को मैसेज एवं लिंक भेजकर अपने खाते में ऑनलाइन रुपये मांगते है या एकाउंट हैक करते हैं। देवघर डीसी या उपायुक्त नमन प्रियेश लकड़ा जैसे अन्य नाम के एकाउंट से किसी भी तरह का कोई फेसबुक पर मैसेज, लिंक या रिक्वेस्ट आदि आने पर सावधान रहें और तुरंत इसकी सूचना साइबर थाना या निकटतम थाने को दें, ताकि साइबर सेल की ओर से त्वरित कार्रवाई की जा सके।

डॉ राम सुभग सिंह फिर बने एके सिंह कॉलेज के नये प्राचार्य, संभाला पदभार

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। जपला एके सिंह कॉलेज का नया प्राचार्य डॉ राम सुभग सिंह को बनाया गया है। शनिवार को उन्होंने अपना पदभार ग्रहण किया। प्रभारी प्राचार्य प्रो सूर्य मणि सिंह ने डॉ राम सुभग सिंह को पदभार सौंपा। बतातें चलें कि सचिव प्रफुल कुमार सिंह ने 18 जुलाई को ही प्रो सूर्य मणि सिंह के स्थान पर डॉ राम सुभग सिंह को तत्काल प्रभाव से प्राचार्य नियुक्त किया था। 19 जुलाई को उन्होंने योगदान भी दे दिया था। लेकिन विश्वविद्यालय ने नियमित शासी निकाय को भंग कर तदर्थ शासी निकाय गठित कर डॉ आनंद कुमार को प्रभारी प्राचार्य नियुक्त कर दिया। विश्वविद्यालय की मनमानी के खिलाफ सचिव प्रफुल सिंह ने राज्यपाल के समक्ष लिखित शिकायत की और राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव नितिन मदन कुलकर्णी ने 14 अगस्त को नियमित शासी निकाय को पुर्नबहाल कर दिया। इस कारण डॉ राम सुभग सिंह प्राचार्य पद के लिए मान्य हो गये। प्रो सूर्य मणि सिंह ने कागजातों की विस्तृत सूची तैयार कर डॉ राम सुभग सिंह को संपूर्ण पदभार सौंप दिया और इन्हें प्राचार्य की कुर्सी पर बिठाया। वहीं, प्रो सूर्य मणि सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय ने जांच समिति गठित की है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जांच समिति मुझे क्लीनचिट देगी। वहीं, सचिव प्रफुल सिंह ने कहा कि शासी निकाय की बैठक जल्द होगी। इसके बाद डॉ आनंद कुमार द्वारा लगाये गये अनर्गल आरोपों का संवाददाता सम्मेलन कर विस्तृत जवाब दिया जायेगा।

जपला आरपीएफ ने जब्त किया 24 बोतल बीयर

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। जपला आरपीएफ पोस्ट के निरीक्षक प्रभारी राजेश कुमार मीणा के नेतृत्व में आपराधिक गतिविधि निगरानी सहित अन्य मामलों की रोक थाम को लेकर अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में जपला रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या तीन पर सवारी गाड़ी संख्या 53611 अप बरवाडीह डेहरी ऑनसोन पैसेंजर ट्रेन के कोच संख्या 104263 में जांच के दौरान शौचालय के पास एक कला रंग का पिट्ठू बैग मिला। यात्रियों से पूछताछ करने पर किसी ने मालिकाना हक नहीं बताया। इसके बाद आरपीएफ ने उसे जब्त कर लिया। उसे खोल कर तलाशी ली, तो उसमं से 24 किंगफिशर स्ट्रॉन्ग प्रीमियम बीयर (केन) मिला। जिसे आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए आबकारी विभाग को सूचना दे दी गयी। आरपीएफ उप निरीक्षक कार्तिक बिंझा ने बताया कि आरपीएफ निरीक्षक प्रभारी राजेश कुमार मीणा के नेतृत्व में वह भी अभियान में शामिल थे। इसके अलावा प्रधान आरक्षी सुधीर कुल्लू, सुनील कुमार राय और अजय कुमार आदि शामिल थे।

पुराने सदर अस्पताल में मोतियाबिंद का मुफ्त इलाज-ऑपरेशन शुरू

देवघर (आजाद सिपाही)। गरीब, असहाय और जरूरतमंदों के लिए देवघर के पुराने सदर अस्पताल में मोतियाबिंद का मुफ्त इलाज और ऑपरेशन फिर से शुरू किया गया है, जो काफी दिनों से बंद था। आई स्पेशलिस्ट डॉक्टर मृणाल सिंह यहां इलाज कर रहे हैं। डॉक्टर मृणाल कुमार सिंह ने बताया कि काफी दिनों से मोतियाबिंद का ऑपरेशन यहां बंद था, जिसे फिर से शुरू कर दिया गया है। ज्यादा से ज्यादा लोग जिन्हें आंख में समस्या है वह पुराने सदस्य अस्पताल में आकर अपना इलाज निःशुल्क करा सकते हैं।

जनता दरबार लगाकर डीडीसी ने सुनीं लोगों की समस्याएं, किया समाधान

देवघर (आजाद सिपाही)। डीडीसी पीयूष सिन्हा ने शनिवार को जनता दरबार लगाकर लोगों की समस्याएं सुनीं और उसका समाधान किया। इस दौरान मौके पर जिलास्तर के सभी अधिकारी-कर्मी उपस्थित थे, ताकि ऑन द स्पॉट समस्याओं का समाधान संबंधित विभाग द्वारा किया जा सके। इसमें जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने भू-अर्जन और मुआवजा भुगतान से संबंधित, अनुकम्पा, बिजली बिल माफी, मुख्यमंत्री मंइयां सम्मान योजना, फसल बीमा योजना, भू-राजस्व, पेंशन, आवास से जुड़े मामलों को डीडीसी के समक्ष रखा। वहीं, सभी लोगों से एक-एक कर समस्याएं सुनने के बाद डीडीसी ने आश्वस्त किया कि संज्ञान में आए सभी शिकायतों की जांच कराते हुए जल्द समाधान किया जाएगा। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि इन शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए एक सप्ताह के अंदर अपना प्रतिपुष्टि डीसी कार्यालय को समर्पित करें, ताकि शिकायतों के निष्पादन की निगरानी की जा सके। बतातें चलें कि आम जनता की समस्याओं के त्वरित निष्पादन के लिए प्रति सप्ताह मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को समाहरणालय में सुबह 10.30 से 11.30 बजे जनता दरबार आयोजित होगा है। इस मौके पर समाहर्ता हीरा कुमार, जिला परिवहन पदाधिकारी शैलेश प्रियदर्शी, जिला शिक्षा पदाधिकारी विनोद कुमार, जिला शिक्षा अधीक्षक, सहायक नगर आयुक्त, विद्युत अभियान आदि उपस्थित थे।

करम पूजा में डीजे पर रहेगा पूर्ण प्रतिबंध : थाना प्रभारी

मनातू/पलामू (आजाद सिपाही)। करमा पूजा और ईद-उल फितर को लेकर शनिवार को मनातू थाना परिसर में शांति समिति की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता मनातू थाना प्रभारी निर्मल उरांव ने किया। उन्होंने बताया कि करमा पूजा और ईद - उल फितर का त्योहार शांति और सद्भावना के साथ मनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि इस बार करमा पूजा में डीजे पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। इसके बजाय, पूजा स्थल पर पारंपरिक ढोल-नगाड़े और मांदर की थाप पर नाच-गान कर उत्सव मनायें। ताकि सांस्कृतिक माहौल बने और किसी भी तरह का विवाद या अव्यवस्था न हो। उन्होंने बताया कि कर्म पूजा एक हिंदू आदिवासी और किसान समाज का कृषि संबंधी त्योहार है, जो अच्छी फसल और भाई-बहन के बंधन का प्रतीक है। इसमें करम वृक्ष की पूजा की जाती है। वहीं, ईद-उल-फितर (मीठी ईद) रमजान के पाक महीने के समापन का प्रतीक है। अल्लाह का शुक्रिया अदा करने, दान (जकात-उल-फितर) देने और मीठी सेवइयों का आनंद लेने के लिए मनाया जाता है। थाना प्रभारी ने समाज के सभी वर्गों से अपील की कि वे इस धार्मिक आयोजन को आपसी भाईचारे और शांति के साथ मनाएं। वहीं दूसरी ओर, शांति समिति की बैठक के बाद मनातू थाना परिसर में करमा पूजा के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें गाजे, बाजे, डोल-नगाड़ा के साथ लोगों का हौसला अफजाई करते हुए थाना प्रभारी ने लोगों के साथ पारंपरिक रीति रिवाज से नृत्य किया। वहीं महिलाओं ने अपने नृत्य से उपस्थित लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया। इस मौके पर विधायक प्रतिनिधि उदेश यादव, पुअनि सुरेंद्र उरांव, सअनि अशोक कुमार रविदास, बबूला यादव और अफजल खां आदि उपस्थित थे।

पलामू में दो चरणों में चला फाइलेरिया उन्मूलन अभियान

फाइलेरिया से बचाव को लिए पलामू में 93 फीसदी लोगों ने खायी दवाः सिविल सर्जन

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) अभियान को प्रभावी बनाने और फाइलेरिया उन्मूलन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए शनिवार को मीडिया कार्यशाला का आयोजन हुआ। स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से पलामू सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की ओर से स्थानीय सूचना भवन सभागार में आयोजित कार्यशाला में मीडियाकर्मियों को फाइलेरिया के दवा सेवन के महत्व, बीमारी के लक्षण, बचाव के उपाय और सरकारी प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए सिविल सर्जन डॉ अनिल श्रीवास्तव ने बताया कि 15 से 25 तक अभियान का पहला चरण था। इस वर्ष की प्रगति का आकलन कर इस अभियान को आगे बढ़ाकर 26 से 30 अगस्त किया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि 93 फीसदी लोगों को दवा खिलायी जा सकी। उन्होंने फाइलेरिया से बचाव के लिए दवा खाने की अपील की। कहा कि पलामू में दवा खाने से लोगों को कोई परेशानी नहीं हुई। स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं देखा गया। मामूली शिकायतें मिली, लेकिन जागरूकता से उसका निदान करने में सफलता मिली। सिविल सर्जन ने बताया कि फाइलेरिया सिर्फ पैर में ही नहीं होता। पर ज्यादातर पैर में ही होती है, क्योंकि पैर का संपर्क सीधा भूमि से रहने के कारण तापमान कम रहता है। इसलिए ज्यादा संभावनाएं पैर में होने का रहता है। उन्होंने मीडियाकर्मियों से विशेष धन्यवाद दिया, जिनके माध्यम से लोगों में जागरूकता आई। माइक्रोबायोलॉजिस्ट मासूम ने 26 से 30 अगस्त के बीच चलाये जा रहे फाइलेरिया मुक्ति अभियान के द्वितीय चरण की जानकारी दी। उन्होंने अभियान के तहत फाइलेरिया की दवा को खाकर इसके फैलाव की कड़ी को तोड़ने पर बल दिया। कहा कि फाइलेरिया मादा क्यूलेक्स मच्छर के काटने से होता है। आमलोग भी फाइलेरिया से ग्रसित व्यक्ति को हीन भावना से देखते हैं। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

मिशन हेल्दी भारत की राष्ट्रव्यापी यात्रा का स्वागत

देवघर (आजाद सिपाही)। मिशन हेल्दी भारत की राष्ट्रव्यापी यात्रा, जिसकी अगुवाई इंजीनियर और सामाजिक उद्यमी तपसी उपाध्याय कर रही हैं, शनिवार को देवघर पहुंची। तपसी उपाध्याय को लोग बी-टेक पानी पूरी वाली के नाम से भी पहचानते हैं। इस यात्रा का उद्देश्य पूरे देश में स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, युवा सशक्तिकरण और वीगन जीवनशैली को लेकर जागरूकता फैलाना है। तपसी उपाध्याय ने 9 मार्च 2025 को मेरठ से अपनी बुलेट बाइक पर इस ऐतिहासिक यात्रा की शुरूआत की थी। देवघर आगमन पर तपसी उपाध्याय ने देव संघ स्कूल में छात्रों को संबोधित करते हुए स्वास्थ्य और जिम्मेदार नागरिक बनने का संदेश दिया। अब यह यात्रा धनबाद, रांची और जमशेदपुर की ओर बढ़ेगी, जहां झारखंड के युवाओं तक जागरूकता का यह संदेश पहुंचाया जाएगा।

केकेएन स्टेडियम में जिला स्तरीय ग्रामीण और स्वदेशी जनजातीय खेल प्रतियोगिता आयोजित

देवघर (आजाद सिपाही)। राज्य की पर्यटन, कला संस्कृति, खेलकूद एवं युवाकार्य विभाग की ओर से शनिवार को केकेएन स्टेडियम में जिला स्तरीय ग्रामीण एवं स्वदेशी जनजातीय खेल प्रतियोगिता 2025 का आयोजन हुआ। इसमें मटका दौड़, भाड़ा दौड़ एवं गुलेल शामिल था। जिला खेल पदाधिकारी संतोष कुमार यादव ने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रथम विजेता को 2500, द्वितीय को 1500 और तीसरे विजेता को 1000 रुपये की पुरस्कार राशि दी जाएगी। इस दौरान जिला शिक्षा पदाधिकारी विनोद कुमार ने बच्चों से मुलाकात कर उनका हौसला बढ़ाया। शनिवार को दूसरे दिन आयोजित प्रतियोगिता में विजेता खिलाड़ियों बालक वर्ग (गुलेल स्पर्धा) में प्रथम महेंद्र कुमार, द्वितीय दशरथ कुमार महथा और तृतीय पुरस्कार सूरज मरांडी ने जीता। वहीं बालिका वर्ग में विद्या कुमारी प्रथम, कीर्ति सिंह द्वितीय एवं प्रिया कुमारी तृतीय रही। इसके अलावे बालक वर्ग (मटका दौड़) में केदार कुमार प्रथम, सूरज मरांडी द्वितीय एवं वरुण कुमार को तृतीय पुरस्कार मिला। बालिका वर्ग में सोनाली कुमारी प्रथम, नंदनी कुमारी द्वितीय एवं छोटी कुमारी को तृतीय पुरस्कार दिया गया। जबकि बालक वर्ग (भाड़ा दौड़) में अरविंद मरांडी प्रथम, सनोज मुर्मू द्वितीय एवं उदय कुमार तृतीय पुरस्कार, वहीं, बालिका वर्ग में अंजली कुमारी प्रथम आरती कुमारी, द्वितीय एवं निशा कुमारी तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सभी विजेता खिलाड़ियों को जिला शिक्षा पदाधिकारी और जिला खेल पदाधिकारी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

मुख्यमंत्री करेंगे स्वर्ण श्रेणी में चयनित विद्यालयों को सम्मानित

सिसई (आजाद सिपाही)। मुख्यमंत्री द्वारा दिनांक 2 सितंबर को विभिन्न नियुक्ति पत्र वितरण एवं उत्कृष्ट विद्यार्थियों को सम्मानित किये जाने संबंधी कार्यक्रम में शिक्षा परियोजना द्वारा सत्यापित स्वर्ण श्रेणी प्रमाणीकरण किये गये सिसई प्रखंड के प्रखंड मुख्यालय अवस्थित उत्क्रमित उच्च विद्यालय सिसई को सम्मानित करने के लिए आमंत्रित किया गया है। ज्ञात हो कि झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा स्वर्ण श्रेणी में विद्यालय प्रमाणीकरण हेतु राज्य में 49 स्कूल चयनित हुए हैं, जिनमें 3 विद्यालयों को सांकेतिक रूप से इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया है, जिसमें गुमला जिले के सिसई प्रखंड के प्रखंड मुख्यालय अवस्थित उत्क्रमित उच्च विद्यालय का चयन किया गया है। इस चयन पर विद्यालय परिवार एवं छात्र-छात्राओं में उत्साह का माहौल है तथा जिला एवं बीआरसी सिसई के शिक्षा विभाग विभाग के पदाधिकारियों द्वारा विद्यालय के सभी शिक्षक परिवार एवं विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी गयी हैं।

पानी भरने के क्रम में पैर फिसलने से करीडा निवासी छात्रा की डूबने से मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

रायडीह । रायडीह थाना क्षेत्र के करीडा गांव निवासी जितनाथ साहु की 14 वर्षीय पुत्री संतोषी कुमारी की कुएं में डूबने से मौत हो गयी। घटना शनिवार की सुबह 8 बजे की है प्राप्त जानकारी का मुताबिक छात्रा अपनी छोटी बहन के साथ पीने के लिए कुआं से पानी भर रही थी तभी उसका पैर फिसल गया। परिजनों ने बताया कि गांव में हर घर नल जल योजना के तहत दो जलमीनार का निर्माण विभाग द्वारा कराया गया था। एक जलमीनार खराब पड़ा हुआ है। ग्रामीणों को पानी नहीं मिलता है जबकि दूसरा जलमीनार का पानी पीने योग्य नहीं है, जिससे ग्रामीण नजदीक के कुआं से पीने का पानी लेकर आते हैं। घटना के बाद ग्रामीणों की मदद से छात्रा को कुएं से बाहर निकाला गया। परिजन छात्रा को लेकर सदर अस्पताल पहुंचे, जहां डॉक्टर ने जांच के उपरांत उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं शनिवार की सुबह 10:30 बजे शव का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया गया।

शराब के नशे में बिस्तर से गिरी महिला, मौत

जारी (आजाद सिपाही)। जारी थाना क्षेत्र के जारी गांव में शराब के नशे में बिस्तर से नीचे गिरने से जारी निवासी 54 वर्षीय धनसोनी देवी की इलाज के क्रम में मौत हो गयी। प्राप्त जानकारी के मुताबिक महिला शुक्रवार की रात पड़ोसी के घर से शराब पीकर आयी खाना-पीना खाकर सभी सोने चले गए वह भी अपने कमरे में जाकर सो गयी। कुछ देर बाद धम्म की आवाज सुनाई दी। बेटे और बहू उठे और बाहर देखने लगे लेकिन उन्हें कुछ समझ में नहीं आया। फिर वापस जाकर सो गये। शनिवार की सुबह बेटा अपनी मां को उठाने गया, तो मां ने दरवाजा नहीं खोला काफी आवाज देने के बाद भी दरवाजा नहीं खुला। नीचे से देखने पर देखा की मां जमीन पर गिरी है वहीं खून का थक्का जमा हुआ है किसी अनहोनी की आशंका से बेटे ने टांगी से दरवाजा को तोड़ दिया। इसके बाद मां को बाहर निकाला गया। फिर उसे सदर अस्पताल लाया गया, जहां डॉक्टर ने उसका इलाज शुरू किया, लेकिन रात भर जमीन पर पड़े होने और इलाज के आभाव में उसकी स्थिति खराब हो गयी थी। डॉक्टर ने उसे रिम्स रेफर कर दिया, इलाज कर रहे डॉक्टर ने बताया कि उसके सिर में खून का थक्का जम गया था साथ ही उसे ब्रेन हेमरेज हुआ था। शनिवार की दोपहर 12 बजे परिजन रिम्स ले जाने की तैयारी कर रहे थे इसी बीच उसकी मौत हो गयी।

बीमारी से त्रस्त किशोरी ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

गुमला (आजाद सिपाही)। सिसई प्रखंड अंतर्गत पुसो थाना क्षेत्र के कोर कोपी महुआ टोली निवासी 17 वर्षीय सरिता कुमारी पिता गोविंद यादव ने शुक्रवार की शाम दुपट्टे के सहारे घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। प्राप्त जानकारी के मुताबिक किशोरी के सिर में ट्यूमर हो गया था जिससे उसका एक आंख बाहर निकल गया था। परिजन उसे रांची इलाज के लिए ले गये थे। जहां से उसे वेल्लोर ले जाने की बात कही गयी थी। गोविंद किसी तरह खेती बाड़ी कर अपने परिवार का पालन पोषण करता है।

ग्रामीणों ने दिखायी एकजुटता : चंदा इकट्ठा कर और श्रमदान से सड़क के गड्ढे भरे

ग्रामीणों ने कहा कि हम सिर्फ वोट देने के लिए नहीं हैं, हमें भी बुनियादी सुविधाओं का हक है

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। गुनिया गांव सहित गुमला जाने वाले रास्ते पर लंबे समय से जर्जर सड़कों की समस्या से जूझ रहे गुनिया गांव के ग्रामीणों ने आखिरकार स्वयं श्रमदान और आर्थिक सहयोग कर बसुवा नदी तक सड़क मरम्मत का बीड़ा उठाया। बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने एकजुट होकर कीचड़युक्त गड्ढों को भरा और मिट्टी-मोरम डालकर सड़क को दुरुस्त किया। ग्रामीणों का कहना है कि बरसात के दिनों में यह सड़क बड़े बड़े गड्ढे का रूप ले लेती है, जिससे आवाजाही में भारी परेशानी होती है। गांव के युवाओं से लेकर बुर्जुगों तक ने श्रमदान में सक्रिय भागीदारी की। किसी ने ट्रैक्टर उपलब्ध कराया तो किसी ने आर्थिक सहयोग दिया। सामूहिक प्रयास से मुख्य मार्ग और गुमला जाने वाले सड़क को फिलहाल आवागमन लायक बना दिया गया। ग्रामीणों ने कहा कि यह कार्य तो जनप्रतिनिधियों और प्रशासन का है, लेकिन वर्षों से उपेक्षित रहने के कारण उन्हें खुद आगे आना पड़ा। गांव से जिला मुख्यालय गुमला जाने में महज दो किलोमीटर सड़क में काफी परेशानी का सामना मरीज और आम लोगों को करना पड़ता है।

मरम्मती के दौरान ग्रामीणों ने सांसद, विधायक, स्थानीय मुखिया और प्रशासन के प्रति गहरी नाराजगी जतायी। उनका आरोप था कि चुनाव के समय वोट मांगने सभी आते हैं, लेकिन विकास की बात कोई नहीं करता। गांव की बुनियादी समस्याएं जैसे सड़क, पानी और स्वास्थ्य सुविधा अब भी अनसुलझी हैं।

ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि उनकी समस्याओं पर जल्द ध्यान नहीं दिया गया तो वे बड़े स्तर पर आंदोलन करेंगे। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ वोट देने के लिए नहीं हैं, हमें भी बुनियादी सुविधाओं का हक है। जब प्रतिनिधि और प्रशासन जिम्मेदारी नहीं निभाते, तो ग्रामीण एकजुट होकर अपनी समस्याओं का हल निकालने को मजबूर हो जाते हैं। भूतपूर्व सैनिक घसिया उरांव, पुजार उरांव, बीरी उरांव, खुदी राम उरांव, गंदूर उरांव, मोहन पहान, समाजसेवी करीमन पहान, सुखराई पहान, बैजू पहान सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे।

साहित्यकार अजय की स्वरचित पुस्तक महफिले ए गजल का लोकार्पण, प्रशस्ति पत्र और मोमेंटो से हुए सम्मानित

गुमला (आजाद सिपाही)। गोपाल किरण समाजसेवी संस्था के बैनर तले वित्तीय साक्षरता एवं साइबर सुरक्षा विषय पर एकदिवसीय ग्लोबल शोध सेमिनार सह पुस्तक लोकार्पण एवं अवार्ड समारोह का आयोजन इंस्टिट्यूट ऑफ लीगल कैंपस रांची यूनिवर्सिटी रांची के सभागार में शनिवार को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में गुमला के चेटर निवासी अजय किशोर नाथ पांडे की स्वरचित पुस्तक महफिले ए गजल का लोकार्पण किया गया साथ ही उन्हें मोमेंटो व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आगंतुक अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में देश के कई राज्यों से आए कवि साहित्यकार फिल्म निमार्ता लेखक उपस्थित थे।

धूमधाम से मनायी गयी अघोरेश्वर महाप्रभू की जन्म जयंती

गुमला (आजाद सिपाही)। आजीवन गरीबों, असहायों, दलितों, कुष्ठियों की सेवा में तल्लीन श्री सर्वेश्वरी समूह के संस्थापक अध्यक्ष परमपूज्य अघोरेश्वर महाप्रभू की जन्म जयंती के शुभ अवसर पर समूह की गुमला शाखा द्वारा उत्साह एवं श्रद्धा पूर्वक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। स्थानीय प्रार्थना गृह में प्रातः पूजन,आरती और सफल योनी का सामूहिक पाठ किया गया। इस मौके पर संध्या समूह के प्रागंण में आयोजित गोष्ठी में पंकज कुमार दास, दुर्गेश गौड़, अशोक यादव, अभय कुमार गुप्ता, आदर्श कुमार सिंह, राजकिशोर प्रसाद, शिवशंकर सारंगी, हेमलता यादव, पद्मिनी मिश्रा, सलोनी गुप्ता के द्वारा परमपूज्य अघोरेश्वर महाप्रभू के जीवन वृत्त तथा श्री सर्वेश्वरी समूह के कार्यवृत्त पर विचार प्रकट किया गया। कार्यक्रम में संजय महापात्र, कृष्ण कुमार गुप्ता, सुबोध कुमार दास, नंद कुमार सिंह, श्यामा कांत मिश्रा, ब्रजेंद्र कुमार गौड, अभय कुमार गुप्ता, एके यादव आदि उपस्थित थे।

चैनपुर में अंचल दिवस का हुआ आयोजन

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर प्रखंड में शनिवार को अंचल दिवस का आयोजन किया गया। इसमें उपायुक्त प्रेरणा दीक्षित ने चैनपुर अंचल के विभिन्न गांवों से पहुंचे आवेदकों की जमीन संबंधी समस्याओं को सुना। इस दौरान जमीन विवाद, म्यूटेशन, सामाजिक सुरक्षा, प्रमाण पत्र से जुड़े कुल 34 आवेदन प्राप्त हुए, जिसमें 24 मामलों का निबटारा किया गया। भू-धारण प्रमाण पत्र के एक भी आवेदन नही आया। वहीं भूमि सत्यापन प्रतिवेदन 4 में से 4 पारिवारिक सूची 3 में से 3, पंजी टू में सुधार संबंधित 2 में से 2 का सुधार, सामाजिक सुरक्षा पेंशन 10 में से 10 मामलों का ऑन द स्पॉट निष्पादन किया गया। जबकि शेष 10 मामलों की जांच कर शीघ्र निष्पादन के लिए संबंधित विभागों को निर्देशित किया गया। उपायुक्त ने मौके पर ही दुग्ध उत्पादक पशुपालकों को पशु पोषण किट 5 लाभुकों को, राशन कार्ड 12, पारिवारिक सदस्यता 3, लगान रशीद 2, पेंशन प्रमाण पत्र 8, आम बागवानी 10, साइकिल 20 जॉब कार्ड 12, प्रवेश स्वीकृति पत्र प्रदान किया। वहीं पारिवारिक व आपसी भूमि विवाद से संबंधित मामलों में उपायुक्त ने आवेदकों को प्रतिमाह के 26 तारीख को थाना में आयोजित होनेवाले थाना दिवस के संबंध में जानकारी देते हुए थाना में मामले का निष्पादन कराने की बात कही।

टोटो में घटिया पीसीसी सड़क निर्माण कार्य पत्थर की जगह लगाया जा रहा बोल्डर

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला । गुमला प्रखंड के टोटो में घटिया पीसीसी सड़क निर्माण कार्य का मामला प्रकाश में आया है। योजना 15 वें वित का है। जिसे लाभुक समिति टोटो द्वारा कराया जा रहा है। जो अफजल मियां के घर से कलभर्ट तक 220 फीट का है। प्राकालित राशि 2 लाख 49 हजार 4 सौ रुपये है। पीसीसी सड़क निर्माण कार्य में पत्थर की जगह छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़े और बोल्डर को रखा जा रहा है साथ ही फाउंडेशन भी नहीं दिया जा रहा है जिससे सड़क जल्द ही टूट जायेगा। सरकारी राशि की बंदरबांट की जा रही है। शनिवार की अपराह्न 4 बजे ग्रामीणों ने बताया योजना के कनीय अभियंता मनीष कच्छप और सहायक अभियंता शंकर किंडो है लेकिन वे कभी कार्य स्थल पर विजिट के लिए नहीं आते हैं। ग्रामीणों ने निर्माण कार्य की जांच की मांग की है।

वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

विशुनपुरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड स्थित राजकीयकृत मध्य विद्यालय में शनिवार को विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को वित्तीय साक्षरता से संबंधित योजनाओं और उनके लाभों की जानकारी देना था। विद्यार्थियों को बताया गया कि साइबर अपराध से कैसे बचा जाये और किसी धोखाधड़ी की स्थिति में तुरंत हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क करना चाहिए।

कार्तिक नगर निवासी राजेश परिजनों को सुरक्षित मिला

सिसई (आजाद सिपाही)। प्रमुखता के साथ खबर प्रकाशित होने के बाद सिसई थाना क्षेत्र के कार्तिक नगर निवासी स्वर्गीय बालू भगत का 35 वर्षीय पुत्र राजेश भगत आज शनिवार की दोपहर को परिजनों को सुरक्षित मिला। बहन सुनीता कुमारी ने बताया कि अपने स्तर से खोजबीन कर रहे थे उसी दौरान बिशनपुर के किसी सज्जन को मेरा भाई मिला था। वहीं उन्होंने राजेश को सुरक्षित सिसई पहुंचा दिया था। उसके बाद स्थानीय लोगों के सहयोग से घर पहुंचाया गया।

आदि कर्मयोगी अभियान के तहत ब्लॉक ओरियंटेशन वर्कशॉप संपन्न

आजाद सिपाही संवाददाता

बिशुनपुर। प्रखंड कार्यालय सभागार में शनिवार को आदि कर्मयोगी अभियान के अंतर्गत ब्लॉक ओरियंटेशन वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य ब्लॉक स्तर की टीमों और नागरिक समाज संगठनों को ग्राम कार्य पुस्तिका से जोड़ते हुए सामुदायिक भागीदारी को सशक्त बनाना था, ताकि जनजातीय गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, पेयजल एवं स्वच्छता समेत अन्य क्षेत्रों में सतत और सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी सुलेमान मुंडरी ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि विकास कार्य तभी सार्थक होंगे जब प्रत्येक पंचायत में ग्राम कार्य पुस्तिका का सही उपयोग करते हुए योजनाओं का पारदर्शी क्रियान्वयन किया जाये। वहीं अंचल अधिकारी शेखर वर्मा ने कहा कि ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी और विभागों के बीच आपसी तालमेल से ही क्षेत्र की समस्याओं का समाधान संभव है। प्रशिक्षण सत्र में कनीय अभियंता अजीत कुमार पांडे, एवं अनुपम लकड़ा पेयजल एवं स्वच्छता विभाग और महिला पर्यवेक्षिका रंजना सोनी ने विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने ग्राम कार्य पुस्तिका की प्रक्रिया, समुदाय की भूमिका और विभागीय समन्वय पर जोर दिया। कार्यक्रम के दौरान यह संकल्प लिया गया कि ग्राम स्तर पर योजनाओं की निगरानी व क्रियान्वयन समुदाय की सक्रिय भागीदारी से होगा। इससे जनजातीय समाज की शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूती मिलेगी तथा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और विकास की नई दिशा स्थापित होगी। इस मौके पर सभी पंचायतों के मुखिया, महिला पर्यवेक्षिकाएं, प्रखंड एवं अंचल कर्मी तथा विभिन्न विभागों के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें
www.azadsipahi.in

एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

घाघरा (आजाद सिपाही) । प्रखंड परिसर सभागार में शनिवार को आदि कर्मयोगी अभियान के तहत जनजातीय गांवों में विजन निर्माण को लेकर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बीडीओ दिनेश कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर प्रखंड के अधिकारियों समेत क्षेत्र के विभिन्न पंचायतों से आए जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान विशेषज्ञों ने बताया कि अभियान का मुख्य उद्देश्य आदिवासी समाज में आत्मनिर्भरता, विकास की भागीदारी और ग्राम स्तर पर दीर्घकालिक विजन निर्माण करना है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, वन, कृषि, रोजगार व सामाजिक चेतना को सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। बीडीओ दिनेश कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि आदि कर्मयोगी अभियान आदिवासी समाज व गांव की प्रगति की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। बता दें कि कार्यक्रम का उद्देश्य आदिवासी गांवों में सामूहिक भागीदारी से विकास की दीर्घकालिक रूपरेखा तैयार करना और समाज को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना है।

कौन होगा गुमला का अगला कांग्रेस जिला अध्यक्ष?

6 सितंबर को कई नामों पर विचार करेंगी पर्यवेक्षकों की टीम

आफताब अंजुम

गुमला (आजाद सिपाही)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने झारखंड में जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्षों के चयन की प्रक्रिया शुरू कर दी है। संगठन सृजन 2025 के अंतर्गत इस कार्यक्रम की शुरूआत की जा चुकी है। इसके लिए एआईसीसी द्वारा राज्य के विभिन्न जिलों के लिए 25 पर्यवेक्षकों की नियुक्ति भी की गयी है। जिन्हें जिला कांग्रेस समिति अध्यक्षों के चयन का दायित्व सौंपा गया है।

एक एआईसीसी और तीन पीसीसी पर्यवेक्षकों की निगरानी में होगी चयन प्रक्रिया : अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर, प्रत्येक जिले के लिए तीन पीसीसी पर्यवेक्षकों की एक टीम गठित की गयी है। जिनमें बंधु तिर्की, अजय नाथ शहदेव, और संजय पासवान के नाम शामिल हैं। जो इस पूरी प्रक्रिया के लिए नियुक्त एआईसीसी पर्यवेक्षक रघु शर्मा के साथ के साथ मिलकर कार्य करेंगे।

कई दावेदार हैं जिला अध्यक्ष की दौड़ में : गुमला में कांग्रेस के जिला अध्यक्ष के लिए चयन प्रक्रिया शुरू हो गई है। जिले में चयन के लिए कई दावेदार अपनी दावेदारी पेश करने लगे हैं। हालांकि दावेदारों की कोई आधिकारिक सूची अभी तक सामने नहीं आई है। लेकिन कांग्रेस के भीतर खाने से जो खबर निकलकर सामने आ रही है उनमें कांग्रेस से कई दिग्गजों के नाम सामने आ रहे हैं।

चैतू उरांव : सबसे पहले दावेदार के रूप में मौजूदा जिला अध्यक्ष चैतू उरांव है। उनके चहेतों के अनुसार वह संगठनात्मक दृष्टिकोण से काफी मजबूत है, और उन्होंने अपने कार्यकाल में संगठन को मजबूत बनाए रखा है उनके कार्यकाल में गुमला जिले के गुमला विस क्षेत्र के विधायक भूषण तिर्की और बिशुनपुर विस क्षेत्र के विधायक चमरा लिंडा दोनों महागठबंधन के उम्मीदवार आज विधायक हैं। वहीं गुमला जिले के पालकोट प्रखंड अंतर्गत सिमडेगा विधानसभा क्षेत्र से भी कांग्रेस के प्रत्याशी भूषण बाड़ा ने उनके कार्यकाल में जीत दर्ज की है। साथ ही लोकसभा चुनाव में भी गुमला जिले से लोहरदगा संसदीय क्षेत्र के कांग्रेसी उम्मीदवार सुखदेव भगत को जीत हासिल हुई है।

रमेश कुमार : दूसरे प्रत्याशी के रूप में रमेश कुमार चीनी का नाम आ रहा है। रमेश कुमार चीनी समाज सेवा से लेकर राजनीतिक क्षेत्र में अपनी मजबूत पकड़ रखते हैं। वह जन समस्याओं और जान मुद्दों को लेकर हमेशा जनता के साथ सड़क पर खड़े नजर आते हैं। संगठन में उनकी भी काफी पकड़ मानी जाती है। फेडरेशन चेंबर के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष होने के कारण व्यापारियों में भी उनकी पकड़ है।

संतोष गुप्ता गुड्डू : अगले प्रत्याशी के रूप में संतोष गुप्ता गुड्डू देखे जा रहे हैं। यह भी राजनीतिक मैदान में अपनी पकड़ काफी मजबूत रखते हैं। इनके द्वारा भी कई ऐसे कर किये गये हैं जो कांग्रेस में संजीवनी का काम सिद्ध हुए हैं। पालकोट से कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष रह चुके संतोष गुप्ता जिले में बेहतर प्रखंड अध्यक्ष होने का दो-दो बार गौरव प्राप्त कर चुके हैं। संवेदकों के बीच काफी लोकप्रिय होने के कारण कई वर्षों से संवेदक संघ के अध्यक्ष हैं। साथ ही हर धर्म समुदाय में इनकी खासी पैठ है।

राजनील तिग्गा : कांग्रेस जिला अध्यक्ष के एक प्रत्याशी के रूप में वर्तमान सांसद प्रतिनिधि राजनील तिग्गा को भी देखा जा रहा है। इनका भी कांग्रेस में काफी लंबा कार्यकाल रहा है। अपने अनुभव लोकप्रियता के कारण यह कई वर्षों तक युवा कांग्रेस के जिला अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आदिवासी और अल्पसंख्यकों के बीच में इनकी अच्छी पहचान है। सूझबूझ से निर्णय लेने में यह महारत रखते हैं।

कृष्णा लोहरा : घाघरा प्रखंड के कृष्ण लोहरा का भी नाम कांग्रेस के जिला अध्यक्ष के दावेदारों में जा रहा है। कांग्रेस के लिए लंबे समय से संघर्ष करने वाले कृष्ण द्वारा काफी दिनों तक घाघरा प्रखंड के कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष के पद का निर्वाह किया गया है। उनके कार्य कुशलता को देखते हुए उन्हें जिला कमेटी में लिया गया। कांग्रेस के लिए होने वाले हर आंदोलन में कृष्ण सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हैं और कांग्रेस के आला कमान के द्वारा दिए गए दायित्व का निर्वाह करने में कभी भी पीछे नहीं हटते।

अकील रहमान : मुस्लिम अल्पसंख्यक उम्मीदवार के रूप में कई वर्षों तक कांग्रेस के जिला महासचिव रहे अकील रहमान युवा और कर्मठ कांग्रेसी के रूप में देखे जाते हैं। जिला अध्यक्ष के दावेदार के रूप में इनका नाम भी लिया जा रहा है। अपने कार्यकाल के दौरान कांग्रेस को जिला स्तर पर एक ऊंचाई तक ले जाने में अकील रहमान के योगदान को कांग्रेसी भुल नहीं सकते।

मोख्तार आलम : मौजूदा असंगठित कामगार कांग्रेस के जिला अध्यक्ष मुख्तार आलम को भी जिला अध्यक्ष की दौड़ में शामिल माना जा रहा है। आने वाले दिनों में इनकी भी दावेदारी पेश करने की बात अंदर खाने से छनकर आ रही है। मुख्तार आलम युवा ऊर्जा के साथ कांग्रेस के लिए काम कर रहे हैं। साथ ही असंगठित कामगारों के लिए दिन-रात लगे रहना उनकी दिनचर्या में शामिल है। प्रताड़ित और पीड़ित लोगों को न्याय दिलाना, उन्हें सरकारी योजनाओं से लाभान्वित करना और मुसीबत में फंसे लोगों को मुसीबत से निकलना जैसे इनकी ड्यूटी है।

रोशन बरवा : पूर्व जिला अध्यक्ष रोशन बरवा भी इस वर्ष कांग्रेस के गुमला जिला अध्यक्ष के दावेदार हो सकते हैं। रोशन बरवा ने भी अपने कार्यकाल में अच्छा प्रदर्शन किया था। इन्हें अब तक गुमला जिला अध्यक्ष के सबसे युवा जिला अध्यक्ष के रूप में देखा जाता है। गुमला से लेकर प्रदेश तक इनकी अच्छी खासी पैठ है। लोगों के दर्द को लेकर कभी भी कहीं भी जाने और आंदोलन करने से यह नहीं रुकते।

आगामी 6 सितंबर को को पर्यवेक्षकों के समक्ष पेश होगी दावेदारी : कांग्रेसी राजनीतिक जानकारों का कहना है कि आगामी 6 सितंबर को पर्यवेक्षकों का डेलीगेट गुमला आएगा, और जिला अध्यक्ष के नाम पर चर्चा परिचर्चा की जाएगी। संभवतः यह परिचर्चा गोपनीय भी हो सकती है। जिसमें प्रखंड अध्यक्ष से लेकर पंचायत स्तर के पदाधिकारियों और कार्यकताओं का बयान और उनका मंतव्य बहुत अहमियत रखेगा।

Office of District Education Officer, Latehar
Request for Proposal (RFP)
Very short Tender

Sl.	Particular	Details
a.	Name of the work	Request for Proposal(RFP)for "Installation, Commissioning and Maintenance of ARTIFICIAL INTELLEGANCE & TIKERING LABS" in some selected govt. schools of Latehar district. Latehar district".
b.	Availability of RFP document at	Digital Copy fromhttp://jharkhandtenders.gov.in
ˎ	Date of Issue of RFP	30 / 08 /2025
d.	Last Date for submission of Proposal	10/ 09 /2025 at 05:00 PM
e.	Date of opening of Technical Proposal	12/ 09/2025 at 11.00AM
f.	Dateof openingof Financial Proposal	12 / 09 /2025
g.	Time allowed for completion	90 days from the date of the work order.
h.	Earnest money deposit (EMD)(Refundable)	INR ...1,00,000/-(Rupees one lakh only) http://jharkhandtenders.gov.in
i.	Tender Fee	Rs. 5000/- (Rupees five thousand only) Non-refundable through http://jharkhandtenders.gov.in
L.	Method of Selection	Cost-BasedSelection(CBS)Method; Stage1:The eligibility criteria document sasperAnnexure -A,Bid Fee & EMD submitted by the bidders will beevaluated inthe first stage.The bidders meeting the technical evaluation criteria only will besh or tlisted for further financial bide valuation. **Stage2:**Out of the technicallye ligible bidders,the agency submitting the **lowest financialbid** will be awarded the project. **The Rate quoted by the agencies should be valid for 1 years.**

Note:
The District Education Officere serves the right to change any schedule. Please visit the website mentionedin the RFP document regularly. Proposals must be receive dnolater than the time,and date mentione din the FactSheet. Proposals that are received after the deadline will not be considered. The District Education Office, Late hare serves the right to cancel or change the tender without any prior notice/information.

District Education Officer Latehar

PR 360843 Human Resource Developement(25-26)D

खेलों से होता है शारीरिक और मानसिक विकास: गिरिडीह डीसी

गिरिडीह (आजाद सिपाही)। राज्य की पर्यटन कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग की ओर से राष्ट्रीय खेल दिवस पर गिरिडीह आउटडोर स्टेडियम में आयोजित तीन दिवसीय विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का शनिवार को दूसरा दिन रहा। इस अवसर पर बालक एवं बालिका वर्गों के 200 से अधिक खिलाड़ियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। समारोह की शुरूआत गिरिडीह के जिला खेल पदाधिकारी ने अतिथियों को फूलदान भेंट कर किया। इसके बाद डीसी, डीडीसी एवं अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जिला खेल पदाधिकारी राष्ट्रीय खेल दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और आयोजित प्रतियोगिताओं के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। वहीं, डीसी ने अपने संबोधन में सभी खिलाड़ियों से कहा कि खेलों से न केवल अनुशासन और टीम भावना विकसित होती है, बल्कि यह हमें शारीरिक और मानसिक रूप से भी स्वस्थ रखता है। हमें प्रतिदिन कुछ समय खेल और व्यायाम को अवश्य देना चाहिए, ताकि फिट और स्वस्थ रह सकें। कहा कि हमारे जीवन में खेलों का बड़ा महत्व होता है। मनुष्य के स्वस्थ शरीर और दिमाग को विकसित करने के लिए खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई प्रकार के खेल होते हैं, क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, रनिंग, साइकिलिंग, योगा आदि भी बीमारी से बचाव का एक प्रमुख कारण है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए खेल काफी महत्वपूर्ण है। युवा वर्ग में हम सब खेल के प्रति ज्यादा इच्छुक होते हैं। इसलिए खेल को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं और शारीरिक फिटनेस पर ध्यान दे। इस मौके पर डीसीसी स्मृता कुमारी, अनुमंडल पदाधिकारीश्रीकांत या विस्पुते, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी अंजना भारती आदि उपस्थित थे।

खेल दिवस पर आयोजित मिनी मैराथन दौड़ का सांसद ने किया उद्घाटन

खेल के प्रति झारखंड सरकार का रवैया उदासीन: ढुल्लू महतो

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। मेजर ध्यानचंद की जयंती (राष्ट्रीय खेल दिवस) पर एंजेला आर्चरी अकादमी के तत्वावधान में मिनी मैराथन दौड़ का आयोजन हुआ। दौड़ सेक्टर 5 स्थित पुस्तकालय मैदान से शुरू हुई। जिसमें नगर के सभी खेल प्रेमियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इसका शुभारंभ धनबाद के सांसद ढुल्लू महतो ने हरी झंडी दिखाकर किया। वहीं, गोमिया के पूर्व विधायक लंबोदर महतो ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। इस दौड़ का आयोजन पांच किलोमीटर और 10 किलोमीटर संवर्ग में किया गया। इस अवसर पर सांसद ढुल्लू महतो ने कहा कि झारखंड में खेल प्रतिभा की कमी नहीं है, जरूरत है तो उसे उचित मंच देने की। उन्होंने आरोप लगाया कि झारखंड सरकार का खेल एवं खिलाड़ियों के प्रति उदासीन रवैया है। सरकार का उचित प्रोत्साहन यहां के खेल प्रेमियों को नहीं मिल पा रहा, जो दुखद है। कहा कि सांसद के तौर पर खिलाड़ियों को उनकी जब भी जरूरत महसूस होगी वह पूरी तरह उनके साथ खड़े रहेंगे। वहीं, एंजेला सिंह ने कहा कि उनका हमेशा प्रयास रहा है कि बच्चे मोबाइल छोड़ें और मैदान में दौड़े। उन्होंने शिक्षा में खेल को संपूर्ण विषय का दर्जा देने की जरूरत पर बल दिया।

मिनी मैराथन दौड़ के उद्घाटन पर मौजूद सांसद ढुल्लू महतो।

रामगढ़ स्थित एसआरयू संयंत्र को पाइप्ड नेचुरल गैस से होगी आपूर्ति

सेल-एसआरयू और आईओसीएल के बीच एमओयू

बोकारो (आजाद सिपाही)। इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी सभागार में स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) और इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) भारत सरकार की दो महारत्न कंपनियों के बीच शुक्रवार को एक एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। इस अवसर पर बोकारो इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी बीके तिवारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अधिशासी निदेशक (एसआरयू) पीके रथ, अधिशासी निदेशक (आईओसीएल) मनोज कुमार शर्मा, मुख्य महाप्रबंधक (एसआरयू-ऑपरेशन) आरके सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (एसआरयू-प्रोजेक्ट्स) राजन आनंद, महाप्रबंधक (आईओसीएल) एके बेहरा, महाप्रबंधक एवं यूनिट इंचार्ज (एसआरयू-आईएफआईसीओ एवं रांची रोड) पीके गुप्ता और महाप्रबंधक (एसआरयू-प्रोजेक्ट्स) केशरी नंदन आदि मौजूद रहे। इस एमओयू के अंतर्गत रामगढ़ स्थित सेल-एसआरयू यूनिट (आईएफआईसीओ संयंत्र) को पाइप्ड नेचुरल गैस की आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। अब तक यहां टनल किल्न में रिफ्रेक्ट्री ईंटों की फायरिंग के लिए फर्नेस ऑयल का प्रयोग किया जाता रहा है। पीएनजी के उपयोग से न केवल ईंधन दक्षता और परिचालन सुरक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि होगी, बल्कि फर्नेस ऑयल के भंडारण, परिवहन और हीटिंग से जुड़े जोखिम भी समाप्त होंगे। इसके अतिरिक्त, रिफ्रेक्ट्री ईंटों की गुणवत्ता में सुधार होगा, पर्यावरण एवं ऊर्जा संरक्षण मानकों का बेहतर अनुपालन सुनिश्चित होगा तथा कार्बन डाइऑक्साइड, कण पदार्थ और अन्य हानिकारक गैसों के उत्सर्जन में भी उल्लेखनीय कमी आएगी। यह पहल न केवल सेल की पर्यावरण संरक्षण और सतत औद्योगिक संचालन के प्रति प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करती है, बल्कि स्वच्छ ऊर्जा समाधानों को बढ़ावा देने की भारत सरकार की नीति को भी गति और मजबूती प्रदान करती है।

निदेशक प्रभारी वीरेंद्र ने बोकारो रेलवे स्टेशन परिसर में किया 'इस्पात उद्यान' का लोकार्पण

बोकारो (आजाद सिपाही)। बीएसएल की ओर से बोकारो स्टील सिटी रेलवे स्टेशन परिसर में विकसित 'इस्पात उद्यान' का लोकार्पण निदेशक प्रभारी वीरेंद्र कुमार तिवारी ने किया। इस मौके पर अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) सुरेश रंगानी, अधिशासी निदेशक (एसआरयू) पीके रथ, अधिशासी निदेशक (मानव संसाधन) राजश्री बनर्जी, अधिशासी निदेशक (माइंस) विकास मनवटी, अधिशासी निदेशक (सामग्री प्रबंधन) सीआर मिश्रा, अधिशासी निदेशक (परियोजनाएं) अनीष सेनगुप्ता, अधिशासी निदेशक (संकार्य) प्रिय रंजन, बोकारो क्षेत्र के क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक विनीत कुमार, बीएसएल के विभिन्न विभागों के मुख्य महाप्रबंधक, बीएसएल एवं भारतीय रेलवे के वरीय अधिकारी आदि उपस्थित थे। 'इस्पात उद्यान' का विकास बीएसएल द्वारा अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत किया गया है। यह उद्यान न केवल हरियाली और सौंदर्य का अनुपम संगम प्रस्तुत करता है, बल्कि देश की 'आत्मनिर्भर भारत' पहल को भी मजबूती प्रदान कर रहा है। यहां स्वदेशी निर्माण एवं प्रौद्योगिकी की महत्ता को प्रदर्शित करने वाला स्मारक स्थापित किया गया है। साथ ही आकर्षक वाटर फाउंटेन, सुसज्जित पाथवे, हरित वृक्ष-पौधे एवं आधुनिक प्रकाश व्यवस्था की सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। विभिन्न सौंदर्यवर्धक संरचनाएं इस उद्यान की शोभा को और भी निखार रही हैं। इस अवसर पर निदेशक प्रभारी ने कहा कि बोकारो इस्पात संयंत्र सदैव सामुदायिक विकास और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अग्रणी रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि 'इस्पात उद्यान' यात्रियों के लिए विश्राम और आनंद का एक आकर्षक केंद्र बनेगा और बोकारो शहर की नई पहचान बनेगा। इसकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विरासत को और अधिक समृद्ध करेगा।

पंचायत से जिला स्तर तक बेहतर खेल का माहौल बनाने को प्रशासन प्रतिबद्ध : डीसी

- बोकारो में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के खेल प्रतियोगिताओं का होगा आयोजन, सभी खेलों को दिया जायेगा बढ़ावा
- राष्ट्रीय खेल दिवस पर जिला रामरूद्र मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय चास में विभिन्न प्रतियोगिताओं का हुआ आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। राष्ट्रीय खेल दिवस पर जिला रामरूद्र मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय चास में खेल विभाग की ओर से विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। जिसका शुभारंभ डीसी अजय नाथ झा, डीडीसी शताब्दी मजूमदार, अपर समाहर्ता मो मुमताज अंसारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी जगरनाथ लोहरा, जिला खेल पदाधिकारी हेमलता बुन और प्रधानाध्यापक ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर डीसी ने कहा कि जिला प्रशासन पंचायत स्तर से लेकर जिला स्तर तक खेल के लिए बेहतर माहौल बनाने को प्रतिबद्ध है। कहा कि खेल को खेल की भावना से खेला जाए। छात्र-छात्राओं को पढ़ाई के साथ खेल में भी बेहतर करने को लेकर प्ररित किया। कहा कि खेल-संगीत आदि में भी टॉपर होकर करियर बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में बोकारो में भी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। क्योंकि जिले में खेल प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, आवश्यकता है उन्हें उचित मंच और संसाधन देने की। प्रशासन हरसंभव सहयोग प्रदान करेगा। उन्होंने जिले के विभिन्न खेल संघों से आह्वान किया है कि वे आपस में समन्वय स्थापित कर वार्षिक खेल कैलेंडर तैयार करें। इस अवसर पर राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर ग्रामीण एवं स्वदेशी खेलो का आयोजन हुआ। जिसमें इंडोर गेम मे शतरंज (बालक एवं बालिका वर्ग) और स्वदेशी एवं ग्रामीण खेल में गुलेल (बालक वर्ग), भार दौड़(बालक वर्ग) एवं मटका दौड़ (बालिका वर्ग) में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें 14 से 30 आयु वर्ग के कुल 400 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। शतरंज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रामप्रताप सिंह, द्वितीय स्थान आदित्य राय तथा तृतीय स्थान प्रेम आनंद ने हासिल किया। जबकि गुलेल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान गुलाम गौश हाशमी तथा द्वितीय स्थान अनुज कुमार सिंह ने प्राप्त किया। वहीं, भार दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर संदीप कुमार, द्वितीय स्थान पर आदित्य कुमार प्रामाणिक व तृतीय स्थान पर सन्नी कुमार ने बाजी मारी।

सतत सीखने से ही संभव है उत्कृष्ट प्रशासन : अजय

बोकारो (आजाद सिपाही)। आदिवासी समाज को उनका हक-अधिकार दिलाने, उनका सर्वांगीण विकास को लेकर केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय की ओर से आदि कर्मयोगी अभियान-रेस्पॉन्सिव गवर्नेंस प्रोग्राम की शुरूआत की गई है। इसी क्रम में शनिवार को चास स्थित वीणा रेजेंसी सभागार में प्रखंड स्तरीय मास्टर ट्रेनरों के प्रशिक्षण को लेकर तीन दिवसीय ड्रिस्ट्रिक्ट प्रोसेस लैब (प्रशिक्षण) का शुभारंभ हुआ। जिसका उद्घाटन डीसी अजय नाथ झा, डीडीसी शताब्दी मजूमदार, डीपीएलआर मेनका, अपर समाहर्ता मो मुमताज अंसारी, डीसीएलआर प्रभात दत्ता, जिला कल्याण पदाधिकारी एनएस कुजूर, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी डॉ सुमन गुप्ता और वरीय लेखा पदाधिकारी पंकज दूबे आदि ने किया। इस अवसर पर डीसी ने कहा कि प्रशिक्षण केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि यह कार्यकुशलता और व्यक्तित्व विकास का माध्यम है। प्रशिक्षण में बताई गई बातों को पूरे मनोयोग से सुनें और आत्मसात करें। कहा कि सतत सीखने से ही उत्कृष्ट प्रशासन संभव है। उधर, प्रशिक्षण के पहले दिन जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनरों ने अधिकारियों और कर्मियों को विभिन्न प्रशासनिक प्रक्रियाओं, बेहतर कार्य पद्धतियों, नवाचारों और समस्या समाधान के व्यवहारिक अनुभव से अवगत कराया।

जिला पुस्तकालय में व्यवस्थाओं को अविलंब दुरूस्त करें

बोकारो (आजाद सिपाही)। डीसी अजय नाथ झा एवं डीडीसी शताब्दी मजूमदार ने शनिवार को बोकारो जिला रामरूद्र मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय चास स्थित पुस्तकालय का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने विद्यालय के पुस्तकालय की स्थिति एवं व्यवस्था को लेकर असंतोष व्यक्त किया। उन्होंने डीइओ जगरनाथ लोहरा को अविलंब आवश्यक प्रस्ताव तैयार कर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया, ताकि छात्रों को अनुकूल वातावरण में अध्ययन की सुविधा मिल सके। कहा कि जिला पुस्तकालय में बुनियादी सुविधाओं का व्यवस्थित होना जरूरी है। रौशनी और पंखों की व्यवस्था दुरुस्त होनी चाहिए। निरीक्षण क्रम में विद्यालय की छात्रा सुप्रिया ने डीसी को उनका स्केच चित्र सौंपा। जिस पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए छात्रा के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

आद्रा डीआरएम ने किया भागा स्टेशन का निरीक्षण

झरिया/जोड़ापोखर (आजाद सिपाही)। आद्रा डिवीजन के डीआर एम मुकेश गुप्ता ने शनिवार को भागा रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। उन्होंने प्रधानमंत्री अमृत योजना के तहत चल रहे सौंदर्यीकरण कार्यों का जायजा किया। साथ ही स्टेशन मास्टर एवं आइडब्ल्यू को निर्देश दिया कि जल्द से मजदूर विश्राम गृह, बुकिंग काउंटर, रिटर्निंग रूम के काम को पूरा करें। वहीं, पांच नंबर, एक नंबर साइडिंग यार्ड का भी जायजा लिया और साइडिंग में ट्रकों को रखने पर बड़ा बाबू को फटकार लगाई। उन्होंने तत्काल ट्रकों को हटाने का निर्देश दिया। कहा कि स्टेशन परिसर की दीवार को और ऊंचा किया जाये। निरीक्षण के क्रम में डीआरएम ने रेलवे की जमीन पर कई फलदार पौधे भी लगाये। कहा कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए यह आवश्यक है। आद्रा डिवीजन में भागा स्टेशन दूसरा बड़ा रेलवे को राजस्व देने वाला स्टेशन हैं। इस स्टेशन पर यात्रियों के लिए और अधिक सुविधा उपलब्ध किया जायेगा।

बीएसएल से सेवानिवृत कर्मचारियों को दी गई विदाई

बोकारो (आजाद सिपाही)। बोकारो स्टील प्लांट (बीएसएल) से अगस्त'2025 माह में सेवानिवृत होने वाले कर्मियों को मानव संसाधन के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग के मेन ऑडिटोरियम में समारोह आयोजित कर विदाई दी गयी। इसमें बतौर मुख्य अतिथि बोकारो जनरल हॉस्पिटल के प्रभारी डॉ बीबी करुणामय एवं मुख्य महाप्रबन्धक (मानव संसाधन) अंजनी कुमार शरण उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ बीबी करुणामय ने सेवानिवृत्त हो रहे सभी कर्मियों को उनके निष्ठापूर्ण सेवा के लिए बधाई देते हुए उनके सुखद एवं समृद्ध भविष्य की कामना की। बतातें चलें कि अगस्त'2025 में बोकारो स्टील प्लांट से कुल आठ अधिशासी एवं 23 अनाधिशासी कर्मी सेवानिवृत्त हो रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन सहायक महाप्रबंधक (मानव संसाधन) डॉ नंदा प्रियदर्शिनी ने किया।

इएसएल सीएसआर के मेगा स्वास्थ्य शिविर में 300 ग्रामीणों को मिला लाभ

बोकारो (आजाद सिपाही)। इएसएल स्टील लिमिटेड ने अपने स्वास्थ्य कार्यक्रम प्रोजेक्ट आरोग्य के तहत मध्या विद्यालय, ईस्ट महल में एक मेगा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया। जिसका उद्देश्य ग्रामीण समुदाय को निःशुल्क और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराना था। शिविर का उद्घाटन ईस्ट महल की मुखिया शीतल सिंह, अभिषेक कुमार (सिक्योरिटी हेड, ईएसएल) और कुणाल दरिपा (हेड-सीएसआर, ईएसएल) ने स्थानीय नेताओं और समुदाय के सदस्यों की उपस्थिति में किया। शिविर में डॉक्टरों की टीम ने ग्रामीणों को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच करने के साथ ही परामर्श दिया। करीब 300 लोगों ने प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया और आवश्यकता अनुसार आगे की चिकित्सा सलाह प्राप्त की। इस शिविर को संजीव नेत्रालय और किशोर डेंटल क्लिनिक ने सहयोग दिया और सिटिजन्स फाउंडेशन (प्रोजेक्ट आरोग्य का एनजीओ पार्टनर) ने समन्वय किया। इस अवसर पर अभिषेक कुमार (सिक्योरिटी हेड, ईएसएल) ने कहा कि ऐसे शिविर ग्रामीणों को एक ही मंच पर जरूरी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराते हैं। ईएसएल सीएसआर इस दिशा में हमेशा समर्पित है। वहीं, कुणाल दरिपा (हेड-सीएसआर, ईएसएल) ने कहा कि हमारा प्रयास है कि समुदाय तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचें और वास्तविक बदलाव लायें। जबकि मुखिया शीतल सिंह ने कहा कि यह पहल सराहनीय है। इतने बड़े स्तर पर डॉक्टरों की टीम को गाँव में लाना वास्तव में प्रभावशाली कदम है।

अनियंत्रित होकर पलटा कपड़ा लदा कंटेनर

राजगंज (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के महेशपुर चौक के सर्विस रोड पर शनिवार को कपड़े से लदा एक कंटेनर अचानक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया। हालांकि इस हादसे में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। पर बिजली का तार टूट जाने से कुछ देर के लिए अफरातफरी मच गयी। चालक अरविंद राजपूत की मानें तो कंटेनर उत्तर प्रदेश के मैनपुरी से कपड़ा लेकर बिहार के पटना जा रहा था। तभी महेशपुर चौक के सर्विस रोड पर वाहन का संतुलन बिगड़ जाने से यह हादसा हुआ। इस घटना में चालक को केवल मामूली चोटें आई हैं।

गौशाला पुल पर हादसा, ट्रक-टेपों की भिड़ंत में एक की मौत, छह घायल

कतरास (आजाद सिपाही)। कतरास थाना क्षेत्र के गौशाला पुल के पास शनिवार की दोपहर एक ट्रक ने टेपों को पीछे से टक्कर मार दी। इस हादसे में उत्तर प्रदेश के आगरा के रहने वाले जाहिद की मौके पर ही मौत हो गई। बताया जा रहा कि टक्कर लगते ही जाहिद टेपों से बाहर गिर गया और ट्रक उसे रौंदते हुए फरार हो गया। वहीं, हादसे में टेपों में सवार छह यात्री घायल हो गये। जिसमें चांद मोहम्मद और महावीर कुम्हार की स्थिति नाजुक बताई जा रही है। सभी घायलों को धनबाद के एसएनएमएमसीएच भेजा गया है।

बीएसएल-एनडीडीबी के बीच प्रतिदिन 2300 गिफ्ट मिल्क वितरण के लिए एमओए पर हुआ हस्ताक्षर

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट (बीएसएल) और एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रिशन (एनएफएन) के बीच शनिवार को इस्पात भवन में एक समझौता ज्ञापन (एमओए) पर हस्ताक्षर किया गया। इसके तहत सीएसआर-सहायता प्राप्त विभिन्न स्कूलों और सरकारी स्कूलों में प्रतिदिन 2300 गिफ्ट मिल्क पैक बच्चों को निः शुल्क वितरित किए जाएंगे। यह पहल एनएफएन के फ्लैगशिप 'गिफ्ट मिल्क प्रोग्राम' का हिस्सा है। वर्ष 2015 में स्थापित एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रिशन का लक्ष्य बच्चों और जरूरतमंद व्यक्तियों को दूध और अन्य पौष्टिक उत्पादों के माध्यम से पोषण सहायता प्रदान करना है। बोकारो स्टील प्लांट और एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रिशन के बीच हुए इस समझौते के तहत 200 एमएल फ्लेवर्ड दूध, जो विटामिन अ और ऊ से भरपूर होगा, छह डीएवी-इस्पात विद्यालयों, बोकारो महिला समिति द्वारा संचालित दो स्कूलों और 13 सरकारी स्कूलों में वितरित किये जायेंगे. दूध वितरण परियोजना के लिए बोकारो जिला प्रशासन के द्वारा सरकारी स्कूलों को चिन्हित किया गया है। इस मौके पर बीएसएल सीएसआर विभाग के महाप्रबंधक (सीएसआर) बिश्वजीत बनर्जी, सहायक महा प्रबंधक ऋचा कुणाल, वरीय प्रबंधक नीरज त्रिपाठी, एनडीडीबी के वरीय प्रबंधक सौरभ कुमार, मेधा डेरी के मनीष कुमार आदि उपस्थित थे। बीएसएल के सीएसआर विभाग के महाप्रबंधक (सीएसआर) विश्वजीत बनर्जी ने इस समझौता ज्ञापन की सराहना करते हुए इस पहल की सफलता के लिए लाभार्थियों की सतत मॉनिटरिंग और संसाधनों के प्रभावी उपयोग पर जोर दिया। कहा कि यह पहल स्कूल जाने वाले बच्चों में कुपोषण से निपटने के लिए एक उपयोगी कदम है।

Govt. of Jharkhand
Department of Mines and Geology
District- Latehar

Notice Inviting E-Auction for Settlement of Sand ghats
(Through E-Procurement mode over https://www.jharkhandtenders.gov.in)

The Jharkhand Sand Mining Rules, 2025 में उल्लेखित प्रावधानों के तहत Category-2 बालूघाट/बालूघाटों के समूह की ई–नीलामी निम्न कार्यक्रमानुसार करायी जाएगी :–

1.ई–नीलामी कार्यक्रम:–

NIT-MINES/LATEHAR/SAND	बालूघाट या बालूघाटों के समूह जिसे एक इकाई बालू घाट मानते हुए नीलामी किया जाना है कि विवरणी।	निविदा दस्तावेज बिक्री शुल्क (5,000/–रू0+ GST in RCM Mode) जमाकर निविदा दस्तावेज डाउनलोड प्रारंभ करने की तिथि	ई–नीलामी से पूर्व प्री– बीड बैठक एवं प्रशिक्षण का समय एवं स्थान	अग्रधन राशि जमा तथा निविदा दस्तावेज अपलोड करने की प्रारम्भिक एवं अंतिम तिथि एवं समय	तकनीकी निविदा की जिला स्तरीय समिति द्वारा जाँच/मूल्यांकन कर सफल निविदादाताओं की सूची सिस्टम में अपलोड करने तथा प्रारम्भिक एवं अंतिम तिथि एवं समय	ई–नीलामी की तिथि एवं समय
1	2	3	4	5	6	7
1/2025	GROUP-A 1. Tubed 2. Durua 3. Bajkum 4. Rajhar 5. Marmar 6. Malhan 7. Latehar 8. Tapakhas	01.09.2025	समाहरणालय सभागार कक्ष, लातेहार तिथि–02.09.2025 समय–03:00 बजे अपराहन्	01.09.2025 3:00 PM एवं 15.09.2025 4:00 PM	16.09.2025 04:00 PM	19.09.2025 को 10:00 बजे पूर्वाहन् से 6:00 बजे अपराहन् तक

2. बालूघाट/बालूघाटों के समूह की विस्तृत विवरणी जिला के वेबसाईट पर उपलब्ध है।
3. बालूघाट/बालूघाटों के समूह की ई–नीलामी प्रक्रिया ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल www.jharkhandtenders.gov.in से करायी जाएगी।
4. ई–नीलामी में भाग लेने वाले व्यक्तियों/कम्पनी/फर्म/HUF को ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल https://www.jharkhandtenders.gov.in पर निबंधन कराना अनिवार्य होगा।
5. एतद् संबंधी समस्त सूचना (यथा– नीलामी कार्यक्रम, सुरक्षित जमा राशि, अग्रधन राशि इत्यादि) विस्तृत रूप से जिला के वेबसाईट एवं ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल पर उपलब्ध है।
6. एतद् संबंधी समस्त सूचना हेतु ई–प्रोक्योरमेंट हेल्पडेस्क एवं जिला खनन कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है।
7. बालूघाट का तात्पर्य है कि The Jharkhand Sand Mining Policy, 2025 के नियम–3 के तहत जिला सर्वेक्षण प्रतिवेदन (बालू) में चिन्हित Category-2 Sand ghat/Sand Bearing Land/River Stream होगा।
9. निविदादाता द्वारा ई–प्रोक्योरमेंट/ई–नीलामी पोर्टल से निविदा दस्तावेज के साथ BoQ Templet (For Intital Price Officer) प्राप्त किया जाएगा। BoQ (.xls) प्रारूप में अपलोड किया जाएगा।
8. एतद संबंधी समस्त सूचना https://www.jharkhandtenders.gov.in एवं जिले के website पर उपलब्ध है।

ह0/– कार्यपालक अभियंता, लघु सिंचाई, लातेहार।
ह0/– जिला कोषागार पदाधिकारी, लातेहार।
ह0/– जिला खनन पदाधिकारी, लातेहार।
ह0/– अपर समाहर्ता, लातेहार।
ह0/– उप निदेशक, खान, पलामू अंचल मेदिनीनगर
ह0/– उपायुक्त, लातेहार।

PR 360771 (Mines and Geology) 25-26 (D)

आजाद सिपाही
रांची, रविवार, 31 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

ऑपरेशन सिंदूर : वायुसेना उप प्रमुख का खुलासा

भारत ने पाकिस्तान पर दागे थे 50 से भी कम मिसाइल

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में मई महीने में चलाये गये ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान की कमर तोड़ दी। वहां और पीओके में रहने वाले एक सौ से ज्यादा आतंकियों को हवाई हमलों में ढेर कर दिया गया। साथ ही, कई एयरबेस भी तबाह किये गये। वायुसेना उप प्रमुख नर्मदेश्वर तिवारी ने ऑपरेशन सिंदूर से जुड़ा नया खुलासा किया है। उन्होंने कहा है कि इस ऑपरेशन के दौरान भरत को 50 से भी कम हथियार दागने पड़े थे। महज इतने हथियारों से ही पाकिस्तान ने घुटने टेक दिये और सीजफायर की गुहार लगाने लगा।

एयर मार्शल नर्मदेश्वर तिवारी ने कहा कि पाकिस्तान को सीजफायर की टेबल तक लाने के लिए भारतीय वायुसेना को 50 से भी कम हथियार दागने पड़े। उन्होंने कहा, प्रस्तुत विकल्पों की सूची में से हमारे पास बड़ी संख्या में निशाने तय थे और इनमें से नौ ठिकानों को निशाना बनाया गया। हमारे लिए मुख्य बात यह थी कि 50 से भी कम हथियारों के साथ सीजफायर हुआ। इसलिए यही वह महत्वपूर्ण बात है, जिसे मैं आपको समझाना चाहता हूं। उन्होंने आगे कहा, किसी भी युद्ध को शुरू करना काफी आसान होता है, लेकिन उसे खत्म करना आसान नहीं होता। यह बात ध्यान में रखने योग्य है, ताकि हमारी सेना सक्रिय रहे, तैनात रहे और वह किसी भी संभावित स्थिति के लिए तैयार रहे।

उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का श्रेय भारत की एकीकृत वायुकमान और नियंत्रण प्रणाली को दिया, जो आक्रामक और रक्षात्मक, दोनों ही अभियानों की रीढ़ रही। इसी प्रणाली ने भारत को कड़ा जवाब देने में सक्षम बनाया और इसके चलते पाकिस्तान ने संघर्षविराम की मांग की।

कोई स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता है : राजनाथ सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को कहा कि रक्षा क्षेत्र में भारत के लिए आत्मनिर्भर होना बेहद आवश्यक है और इसके लिए देश किसी विदेशी आपूर्ति पर निर्भर नहीं रह सकता। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से भारतीय आयात पर लगाये गये 50 प्रतिशत शुल्क का जिक्र करते हुए सिंह ने कहा कि कोई स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं है। उन्होंने कहा, कोई स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता, केवल हित स्थायी होते हैं। वैश्विक स्तर पर अभी व्यापार के लिए युद्ध जैसी स्थिति है। उन्होंने कहा कि विकसित देश तेजी से संरक्षणवादी हो रहे हैं, लेकिन भारत अपने राष्ट्रीय हितों से समझौता नहीं करेगा।

राजनाथ सिंह ने कहा कि सरकार हवाई सुरक्षा प्रणाली सुदर्शन चक्र के तहत अगले 10 वर्षों में देश भर के सभी अहम स्थलों को पूरी तरह हवाई सुरक्षा मुहैया कराने की योजना बना रही है। एक निजी टीवी चैनल के कार्यक्रम में सिंह ने कहा कि एक ऐसी सुरक्षा प्रणाली तैयार की जा रही है, जो दुश्मन के किसी भी हमले से बचाव करने और उसका जवाब देने में सक्षम होगी।

उन्होंने कहा कि जैसा कि हमने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान देखा, आज की लड़ाइयों में हवाई सुरक्षा की अहमियत बहुत बढ़ गयी है। ऐसे में सुदर्शन चक्र मिशन एक बड़ा बदलाव लाने वाला साबित होगा।

हवाई रक्षा परियोजना की घोषणा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के अपने भाषण में इस हवाई रक्षा परियोजना की घोषणा की थी। यह एलान पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर की ओर से भविष्य में दोनों देशों के बीच किसी भी सैन्य टकराव की स्थिति में सीमा पर भारतीय संपत्तियों को निशाना बनाने के संकेतों के कुछ दिन बाद हुई थी। राजनाथ सिंह ने कहा कि बदलते वैश्विक हालात ने यह साफ कर दिया है कि अब रक्षा क्षेत्र में बाहरी देशों पर निर्भर रहना कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा, आज की स्थिति में आत्मनिर्भरता हमारी अर्थव्यवस्था और सुरक्षा दोनों के लिए आवश्यक है।

आर्थिक ढांचे की सुरक्षा पर भी बयान

रक्षा मंत्री ने कहा कि आज रक्षा क्षेत्र केवल राष्ट्रीय सुरक्षा की नींव नहीं है, बल्कि यह हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और उसके भविष्य को सुरक्षित करने का एक प्रमुख आधार भी बन गया है। उन्होंने कहा कि यह केवल लोगों की सुरक्षा, जमीन की हिफाजत या सीमाओं की सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे पूरे आर्थिक ढांचे की सुरक्षा और स्थिरता की जिम्मेदारी भी निभा रहा है। रक्षा मंत्री ने यह स्पष्ट किया कि आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण को संरक्षणवाद के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का संबंध संरक्षणवाद से नहीं है, बल्कि यह हमारी संप्रभुता, राष्ट्रीय स्वायत्तता और आत्मविश्वास का मुद्दा है।

जम्मू में बारिश ने मचायी तबाही

छह हजार घरों में घुसा पानी 150 से अधिक घर क्षतिग्रस्त

आजाद सिपाही संवाददाता

जम्मू। मूसलाधार बारिश से शहर में छह हजार से ज्यादा घरों में जलभराव हुआ। एक हजार के आसपास घरों में मलबा भरा और लगभग 150 घर क्षतिग्रस्त हुए हैं। शहर भर में नुकसान का आकलन कर रही विभिन्न विभागों की टीमों से इस आंकड़े का पता चला है। 26 अगस्त को हुई बारिश से काफी तबाही मची। पानी ओवरफ्लो होने के कारण लोगों के घरों में जा घुसा। इससे घरों में रखा सामान खराब हो गया। जिला प्रशासन की टीमें शहरभर में नुकसान का आकलन कर रही हैं। हर घर में जाकर रिपोर्ट बनायी जा रही है। इन टीमों में तहसीलदार, नायब तहसीलदार स्तर के अधिकारियों की सेवाएं ली जा रही है। आकलन पूरा होने के बाद रिपोर्ट को सौंपी जायेगी और मुआवजा सरकार की ओर से दिया जायेगा। हालात यह हैं कि चौथे दिन भी घरों में मलबा भरा पड़ा है। कई घरों में दरारें आयी हैं, तो कहीं पर दीवारें गिर गयी हैं। इस कारण बारिश से सबसे ज्यादा परेशानी गरीब परिवारों को पेश आयी है। घरों में फ्रिज टीवी, लैपटॉप, बेड, अलमारियां, इंडक्शन सहित अन्य घरेलू सामान खराब हुआ है। शहर के प्रभावित इलाकेमुट्ठी, राजेंद्र नगर, पीरखो, गुज्जर नगर, राजीव नगर, जानीपुर, तालाब तिल्लो, कैलाश नगर, जीवन नगर, सैनिक कालोनी, गंग्याल, अपना बिहार, संजय नगर, कुंजवानी सहित अन्य इलाकों में सबसे अधिक नुकसान होने की सूचना है।

वित्त मंत्री ने तमिलनाडु के सीएम स्टालिन पर साधा निशाना

मूपनार को पीएम बनने से कुछ ताकतों ने रोका : सीतारमण

आजाद सिपाही संवाददाता

चेन्नई। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु में कुछ ताकतों ने तमिल मनीला कांग्रेस के संस्थापक और दिवंगत नेता जीके मूपनार को देश का प्रधानमंत्री बनने से रोका। मूपनार की 24वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद केंद्रीय वित्त मंत्री ने कहा कि ये ताकतें, जो अक्सर तमिल, तमिल संस्कृति और तमिल भाषा को बढ़ावा देने की बात करती हैं, ये वहीं ताकतें हैं, जिन्होंने अवसर आने पर मूपनार को प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने से रोका। सीतारमण ने कहा कि अपने कॉलेज के दिनों में जब उनकी राजनीति में रुचि उभर रही थी, तब वे मूपनार को तमिलनाडु के एक व्यापक रूप से सम्मानित व्यक्ति के रूप में देखती थीं। मूपनार अपनी सादगी और इमानदारी के लिए जाने जाते हैं और वह एक राष्ट्रवादी नेता थे। वह देशभर में एक सम्मानित नेता थे। उन्हें बिहार ही नहीं, हरियाणा और देश के कोने-कोने में जाना जाता था। सीतारमण ने आरोप लगाया कि मूपनार का कद प्रभावशाली था। उन्हें जानने वाले लोग उनकी बातों का सम्मान करते थे और एकजुट होकर काम करते थे। हालांकि जब उनके प्रधानमंत्री बनने का अवसर आया, तो कुछ ताकतों ने उन्हें रोक दिया। हम सभी जानते हैं कि वे कौन सी ताकतें थीं, जिन्होंने उन्हें प्रधानमंत्री बनने से रोका। सीतारमण ने कहा कि ऐसी घटना को भुलाया नहीं जा सकता। मुझे लगता है कि यह तमिलनाडु के लिए अब तक का सबसे बड़ा विश्वासघात है। उन्होंने कहा कि मेरी टिप्पणी को राजनीतिक नहीं समझा जाना चाहिए, क्योंकि यह कार्यक्रम मूपनार को श्रद्धांजलि देने के लिए आयोजित किया गया था। तमिलनाडु में 2026 में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में केंद्रीय मंत्री ने आगामी चुनावों के दौरान तमिलनाडु की राजनीति में बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लोग सुशासन चाहते हैं। इस गठबंधन को साथ लेकर इसे लागू करना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य में एक परिवार ड्रग्स और शराब बेचकर अपना गुजारा कर रहा है। उन्होंने कहा कि मैं आप सभी से लोगों के कल्याण के लिए अपील करती हूं कि यह गठबंधन एकजुट होकर आगे बढ़े और सुशासन प्रदान करे।

गिरफ्तार टीएमसी विधायक न्यायिक हिरासत में भेजे गये

आजाद सिपाही संवाददाता

कोलकाता। कोलकाता की एक विशेष धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) अदालत ने शनिवार को प्रवर्तन निदेशालय (इडी) द्वारा गिरफ्तार किये गये तृणमूल कांग्रेस विधायक जीवन कृष्ण साहा को 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। साहा को 25 अगस्त को संघीय एजेंसी ने धन शोधन के आरोप में गिरफ्तार किया था। उन्हें छह दिन की इडी रिमांड खत्म होने पर अदालत में पेश किया गया। एजेंसी के वकील भास्कर प्रसाद बनर्जी ने विशेष अदालत के न्यायाधीश के समक्ष साहा की न्यायिक हिरासत की अपील की। विधायक ने अदालत के सामने कोई जमानत की याचिका नहीं लगायी। मुर्शिदाबाद जिले के बुरवान निर्वाचन क्षेत्र के विधायक को संघीय जांच एजेंसी ने उनके आवास पर तलाशी के बाद गिरफ्तार किया था। छापेमारी में उनके सहयोगियों और प्रसन्न कुमार रॉय नामक एक कथित बिचौलिये के परिसरों पर भी छापेमारी की गयी। साहा को इससे पहले अप्रैल, 2023 में कथित स्कूल भर्ती अनियमितताओं के सिलसिले में सीबीआइ ने गिरफ्तार किया था और मई, 2024 में सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें जमानत दे दी थी। इडी ने आरोप लगाया है कि साहा ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर पश्चिम बंगाल में सहायक शिक्षकों के पद पर नौकरी दिलाने के बदले अयोग्य उम्मीदवारों से भारी रकम वसूलने के लिए एक एजेंट के रूप में काम किया।

अवैध नियुक्तियों से जुड़ी है जांच

यह जांच पश्चिम बंगाल सरकार के स्कूलों में सहायक शिक्षकों (कक्षा 9-12) की कथित अवैध नियुक्तियों से जुड़ी है। दावा है कि ऐसा पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) के अधिकारियों के साथ आपराधिक साजिश के तहत किया गया। इस साल अप्रैल में सुप्रीम कोर्ट ने एसएससी की ओर से शिक्षकों और कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किये गये 25 हजार से अधिक उम्मीदवारों की नियुक्तियों को धोखाधड़ी करार देते हुए रद्द कर दिया था। इडी ने एक बयान में आरोप लगाया है कि साहा ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर सहायक शिक्षकों के पद पर नौकरी दिलाने के बदले अयोग्य उम्मीदवारों से भारी रकम वसूलने के लिए एक एजेंट के रूप में काम किया। एजेंसी ने कहा कि विभिन्न उम्मीदवारों ने इडी के समक्ष दर्ज अपने बयानों में नियुक्तियों के बदले साहा को सीधे नकद भुगतान करने की पुष्टि की है।

भागने की कोशिश की थी, मोबाइल फोन नाले में फेंक दिया था : एजेंसी ने यह भी कहा कि तलाशी के दौरान साहा ने परिसर से भागने की कोशिश की और अपने मोबाइल फोन नाले में फेंक कर सबूत नष्ट करने का प्रयास किया, जिन्हें बाद में तलाशी दल ने बरामद कर लिया। 2023 में सीबीआइ की ओर से गिरफ्तार किये जाने पर साहा ने ऐसा ही प्रयास किया था और उन्होंने अपने मोबाइल फोन अपने आवास के पीछे एक तालाब में फेंक दिये थे।

गृह मंत्री के खिलाफ हस्ताक्षर अभियान अनुचित है : रिजिजू

आजाद सिपाही संवाददाता

बेंगलुरु। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने शनिवार को बेंगलुरु में कांग्रेस और विपक्षी दलों पर तीखा हमला बोला। उन्होंने उपराष्ट्रपति चुनाव को लेकर कुछ सेवानिवृत्त हाइकोर्ट जजों द्वारा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ चलाये गये हस्ताक्षर अभियान को असंवैधानिक और अनुचित करार दिया। रिजिजू ने कहा कि यह मामला पूरी तरह राजनीतिक है और रिटायर्ड जजों की भागीदारी से यह संदेश जाता है कि वे अपने कार्यकाल में भी विचारधारात्मक झुकाव रखते थे। रिजिजू ने कहा कि कुछ रिटायर्ड जजों ने गृह मंत्री के खिलाफ पत्र लिखे और अभियान शुरू किया, जो न्यायपालिका की गरिमा के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि उपराष्ट्रपति का चुनाव एक राजनीतिक प्रक्रिया है। रिटायर्ड जजों को इसमें दखल नहीं देना चाहिए। इससे यह संदेश जाता है कि वे अपने कार्यकाल में भी किसी खास विचारधारा से प्रभावित थे। यह ठीक नहीं है कि गृह मंत्री के खिलाफ हस्ताक्षर अभियान चलाया जाये।

कांग्रेस नेताओं की भाषा पर तीखा वार : रिजिजू ने कांग्रेस नेताओं पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके परिवार के खिलाफ अपमानजनक भाषा इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। उन्होंने राहुल गांधी और तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा का नाम लेते हुए कहा कि यह रवैया लोकतंत्र और देश के भविष्य के लिए खतरनाक है। रिजिजू ने कहा, हम लोकतांत्रिक लोग हैं और सम्मानपूर्वक बात करते हैं। लेकिन विपक्ष के नेता प्रधानमंत्री और उनकी दिवंगत मां के खिलाफ अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते हैं, यह उचित नहीं है।

दहेज के लिए बहू को प्रताड़ित करने की आरोपी सास सुप्रीम कोर्ट से बरी

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कथित तौर पर दहेज के लिए बहू के साथ क्रूरता करने के 24 साल पुराने केस में ट्रायल कोर्ट और हाइकोर्ट द्वारा दोषी करार दी गयी एक सास को बरी कर दिया। इस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ससुराल वालों द्वारा बहू को दहेज के लिए प्रताड़ित की बातें हवा से भी अधिक तेज फैलती हैं। जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने उत्तराखंड हाइकोर्ट के उस फैसले के खिलाफ एक याचिका पर यह फैसला सुनाया, जिसमें महिला की दोषसिद्धि और तीन साल की सजा बरकरार रखी गयी थी। आरोपी सास को भादवि की धारा 498-ए के तहत इस आधार पर दोषी ठहराया गया था कि उसकी मृत बहू ने अपने मायके वालों को दहेज उत्पीड़न होने की बातें बतायी थीं। भादवि की धारा 498-ए विवाहित महिला के प्रति उसके पति या उसके ससुरालवालों द्वारा की गयी क्रूरता के अपराध से संबंधित है।

पड़ोसन की गवाही को माना अहम : सुप्रीम कोर्ट ने हालांकि ने इस बात पर गौर किया कि केस में गवाह के तौर पर पेश हुई आरोपी महिला की पड़ोसी ने दावा किया कि बहू से कभी दहेज की मांग नहीं की गयी थी। बेंच ने कहा, सास के साक्ष्य को निचली अदालत और हाइकोर्ट द्वारा इस आधार पर खारिज कर दिया गया कि वह दहेज की मांग के संबंध में कोई तथ्य पेश नहीं कर सकी थी, क्योंकि यह चहारदीवारी के भीतर होता है, जो एक गलत निष्कर्ष है, विशेष रूप से ऐसे मामलों में, जब सास-ससुर द्वारा दहेज के लिए बहू को परेशान किये जाने की बातें हवा से भी तेज फैलती हैं।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची, झारखंड से मुद्रित। **संस्थापक प्रधान संपादक :** स्व. हरिनारायण सिंह, **संपादक :** राकेश सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार, ***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**